जून 2010 ▪ Rs.20/-

चन्दामामा

www.chandamama.com/parle

Colouring Page

अनुक्रम

चन्दामामा सम्पुट-६१ जून २०१० सञ्चिका-६

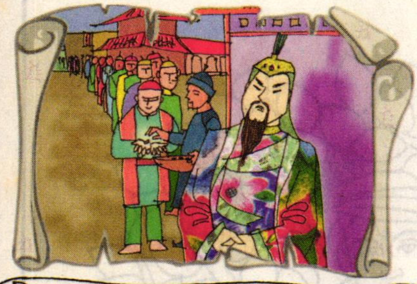

बादशाह की परीक्षा ...१०

बदले की इच्छा ...१३

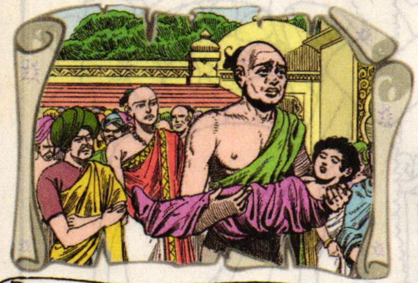

उत्तरकाण्ड - ४ ...२३

पतन ...४८

- ✻ पाठकों का पन्ना ...०६
- ✻ शरीर का मूल्य ...०७
- ✻ ईमानदारी ...०९
- ✻ आर्य ...१९
- ✻ मित्र भेद-७ ...२९
- ✻ आधा मूल्य ...३२
- ✻ सुडोकू पहेली ...३३
- ✻ चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली-१७ ...३४
- ✻ यूरेका ...३५
- ✻ देशद्रोह ...३६
- ✻ पद की कसौटी ...३८
- ✻ हृदय-परिवर्तन ...४४
- ✻ चूँ-चूँ का डिब्बा ...५२
- ✻ भारत दर्शक ...५४
- ✻ सन्धि ...५६
- ✻ शिथिलालय-३ ...६०
- ✻ अनुनिर्वा ...६६
- ✻ हँसते-हँसते हो जा लोट-पोट ...७१
- ✻ अनोखी परीक्षा ...७२

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',
MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

बारिश, स्कूल, नए दोस्त!

दोस्तों, आज हम स्कूल के एक नए वर्ष की दहलीज पर खड़े हैं। इस महीने छुट्टियाँ खत्म हो जाएँगी और हमें चौबीसों घंटे की मस्ती का दामन छोड़ना होगा। लेकिन इसी समय स्कूल के पहले दिन का आनन्द भी ज़बरदस्त होगा। नई किताबों की खुशबू, यह अन्दाज़े कि हम किसके साथ बैठेंगे, नई क्लास, नए दोस्त और भी बहुत कुछ। निश्चित ही, पहला सप्ताह तो केवल एक-दूसरे को ये बताने में बीत जाएगा कि हमने अपनी छुट्टियाँ कैसे बिताईं!

हमें बताइये कि आपने अपनी छुट्टियों का आनन्द कैसे लिया और वापस सकूल जाना कैसा लग रहा है। मुझे यकीन है आपने अपना समय न केवल खेलने में बल्कि कुछ सकारात्मक करने में भी लगाया होगा।

जून का महीना हमारे लिए बारिश लाता है। पिछले वर्ष की बारिश चरवश्यकता से कुछ कम थी और इसलिए देश के अधिकांश भाग में सूखे जैसे हालात रहे। इससे किसानों और बाकी सबको परेशानी हुई क्योंकि अनाज के भाव बढ़ गए। आइये हम प्रार्थना करें कि इस वर्ष हमारे तालाबों को भरने, हमें पीने का पर्याप्त पानी देने और हमारे खेतों में सिंचाई के लिए आवश्यकतानुसार पानी बरसे। पानी एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जिसकी हमने कद्र नहीं की। हम इसका दुरुपयोग करने के इतने आदी हैं कि हमें अपने बिना विचारे किए हुए कामों के भयावह परिणाम दिखाई नहीं दे रहे। पानी का संरक्षण न करने से पीने के पानी का संकट, बिजली में कटौती, फ़सलों में नुकसान और कई अन्य समस्याएँ पैदा होती हैं। हमें न केवल पानी के संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए बल्कि बारिश के पानी की हार्वेस्टिंग का भी इन्तज़ाम करना चाहिए। इससे हमें मौसम के मिजाज़ पर अपनी निर्भरता को कम करने में मदद मिलेगी।

क्या आप हमें पानी कैसे बचाया जा सकता है इस बारे में अपने विचार भेज सकते हैं?

- सम्पादक

जून २०१० Rs. 20/-
Founded by **B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher :
Prashant Mulekar
Associate Editors :
Sowmya Rajendran, R. Vaasugi
Content Head - Online :
Sowmya Bharadwaj
Senior Artists:
K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist :
Venki
Creative Designer :
Meghana Vaidyanathan
Creative Writers :
S. Niveditha, R. Rama
Layout Designers :
B. Thirumal, K. Narendra
Production In-charge :
Prashant Pawar
Circulation:
e-mail: circulation@chandamama.com
Head - Sales and Circulation:
Sanjay B Thorat
Manager - Sales & Circulation:
AB Sairam
Manager - Sales & Circulation (West & North):
Vinay K Brid
Assistant Manager - Circulation:
Rajendra K Jadhav
Asst. Manager - Sales & Circulation (East):
Subhankar Rej
Sales Officer - Circulation:
K. Ravishankar
Advertisement :
e-mail : sales@chandamama.com
Subscription:
e-mail: Subscription@chandamama.com
Ramya K (Chennai)
Ph: +91 44 4399 2829
Jalpa Doshi (Mumbai)
Ph: +91 22 2831 2872/2831 1849
Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093. Editor : Prashant Mulekar

पाठकों का पन्ना

कृपया और चुटकुले दें। मेरी इच्छा तो यह है कि आप एसएमएस जोक्स के लिए एक विशिष्ट भाग शामिल करें। ऐसा करना वाकई बहुत अच्छा होगा।

- स्मृति, विज़ाग

हेलो,

मुझे यह देखकर दुःख हो रहा है कि आपकी पत्रिका में कोई परीकथाएँ नहीं हैं। मुझे परियों की कहानियाँ पढ़ने का बहुत शौक है, अतः कृपया अगले अंक में कुछ परीकथाएँ शामिल करें।

धन्यवाद,

- अनीता, पुणे

प्रिय चन्दामामा,

मेरे माता-पिता ने चन्दामामा से मेरा परिचय करवाया था। पहले-पहल मैंने सोचा कि ये कोई बोरिंग पत्रिका होगी, क्योंकि मेरे माता-पिता इसे तब से पढ़ रहे थे जब वे बच्चे थे, लेकिन मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि आज भी बच्चे इसका आनन्द ले सकते हैं। अगले अंक की प्रतीक्षा करना बहुत मुश्किल होता है।

- चिन्मय, पुरुलिया

प्रिय संपादक,

हमें इतनी बढ़िया पत्रिका देने के लिए शुक्रिया। मेरे परिवार में हम सभी अगले अंकों की प्रतीक्षा करते हैं। बहुत अच्छा होगा यदि हमें पत्रिका माह की पहली तारीख़ को मिल सके।

- रिज़वान, कोचीन

आप अपना विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं।

Visit us at : http://hindi.chandamama.com

शरीर का मूल्य

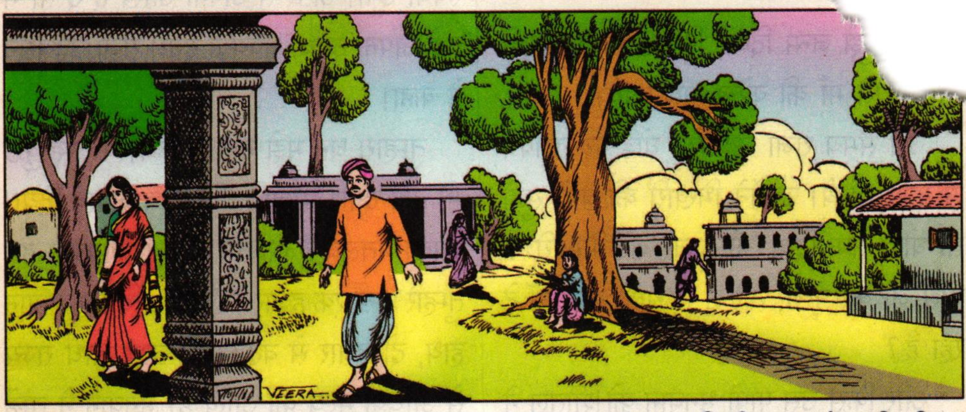

उदयगिरि के राजा उदयसेन बडे धर्मात्मा पुरुष थे। उन्होंने अपने राज्य में किसी भी व्यवसाय या धंधे में लगे हुए लोगों के सुख एवं आराम के लिये समुचित व्यवस्था की थी। जिनके पास कोई काम नहीं था , उनके लिये उन्होंने काम का प्रबन्ध किया, ताकि कोई दारिद्र्य का शिकार न हो। आत्मनिर्भरता का भाव विकसित होने के कारण सारे देश में याचक वृत्ति का अभाव हो गया। केवल वे ही लोग भीख माँग कर गुजारा करते थे, जो काम करने की स्थिति में न थे या बूढ़े और विकलांग थे।

उदयगिरि के भिखारियों एक शीतल नाम का युवक भी था। जब से उसने होश संभाला, भीख को ही अपना धंधा समझा। क्योंकि उदयगिरि में भिखारियों को अधिक प्रोत्साहन नहीं दिया जाता था, इसलिये इस पेशे की स्थिति बदतर होती जा रही थी। शीतल को विशेष रूप से यह स्थिति अखरने लगी थी।

एक दिन ऐसा आया कि शीतल को दोपहर तक एक अन्न का दाना नहीं मिला। जब भूख बहुत अधिक सताने लगी तो वह एक पेड की छाया में बैठ कर रास्ता चलने वालों से भीख माँगने लगा। पर किसी ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। उसने सोचा कि शायद भगवान का ध्यान करने से उस पर किसी को दया आजाये। इसलिये वह जोर जोर से चिल्लाने लगा, हे परमात्मा, इस गरीब को थोड़ी भीख दे! हे दीनदयाल, भूख से पीड़ित व्यक्ति को रोटी का एक टुकड़ा दे! हे दयामय, इस दीन को थोडा दान दे।

पर किसी ने भी उसकी पुकार नहीं सुनी। भूखा तो वह पहले ही था, चीखने चिल्लाने से उसका होश जाता रहा। वह भगवान पर क्रुद्ध हो कर गालियाँ देने लगा, अरे भगवान, तू कहाँ

हैं जो जन्म देता है वह भोजन

...झे जन्म दिया, फिर खाना क्यों नहीं ... तेरी माँ की कोख जल जाये।

उस समय राजा उदयसेन घोड़े पर राजपथ से गुजर रहे थे। उन्होंने भिखारी की बातें सुनी तो घोड़ा रोक दिया और उतर कर भिखारी के पास जा कर पूछा, अरे तू किसको गालियाँ दे रहा है?

और किसे उस पापी भगवान को!शीतल ने जवाब दिया।

भगवान की पूजा की जाती है, निन्दा नहीं। बता, भगवान ने तेरे साथ क्या अन्याय किया है? राजा उदयसेन ने पूछा।

और करने को क्या रह गया है? सुबह से भूखा हूँ। कोई भीख तक नहीं देता। भिखारी शीतल ने जवाब दिया।

अगर तू खाना चाहता है तो मैं दे दूँगा। मैं इस देश का राजा हूँ। पर अगर तू मुझे अपना एक हाथ काट कर दे दे तो मैं तुझे एक हजार रुपया दूँगा। अगर एक पैर दे दे तो दो हजार रुपया दूँगा। अगर तू अपनी आँखें दे दे तो मैं तुझे अपना आधा राज्य दे दूँगा। राजा उदयसेन ने कहा।

तुम्हारा धन मुझे नहीं चाहिये। मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दूँगा। भिखारी शीतल ने जवाब दिया।

इसका मतलब है कि तुम बड़े ही भाग्यवान हो। तुम्हारे पास एक हजार रुपये से अधिक मूल्यवान हाथ, दो हजार से बढकर पैर तथा आधे राज्य से अधिक मूल्य की आँखें हैं। भगवान ने तुम्हें इतनी कीमती चीजें दीं और तुम उनकी पूजा तो क्या उलटे निन्दा करते हो? मूर्ख, जा, भगवान से प्राप्त मूल्यवान हाथ पैरों का उपयोग करके अपना पेट भर! आगे कभी भीख मत माँगना। इस प्रकार राजा उदयसेन ने शीतल को उसके कर्तव्य के प्रति सचेत किया और वहाँ से चले गये।

उसी क्षण से शीतल ने भीख माँगना छोड़ दिया और शारीरिक श्रम करके अपनी आजीविका कमाने लगा।

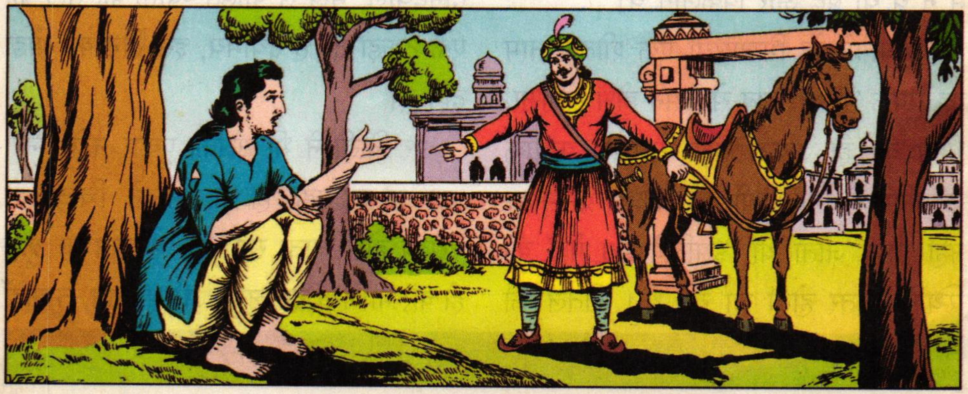

ईमानदारी

पुष्पपुर के जमींदार अशोकसिंह अपने सेवकों की नियुक्ति करने में बड़े कुशल माने जाते थे। एक बार उन्होंने अपनी कचहरी के पहरे पर एक संतरी की नियुक्ति करनी चाही। इस पद के लिये आनन्द और सुदास नाम के दो नौजवान उनके पास आये। जमींदार अशोकसिंह ने पहली रात पहरे पर आनन्द को नियुक्त किया।

दूसरे दिन उन्होंने आनन्द को बागवानी का काम करने के लिये कहा। आनन्द ने बड़ी तत्परता से पौधों को पानी लगाया और निराई आदि का कार्य किया। जमींदार अशोकसिंह ने उसे सूचित किया कि संतरी की नौकरी पर उसकी नियुक्ति के बारे में उसे तीन-चार दिन बाद सूचित किया जायेगा।

अगले दिन ज़मींदार ने सुदास को पहरे पर नियुक्त किया और आनन्द की तरह ही उससे भी बागवानी के काम के लिये कहा। ज़मींदार ने देखा कि बागवानी का काम करते हुए सुदास बार-बार ऊँघने लगता है।

इसके बाद ज़मींदार अशोकसिंह ने सुदास से कहा, ''तुम्हें मैनें कचहरी के संतरी के पद पर नियुक्त कर दिया है।'' आनन्द ने ऊँघे बिना अगले दिन बड़ी आसानी से बागवांनी का काम किया था। इसका मतलब है कि रात के समय उसने ठीक से पहरा न दे कर अपनी नींद पूरी कर ली थी।

ज़मींदार ने उसे यह कहते हुए तुरन्त नौकरी से निकाल दिया कि, ''मैं संतरी के पद पर संतरी के योग्य आदमी ही चाहता हूँ माली नहीं।''

बादशाह की परीक्षा

एक दिन चीन के बादशाह अपने निजी कक्ष में गहरे सोच में डूबे बैठे थे। उनकी चिन्ता का कारण यह था कि वे अब बूढ़े हो चले थे और राज्य के काम को पहले जितनी आसानी से नहीं कर पाते थे। वे चाहते थे कि उनका काम अब कोई नया राजा सम्भाल ले। लेकिन उनके कोई बच्चे नहीं थे, और इसलिए उन्हें अपना उत्तराधिकारी राजपरिवार से बाहर से चुनना था।

उन्होंने सोचा कि उत्तराधिकारी चुनने का सबसे अच्छा तरीका यह था कि प्रजा के लोगों को कोई चुनौती दी जाए। बादशाह पेड़-पौधों के बहुत शौकीन थे और उन्होंने सोच लिया कि उन्हें क्या करना है।

उन्होंने एक घोषणा करने का निर्णय किया।

जो भी राजा बनने के इच्छुक थे, उन्हें एक ख़ास दिन राजमहल के दरवाज़े पर इकट्ठा होना था। फिर बादशाह उन्हें बताने वाले थे कि उन्हें क्या करना है। इससे काफ़ी उत्तेजना का माहौल बन गया।

हर कोई मन में सोचता था कि वही देश पर शासन करने के लिए सबसे उचित व्यक्ति था। निश्चित दिन पर हज़ारों लोग राजमहल के दरवाज़े पर इकट्ठे हुए।

धीरे-धीरे दरवाज़ा खुला और बादशाह दिखाई दिए।

''इस बूढ़े के लिए इससे अधिक और कोई प्रसन्नता की बात नहीं कि मेरी प्रजा के इतने सारे लोग इस परीक्षा के लिए तैयार हैं!'' उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। भीड़ ने हर्षनाद किया। बादशाह ने ख़कारकर गला साफ़ किया।

''अब परीक्षा... मैं चाहता हूँ कि आप सभी लोग आकर एक-एक बीज ले लें।''

सैनिकों ने लोगों को बीज बाँट दिए। लोग अगले आदेश की प्रतीक्षा करने लगे।

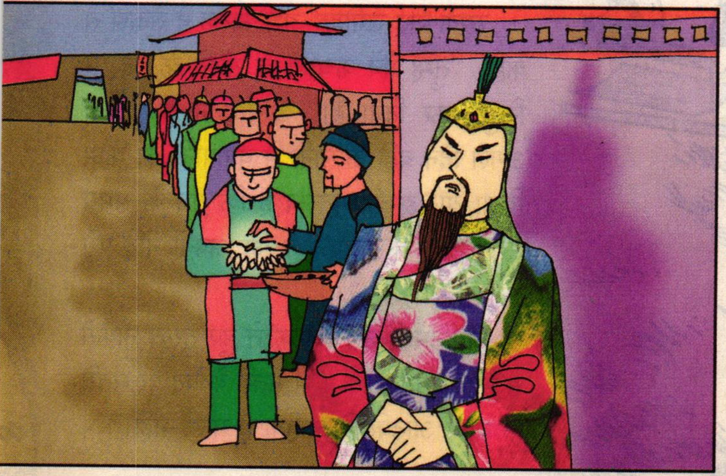

''सभी अपना-अपना बीज घर ले जाओ और एक गमले में बो दो। अपने बच्चे की ही तरह इसकी देखभाल करो। मैं चाहता हूँ तुम सब छः महीने बाद वापस आओ। मैं उसे चुनूँगा जिसका पौधा सर्वश्रेष्ठ होगा! अब जाओ!'' वे बोले।

लोग उन छोटे-छोटे बीजों को सावधानी से लेकर चले गए। हर

घर के बगीचे में उस बीज को अत्यधिक तवज्जो दी गई। आखिर वह शाही बीज उन्हें राजगद्दी तक ले जाने की चाबी था!

कुछ समय तक कुछ नहीं हुआ। फिर एक दिन, चेउन खुशी से दौड़ता हुआ सड़क पर आया। उसकी बात सुनकर लोगों को बहुत जलन हुई।

"मेरा बीज उग आया है। मैंने अभी सुबह ही देखा!" वह चिल्लाया।

कुछ लोगों ने उसे बधाई दी, तो कुछ गुस्से में मुँह फेरकर चले गए। किन्तु इससे चेउन को कोई फर्क नहीं पड़ा। वह महल में रहने के सपने देखने लगा। यहाँ तक कि कभी-कभी वह छोटे बच्चों पर हुक्म भी चलाने लगा, जो उसे विस्मय से देखते थे। चेउन पौधे में सावधानी से पानी देता था और यह ध्यान रखता था कि कोई इल्ली पौधे के एक मील के दायरे में भी न आ सके!

लोग अपने बीजों पर अतिरिक्त ध्यान देने लगे। और हर गमले में छोटे-छोटे पौधे उगने लगे। किसका पौधा सबसे अच्छा दिखता है इसे लेकर बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा थी। गमलों के आस-पास तारों की बाड़ लगाई गई और रातों में उनकी रखवाली के लिए रक्षक नियुक्त किए गए।

सभी जगह बहुत उत्तेजना का माहौल था क्योंकि लगभग सारे बीज सुन्दर पौधों के रूप में उग आए थे, केवल जुन के बीज को छोड़कर।

जुन एक कम उम्र का युवक था जो केवल अपनी माँ के साथ रहता था। वह हर दिन उम्मीद भरी निगाह से अपने गमले को देखता, लेकिन उसका बीज था कि उगने का नाम ही नहीं ले रहा था।

जुन बहुत दु:खी था। उसने बहुत सोचा किन्तु इस बात का अन्दाज़ा नहीं लगा पाया कि उगने के लिए अच्छी स्थितियाँ देने के बावजूद उसका बीज क्यों नहीं पनप सका?

उसने गमले को नमीदार मिट्टी से भरा था और बीज को एक इंच गहरे गड्ढे में डालकर उसपर और मिट्टी इस प्रकार डाली थी कि बीज को पनपने की जगह मिले। फिर उसने अपने बीज को निकालकर अच्छी लोम मिट्टी में बोया, कि शायद इससे उसकी किस्मत चमक जाए। सब कुछ कर लेने के बाद, अन्तिम उपाय के रुप में जुन ने एक माली के जाकर उससे उपाय पूछकर प्रयास कर लिए।

"नन्हें बीज, कृपया उग जाओ ना!" जुन विनती करता। लेकिन शायद नन्हें बीज को उसकी बात सुनाई नहीं दी क्योंकि एक भी पत्ता नहीं उगा! दूसरे लड़कों के मज़ाक बनाने पर जुन जैसे-तैसे अपने आँसू रोकता।

छ: महीने जल्द ही निकल गए। सम्राट, के पौधों का निरीक्षण करने का दिन आ गया। बादशशाह की ओर से नगर में मुनादी की गई। बादशाह ने

लोगों को अपने गमले लेकर महल पर आने को कहा।

सभी लोगों ने अपने पौधों में पानी डाला और गमलों को तब तक घिसा जब तक वे चमकने नहीं लगे।

जुन अपनी खिड़की में से लोगों को गमले लेकर राजमहल की ओर जाते देख रहा था।

जुन की माँ ने उसे खिड़की के पास खड़े देखा।

''जुन, तुम अपना गमला लेकर क्यों नहीं जा रहे?'' उन्होंने चिन्तातुर होकर पूछा।

''माँ, क्या तुम मेरा मज़ाक उड़ा रही हो? खाली गमला लेकर मैं वहाँ कैसे जा सकता हूँ?'' जुन दुःखी स्वर में चिल्लाया।

''लेकिन जुन तुमने अपना श्रेष्ठ प्रयास किया। है ना? तुम्हें बादशाह को यह बताना चाहिए। चलो, हम दोनों वहाँ चलते हैं,'' माँ बोलीं।

इस तरह, जुन और उसकी माँ एक खाली गमला लेकर राजमहल में गए।

बादशाह के प्रत्येक पौधे को देखने के समय जुन ने सबसे कोने में छुपने का प्रयास किया। अचानक बादशाह की नज़र काँपते हुए जुन और उसके खाली गमले पर पड़ी।

''यहाँ आओ बच्चे!'' बादशाह ने आदेश दिया। जुन डर रहा था लेकिन उसकी माँ ने उसे आगे बढ़ाया।

''हे बादशाह, मैंने अपना पूरा प्रयत्न किया पर बीज से कुछ नहीं उगा।

मुझे पता नहीं क्यों,'' जुन हकलाया।

बादशाह ने अपने हाथ उठाकर सभी लोगों को चुप रहने का इशारा किया।

फिर वे भीड़ से बोले, ''मुझे नहीं पता कि क्या आप सभी को जादू आता है? मुझे आश्चर्य है कि मेरे दिए हुए बीज से पौधे कैसे उगे?''

''आप लोगों को देने से पहले सभी बीज उबाल दिए गए थे! हममें से अधिकांश लोग किसान हैं, और जानते हैं कि उबला बीज उगाने के काम नहीं आता। जिसका सीधा अर्थ यह है कि कुछ गड़बड़ी की गई है।''

लोग शर्म से लाल पड़ गए और उनके सिर झुक गए।

''मुझे जादूगरों को अपने देश की बागडोर नहीं देनी है, मैं इसकी बजाय एक ईमानदार इन्सान पर भरोसा करूँगा।''

बादशाह ने अपनी मूँछ पर ताव दिया और जुन की ओर देखकर मुस्कुराए।

जुन ने अपनी माँ का हाथ कसकर पकड़ लिया और वे दोनों खुशी से गले मिले। दोनों की आँखों में खुशी के आँसू थे।

- रमा रमेश द्वारा पुनर्कथित

वेताल कथा

बदले की इच्छा

बिना थके और हमेशा की तरह दृढ़संकल्प मन में लिए राजा विक्रमादित्य वापस पेड़ की ओर लौटे। उन्होंने पेड़ से लटकते शव को उतारकर कंधे पर डाला और चुपचाप वापस चल पड़े।

शव में छुपे बेताल ने कहा, ''हे महान् राजा! आपका दृढ़संकल्प और अजेय स्वभाव मुझे दो हठी सहेलियों के बीच के विवाद और उसके बाद उपजी कड़वाहट की याद दिलाता है। एक छोटी सी बात थी, जिसने दोनों में एक-दूसरे से बदला लेने की तीव्र इच्छा जगा दी। तुम्हारा बोझ हल्का करने के लिए मैं तुम्हें उनकी कहानी सुनाता हूँ।''

दण्डकारण्य जंगल के दक्षिण के एक कस्बे में मालती और माधवी नामक दो लड़कियाँ रहती थीं। वे दोनों एक ही दिन पैदा हुई थीं और एक-दूसरे के पड़ौस में रहकर बड़ी हुईं। बहुत छोटी उम्र से ही वे अभिन्न सहेलियाँ बन गईं।

समय व्यतीत होता गया और वे बड़ी होती गईं। दोनों ही देखने में बहुत सुन्दर थीं। दोनों की

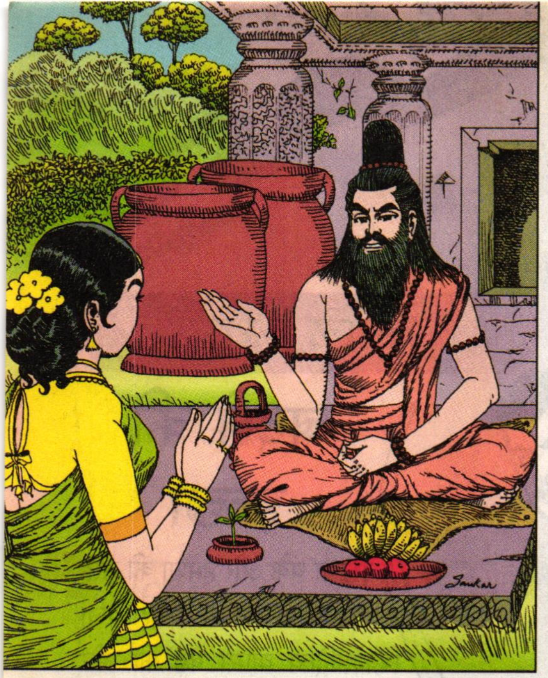

गईं। राज्य की प्रजा समेत सैकड़ों लोगों को भोज दिया गया। प्रजा भी अपने शासकों के विवाह से बहुत प्रसन्न थी।

शादी के बाद, दोनों भाइयों ने पास-पास बने महलों में अपनी पत्नियों के साथ जीवन आरम्भ किया। दोनों अपने राज्य पर शान्तिपूर्वक शासन कर रहे थे। राज्य में शान्ति और सद्भाव था। माधवी और मालती अपने बचपन में किए निश्चय के पूरा होने पर अतिशय प्रसन्न थीं। अब उन्हें पूरा जीवन एक दूसरे के साथ हँसी-खुशी बिताना था।

शादी के कुछ दिन बाद एक शाम मालती अकेली ही दण्डकारण्य में घूमने गई। वहाँ उसने एक पुराना जीर्ण-शीर्ण मन्दिर देखा। मन्दिर के सामने एक साधु समाधि लगाए बैठा था। उसने साधु को प्रणाम किया।

साधु ने अपनी आँखें खोलीं और मालती को आशीर्वाद देकर उसकी कुशल-क्षेम पूछी। मालती ने उसे अपने और अपनी सहेली माधवी के बारे में बताया। एक ही परिवार में शादी करने के निर्णय के बारे में जानकर साधु बहुत प्रसन्न हुआ और उसे आश्वासन दिया कि उनके लिए सब शुभ ही होगा।

फिर साधु ने उसे एक बिरले प्रकार का आम का पौधा और दो चौड़े मुँह वाले मिट्टी के बर्तन दिए। उसने मालती को उन वस्तुओं की अच्छी देखभाल करने को कहा क्योंकि वे वस्तुएँ अपने स्वामी को बहुत लाभ देने वाली थीं। मालती साधु का आशीर्वाद लेकर पौधे के साथ घर लौटी। बर्तनों को महल तक ले जाने के लिए उसने कुछ जंगली लोगों की मदद ली। साधु के आदेशानुसार उसने एक बर्तन माधवी को दे दिया।

इच्छा थी कि वे हमेशा साथ रहें, इसलिए उन्होंने तय किया कि वे समान स्तर के योग्य युवकों से विवाह करेंगी जो जहाँ तक संभव है, एक ही परिवार के हों।

भाग्य की बात, उनकी इच्छा के अनुसार उचित रिश्ते मिल गए। परिणामस्वरूप जय और विजय नामक दो युवकों से उनकी सगाई हो गई। दोनों सम्पन्न युवक थे और पास के राज्य के शासक के उत्तराधिकारी थे।

अपने पिता की मृत्यु के बाद, उन्होंने हाल ही में अपने राज्य के संयुक्त राजाओं के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। दोनों भाई बहुत विनम्र, समझदार और कर्त्तव्यनिष्ठ थे। ऐसे युवकों को पतियों के रुप में पाकर दोनों सहेलियों की खुशी का पारावार न रहा। दोनों जोड़े अपने विवाह की प्रतीक्षा कर रहे थे।

शीघ्र ही सभी परिवारों के बीच तय कार्यक्रम के अनुसार धूमधाम से दोनों शादियाँ सम्पन्न हो

मालती ने आम का पौधा अपनी ससुराल के आँगन में लगाया और उसकी अच्छी देखभाल करने लगी। वह उसमें साधु के दिए बर्तन में भरकर रखा हुआ पानी डालती थी। एक ओर मालती अपने पौधे और बर्तन की बहुत अच्छे से देखभाल कर रही थी, तो दूसरी ओर बदकिस्मती से माधवी का बर्तन टूट गया। उसका केवल ऊपर का आधा भाग ही बचा। मालती को बहुत बुरा लगा और उसने अपनी सहेली से बर्तन का बिना टूटा भाग सँभालकर रखने को कहा।

इस दौरान मालती का पौधा बढ़ने लगा और बकरियाँ और जानवर उसकी ओर आकर्षित होने लगे। पौधे को उनसे बचाने के लिए माधवी ने अपना टूटा बर्तन उसे देकर पौधे को आड़ करने को कहा। मालती ने खुशी से उसकी बात मान ली और पौधे को बचाने के लिए टूटे बर्तन का उपयोग कर लिया।

वह उस बिना पेंदे के बर्तन को पौधे पर रख देती जिससे पौधा चारों ओर से घिर जाता और कोई जानवर उसकी पत्तियों तक नहीं पहुँच पाता था। अच्छी सुरक्षा होने से पौधा जल्दी ही बड़ा होकर फलने-फूलने लगा। शीघ्र ही वह एक विशेष प्रकार के आम देने लगा। उसके फल में कुछ जादुई बात थी और वह अत्यन्त स्वादिष्ट था। मालती और उसके पति ने सबसे पहले आम का स्वाद चखा।

फिर उन्होंने अपने मित्रों और अन्य लोगों को उस पेड़ के आम दिए। उस फल का विशिष्ट स्वाद कई लोगों को आकर्षित करता था। लोगों को यह विश्वास भी हो गया कि पेड़ के फल में औषधीय गुण हैं। एक बार जो वह आम खा लेता, दुबारा उनकी माँग अवश्य करता था।

जैसे-जैसे माँग बढ़ी, लोग पंक्तिबद्ध होकर उन्हें खरीदने लगे। वे दूसरों से पहले आम पाने के

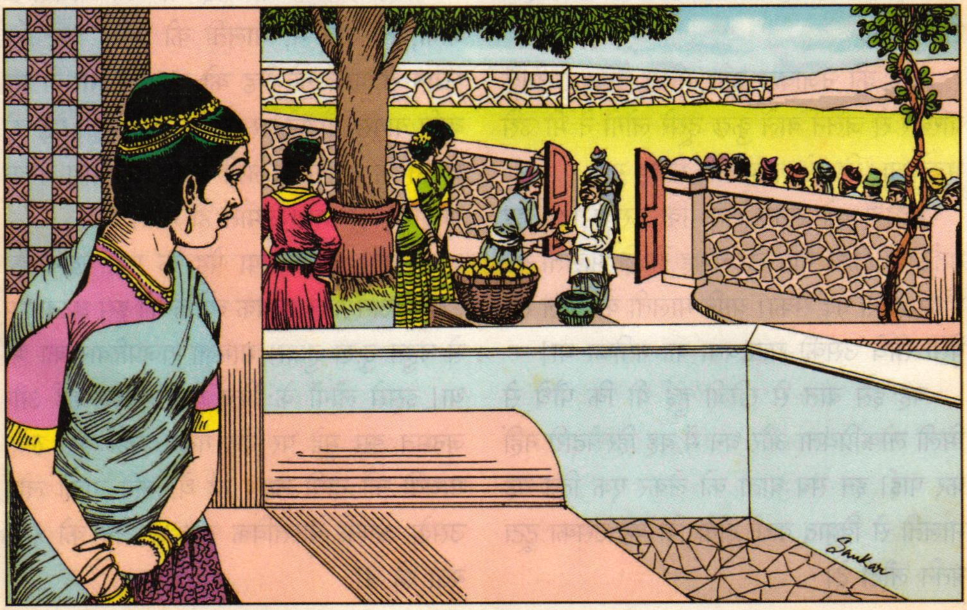

लिए उनके बहुत अधिक दाम देने को तैयार रहते थे। अतः मालती को इससे काफी आय होने लगी।

माधवी पड़ौसी होने के नाते यह देखती रही। उसे मालती को होने वाले लाभ से जलन होने लगी।

वक्त की नज़ाकत और मौका देखकर उनके परिवार से जलने वाले कुछ दूसरे लोगों ने भी उसे भड़काया, जिससे बात और बिगड़ गई।

माधवी को लगने लगा कि उसके दिए हुए बर्तन के आधे भाग की वजह से ही मालती का पौधा इतना बढ़ सका। यानि मालती को मिल रहा पैसा सीधे उसकी सहृदयता का नतीजा था!

वह इस बात से खीजी हुई थी कि पौधे से मिली लोकप्रियता और धन में वह हिस्सेदारी नहीं कर पाई। इन सब बातों को लेकर एक दिन वह मालती से विवाद करने लगी कि वह उसका टूटा बर्तन लौटा दे।

मालती माधवी की बातें सुनकर हैरान रह गई। उसने देखा कि पेड़ बहुत बड़ा हो गया था और टूटा बर्तन पेड़ को या उसकी सारी शाखाओं को काटे बिना नहीं निकाला जा सकता था। दोनों ही तरह से पेड़ पूरा नष्ट हो जाता। मालती इस विचार से बहुत डर गई।

उसने माधवी को अपनी समस्या बताई, "माधवी ज़रा समझने की कोशिश करो। मेरे पेड़ को काटे या जड़ से उखाड़े बिना तुम्हारा बर्तन देना असम्भव है।"

लेकिन माधवी टस से मस नहीं हुई। वह अपना बर्तन बिना टूट-फूट के वापस पाने की ज़िद पर अड़ी रही। यहाँ तक कि विजय भी उसे समझाने में विफल रहा। मालती समय गई कि माधवी इस प्रकार केवल उसके पेड़ को नष्ट करना चाहती है और इसके पीछे उसका उद्देश्य बर्तन वापस पाना नहीं है।

सबके प्रयासों के बाद भी जब माधवी न मानी, तो अंत में, मालती को अपने प्रेम और ध्यान से पाले गए पेड़ को काटकर माधवी का बर्तन वापस लौटाने पर मजबूर होना पडा। पेड़ को बचाने के उसके मालियों के सभी प्रयास बेकार गए। पेड़ पूरी तरह समाप्त हो गया।

मालती के अलावा पेड़ के फल खाने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को इस घटनाक्रम से बहुत दुःख हुआ। मामला राजपरिवार का भी था। इससे लोगों के बीच काफ़ी बहस हुई और जनमत इस मुद्दे पर बँट गया। जहाँ कुछ लोग माधवी को दोषी ठहरा रहे थे, वहीं बाकी लोग उसके अपना वास्तविक हक़ ले लेने को सही बता रहे थे।

अत्यधिक बहस का असर जय और विजय के बीच के सम्बन्ध पर भी पड़ा। फिर भी राजकाज और प्रजा के हित का ध्यान रखते हुए दोनों ने समझदारी से अपने मतभेद को दबाए रखा। फिर भी माधवी ने मालती के प्रति अपना रवैया सामान्य बनाए रखा।

समय बीतता रहा। कुछ समय बाद माधवी ने एक बेटी को जन्म दिया। बालिका बहुत सुन्दर थी और जल्दी ही आस-पड़ौस में सभी जगह लोग उसे बहुत पसन्द करने लगे। बच्ची का नाम मालविका रखा गया। नामकरण के अवसर पर मालती ने उसे एक बहुत सुन्दर सोने का हार भेंट किया।

वह पूरा हार बिना किसी जोड़ का था और उसमें खोलने-बंद करने का कोई उपाय नहीं था। उसे सीधे सिर के ऊपर से पहना और उतारा जाता था। जब मालविका छोटी थी तो ऐसा करना सम्भव था लेकिन उसके बड़ी होने पर साथ-साथ सिर आकार भी बड़ा हो गया और उसमें से हार को निकालना असम्भव हो गया।

कुछ ही समय में उसे निकालने के उपाय करना बंद कर दिया गया और मालविका रात-दिन हार को पहने रहने लगी। वर्ष बीतते गए और मालविका दस वर्ष की कन्या हो गई।

एक दिन अचानक मालती माधवी के पास गई और अपना हार वापस माँगा। माधवी ठगी सी रह गई। उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मालती ऐसी माँग रख सकती है। क्योंकि हार में खोलने की कोई व्यवस्था नहीं थी, अत: उसे कहीं से काटे बिना मालविका की गर्दन से निकालने का कोई तरीका नहीं था। माधवी को हार मालविका

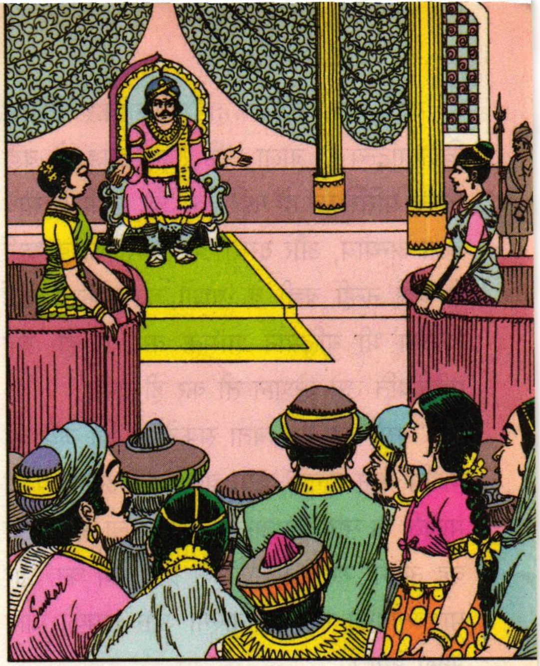

के गले से निकालने की चिन्ता तो पहले भी थी लेकिन उसने ऐसी स्थिति की कल्पना नहीं की थी।

लेकिन मालती को इससे कोई मतलब नहीं था।

माधवी ने कहा कि मालविका का सिर काट देने के अलावा हार को साबुत अवस्था में निकालने का कोई तरीका नहीं है। लेकिन माधवी अपनी बात पर अड़ी रही। माधवी समझ गई कि उसकी सहेली अपने आम के पेड़ का बदला ले रही है।

यह विवाद बहुत सनसनी फैलाने वाला बन गया और जनमत फिर बँट गया। जो लोग पहले मालती के पक्षधर थे, चाहते थे कि माधवी को सज़ा मिलनी चाहिए जबकि दूसरों का कहना था कि मामले को कुछ अधिक ही बढ़ा दिया गया है जिससे एक छोटी बच्ची की जान पर आ बनी है। अन्त में, यह मसला जय के पास पहुँचा, जो दोनों शासकों में बड़ा था।

यहाँ तक की कहानी सुनाकर बेताल विक्रमादित्य से बोला, ''हे राजन्, यह तो बड़ी विकट परिस्थिति हो गई! एक ओर पत्नी के साथ हुआ अन्याय, और दूसरी ओर पत्नी की हठधर्मी से एक नन्हीं बच्ची के प्राणों का संकट। कोई कितना भी बुद्धिमान शासक क्यों न हो, यह परिस्थिति उसे परेशान तो कर ही देगी।''

''क्या तुम मुझे बता सकते हो कि जय का निर्णय क्या होगा? क्या वह पहले अपनी पत्नी मालती के साथ हुए अन्याय का बदला लेगा? या वह अपनी नन्हीं भतीजी के प्रति प्रेम का और मानवतावादी रुख अपनाएगा और उसकी जान बक्श देगा?

ध्यान रखो, यदि तुमने जानते हुए भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया, तो तुम्हारा सिर फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा!''

विक्रमादित्य बोले, ''बेताल, बात तो तुमने सही कही। यह परिस्थिति बड़ी कठिन है। लेकिन शासकों की अपनी और भी कठिनाइयाँ होती हैं। उन्हें वही करना होता है जिससे न्याय हो।''

''इसलिए जय इनमें से कुछ नहीं करेगा। वह अपनी प्रजा का भलाई को सर्वोपरि मानेगा और परिवार के इस विवाद को जल्दी से जल्दी खत्म करके प्रजा का हित करेगा। अन्यथा उसकी प्रजा दोनों राजाओं के पक्ष में आधी-आधी बँट सकती है, जो राज्य के लिए उचित नहीं है।''

''इस परिस्थिति में त्वरित और उचित न्याय करने की आवश्यकता है और इसकी सारी जिम्मेदारी उसके कंधों पर है। सबकुछ उसके न्यायोचित कदम उठाने पर निर्भर है। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो ऐसे बदले की कोई सीमा नहीं रहेगी और इस प्रकार शीघ्र ही राज्य टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।''

''अत: झगड़ा मिटाने के लिए वह मालविका की जान मुश्किल में डालने की जगह उसके हार को तब तक के लिए उसके गले में रहने देगा जब तक उसे निकालने का कोई उपाय न मिल जाए। तब तक इस मामले के हल के लिए वह उसी के समान एक दूसरा हार बनवाकर मालती को द देगा।''

उत्तर देने के लिए विक्रमादित्य के मुँह खोलते ही बेताल शव सहित गायब होकर फिर से पेड़ पर जा लटका।

- कोडवातिगन्ती रोहिणी प्रसाद

17
आर्य
लालमणि की खोज
चित्र गाँधी अय्या
सलग़ाज़ी का प्रसिद्ध पागल सालुंकी स्वर्णद्वीप की लालमणि की खोज में है। बुरी आत्मा ने उसे प्रभात को अपना बेटा बनाने को कहा।
और उसने प्रभात को बेटा कैसे बनाया
उसकी आत्मा के टुकड़े करके
उसने प्रभात को यह समझा दिया कि यदि वह उसकी आत्मा के टुकड़े कर देगा तो उसकी शक्तियाँ अतुलनीय हो जाएँगी।
उसने अपने खून से प्रभात की जुड़वाँ आत्मा बनाई और इस प्रकार थारविक का जन्म हुआ।

फिर क्या हुआ?
सालुंकी ने थारविक के माध्यम से प्रभात को नियंत्रित करना आरम्भ कर दिया...
तुम जीवहत्या क्यों करना चाहते हो?
क्या तुम वह सब भूल गए जो मैंने तुम्हें सिखाया था?
इतना मत डरो पिताजी! वह केवल एक हिरण है!
मैं समझ गया था कि कहीं कुछ गड़बड़ है...
तुम इस जंगल के हिसाब से बहुत बड़े हो गए हो।

इस दौरान जब वह थारविक में बदल रहा था
मुझे सच बताओ। मैं तुम्हारा पिता हूँ!
वह सालुंकी के बारे में बताए इसके लिए उसके पीछे नहीं पड़ना पड़ता था। वह उसपर बहुत गर्व करता था।
तुम मेरे पिता नहीं हो।
उसने मुझे बताया कि वे कैसे मिले थे और सालुंकी कैसे सब कर लेता था
तब मैं समझ गया था कि अब समय आ गया है...

किस बात का समय?
उसका अंत करने का।
मुझे तुम पर नाज़ है, थारविक। तुमने मुझसे अधिक दक्षता हासिल कर ली है।
तो आप मंज़ूरी देते हैं?
हाँ। और मैं तुम्हारी मदद करुँगा।
कैसे?
तुम्हें राजा आर्य के पास जाना चाहिए।
उसका विश्वास जीतो।
क्रमशः

अगले दिन सवेरे लवण, आहार लाने के लिये मधुपुर से बाहर गया। उसी समय शत्रुघ्न, यमुना नदी पार करके, मधुपुर के द्वार पर खड़े हो गए।

दोपहर के बाद, लवण अपने मारे हुए जंतुओं को ढ़ोता हुआ, नगर के द्वार के पास आया। वहाँ शत्रुघ्न को देखकर, वह ज़ोर से हँसा। "अरे मानव! क्या तुम आज मेरे खाने के लिये आये हो? आज मेरी अच्छी दावत होगी।"

शत्रुघ्न ने गुस्से में लाल-पीले होते हुए कहा, "लवण, मैं तुमसे युद्ध करके, तुम्हें मारने आया हूँ। मैं महाराज दशरथ का बेटा और श्री राम का छोटा भाई हूँ। मेरा नाम शत्रुघ्न है। आज तुम मेरे हाथ मरकर रहोगे।"

शत्रुघ्न की बात सुनकर लवण ने उपहास करते हुए कहा, "जब तुम्हारे भाई ने मेरे मामा रावण को मारा था, तब भी मैंने कोई परवाह न की थी। मैंने बड़ों-बड़ों को मारा है। मेरे लिये तुम जैसे योद्धा निरीह तिनके के समान हैं। मुझे कोई नहीं जीत सकता। मुझसे युद्ध करने आये हो न! देखो, मैं तुम्हारी ख़बर लेता हूँ। मुझे जाकर ज़रा शस्त्र ले आने दो।"

"अरे, अब क्या तुम्हें मैं जाने दूँगा? मैं अभी तुम्हें मारे देता हूँ।" शत्रुघ्न बोले और अपना धनुष उठाया।

लवण ने क्रोध में दाँत पीसे। उसने आप-पास देखकर शस्त्र की तरह उपयोग की जा सकने योग्य वस्तु तलाश की। कुछ न मिलने पर वह पेड़ उखाड़ कर शत्रुघ्न पर फेंकने लगा। शत्रुघ्न ने उन पेड़ों को

अपने बाणों से काट दिया। परन्तु फिर भी एक पेड़ शत्रुघ्न के सिर पर लगा और वे मूर्छित हो गए। यह देखकर मूर्ख लवण ने समझा कि वे परमगति को प्राप्त हो गए हैं। यह सोचकर वह अपना त्रिशूल लेने नगर में नहीं गया।

उसने मृत जानवरों को फिर कन्धे पर डाला और मुख्य द्वार की ओर पैर बढ़ाये। इतने में शत्रुघ्न को होश आ गया और वे फिर उसका रास्ता रोक कर खड़े हो गए। तुरन्त ही उन्होंने राम के दिये हुए बाण को धनुष पर लगा कर लवण पर छोड़ा। वह बाण अंगारे उगलता हुआ लवण की छाती पर जा लगा।

लवण मर गया और उसके घर में रखा त्रिशूल भगवान शिव के पास चला गया। इसके बाद शत्रुघ्न ने अपनी सेना को बुलवाया। मधुपुर को अपने अधीन किया और उस पर सुचारु रुप से राज्य करने लगे। राज्य की व्यवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी जिसमें महत्वपूर्ण सुधार करके उन्होंने प्रजा को सुखी किया। यह करते-करते बहुत समय बीत गया।

बारह वर्ष के बाद, लक्ष्मण के मन में राम को देखने की तीव्र इच्छा हुई। वे थोड़ी सेना और कुछ अनुचरों को साथ लेकर, अयोध्या के लिये निकल पड़े। रास्ते में उन्होंने महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में पड़ाव किया।

महर्षि वाल्मीकि ने शत्रुघ्न का उचित स्वागत किया। उनके और उनकी सेना आदि के भोजन का प्रबन्ध करवाया। भोजन के बाद, उन सब ने वाल्मीकि रचित रामायण का सस्वर पाठ सुना। वाल्मीकि का वर्णन इतना सरस और था कि गुज़री हुई कथा आँखों के सामने ही घटित होती हुई सी प्रतीत होने लगी।

वह पूरी रात राम-कथा के सुनने-सुनाने में कट गई। अगले दिन, शत्रुघ्न वाल्मीकि से विदा लेकर अयोध्या पहुँचे। जाने ही वे श्री राम के दर्शन करने उनके महल में गए। भाई से मिलकर उन्होंने कहा, "मैंने आपकी आज्ञानुसार लवण का वध किया और उसके राज्य की व्यवस्था सुधारकर उसपर शासन कर रहा हूँ।"

"परन्तु बारह वर्ष से आपको न देख पाना बहुत कष्टप्रद था। इसीलिये आपके दर्शनों के लिए भागा-भागा आया हूँ।"

राम का हृदय भर आया। उन्होंने शत्रुघ्न का अलिंगन करके कहा, "राजा को राज्य करना ही पड़ता है, चाहे उसके व्यक्तिगत जीवन में परिस्थिति कोई भी हो। तुम अपना राज्य करते रहो। हम तो एक ही परिवार हैं। जब कभी मुझे देखना हो, चले आना।

कुछ दिन अयोध्या में रहकर शत्रुघ्न वापस

अपने राज्य को चले गए। जाते समय सभी भाइयों ने एक-दूसरे का आलिंगन किया। तत्पश्चात् लक्ष्मण और भरत बहुत दूर तक उन्हें छोड़ने गये।

कुछ दिनों बाद, एक ब्राह्मण, अपने पाँच वर्ष के लड़के का शव लेकर राजप्रासाद के द्वार के पास खड़ा होकर रोने लगा। अपने इकलौते लड़के की असमय मृत्यु पर शोक करता हुआ वह अपने बेटे की मृत्यु का दोषी शासक को बता रहा था। वह रोते हुए बोला, ''इक्ष्वाकुओं के समय में राम के शासन में देश की यह हालत हो गई है।''

जब राम को यह बात मालूम हुई, तो वे बहुत दुःखी और चिन्तित हुए। उन्होंने अपने मन्त्रियों और महर्षि वशिष्ठ आदि ब्राह्मणों को बुलाकर ब्राह्मण बालक की असमय मृत्यु के बारे में चर्चा की। वे सब इस सोच ही रहे थे कि बालक की मृत्यु का कारण पता किया जाए इतने में नारद जी वहाँ आए।

सभा का कारण पता लगने पर नारद ने राम से बताया कि उनके राज्य में कोई शूद्र कहीं कड़ी तपस्या कर रहा था। चूंकि यह धर्म के विरुद्ध था, अतः यह बालक की मौत का कारण बना।

राम ने लक्ष्मण से कहा, ''तुम जाकर उस ब्राह्मण को आश्वासन दो। उस लड़के के शव को तेलपात्र में अच्छी तरह रखो।'' और स्वयं राम आयुध लेकर, पुष्पक विमान पर सवार होकर, पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशाएँ छान आये। अन्त में दक्षिण की ओर एक जलाशय के तट पर उन्होंने एक आदमी को सिर के बल तपस्या करते देखा। पुष्पक से उतरकर उस व्यक्ति के पास जाकर कहा, ''मैं महाराज दशरथ का पुत्र राम हूँ। मैं कुतूहलवश पूछ रहा हूँ कि तुम्हारी जाति क्या है और किस

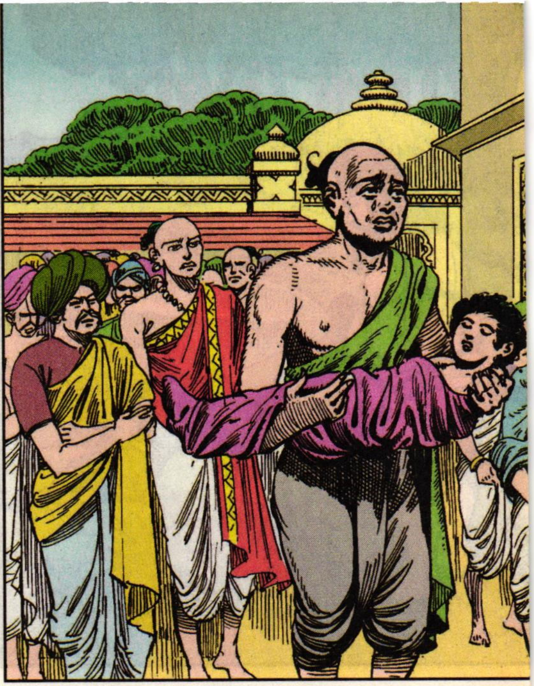

इच्छा से तुम यह कठोर तपस्या कर रहे हो?''

शीर्षासन किये हुए उस तपस्वी ने कहा, ''राजा, मैं शूद्र हूँ। मेरा नाम शम्बूक है। मैं सप्राण स्वर्ग जाने के लिये यह तपस्या कर रहा हूँ।'' वह अभी कह ही रहा था कि राम ने तलवार निकालकर उसका सिर काट दिया।

तुरन्त देवताओं ने राम पर पुष्प वर्षा की और दुन्दुभि बजाई। उन्होंने राम के सामने आकर कहा, ''हमारे लिये यही काफ़ी है कि आपने इस शूद्र को स्वर्ग न आने दिया। इसके बदले आप जो चाहें हम करने को तैयार हैं।''

''उस ब्राह्मण बालक को, जिसकी अकाल मृत्यु हुई है फिर से जिला दो,'' राम बोले।

''शम्बूक का गला कटते ही वह लड़का जी उठा है।'' कहकर देवताओं ने श्रीराम को प्रणाम किया और चले गये।

समीप ही ऋषि अगस्त्य का आश्रम था। राम के मन में मुनि के दर्शन करने की इच्छा जागी। वे

अगस्त्याश्रम की ओर चले गए। वहाँ उन्होंने मुनि के दिये हुए आतिथ्य को स्वीकार किया। अगस्त्य ने राम को एक आभूषण उपहार में दिया। राम ने उसे स्वीकार करके कहा, ''स्वामी, यह तो कोई दिव्य आभूषण मालूम होता है। मेरे मन में इसके बारे में सविस्तार जानने की इच्छा है। इस प्रश्न के उत्तर में अगस्त्य ने राम को श्वेत की कथा सुनाई, जो इस प्रकार थीः

एक हज़ार योजन के क्षेत्रफल वाला एक जंगल था। उसके बीच में, एक योजन क्षेत्रफल वाला एक तालाब था। उस जंगल में न कोई पक्षी था न कोई पशु ही। तालाब के पास एक आश्रम था।

एक दिन अगस्त्य मुनि उस आश्रम में गए। उन्हें वह स्थान अच्छा लगा। एक दिन वहाँ बिता कर प्रातःकाल वे तालाब के पास गए। उसके किनारे पर उन्हें एक हट्टा-कट्टा शव दिखाई दिया। देखकर लगता था कि वह काफ़ी समय से वहाँ था किन्तु शव बिल्कुल न बिगड़ा था। मुनि उसे देख ही रहे थे कि एक विमान वहाँ आकाश से उतरा। वह एक दिव्य विमान था। उसमें एक दिव्य पुरुष था। उसकी कई अप्सरायें सेवा शुश्रूषा कर रही थीं। कुछ वाद्य बजा रही थीं और कुछ नृत्य कर रही थीं।

कुछ देर बाद वह दिव्य पुरुष विमान से उतरा। जलाशय के किनारे पड़े शव को खाकर, तालाब के पानी से मुँह हाथ धोकर, फिर विमान पर सवार होने के लिये गया। अगस्त्य ने उसे रोककर पूछा, ''आप कौन हैं? क्यों इस प्रकार निकृष्ट भोजन कर रहे हैं? इसका क्या कारण है? हीन से हीन लोग भी इस प्रकार का भोजन नहीं करते हैं।

दिव्य पुरुष ने अगस्त्य को अपने पूर्व जन्म की कथा सुनाई। पूर्व में वह विदर्भ के राजा सुदेव का लड़का था। उसका नाम श्वेत था। सुदेव की दो पत्नियाँ थीं और दोनों के दो-दो लड़के थे। उन में से बड़े का नाम श्वेत था। छोटे का नाम सुरथ था।

श्वेत ने अपने पिता के बाद बहुत दिन तक राज्य किया। आखिर वह सुरथ को गद्दी सौंप कर तपस्या करने चला गया। बड़ी तपस्या के बाद वह अपनी देह छोड़ कर ब्रह्मलोक गया। पर उसकी समस्या थी उसकी भूख। ब्रह्मलोक में जाकर भी उसकी भूख न मिटी। यह देख चिंन्तित हो वह ब्रह्मा के पास गया और उनसे पूछा कि उसने कौन सा पाप किया था कि ब्रह्मलोक में भी उसे भूख और प्यास के कारण तंग होना पड़ रहा था।

इस पर ब्रह्मा ने कहा, ''तुम तपस्या में इतने लगे रहे कि तुमने अतिथियों को कभी भोजन न दिया। इसलिये ही तुम्हें भूख और प्यास नहीं छोड़ रहे हैं। तुम इस जंगल में पड़े इस शव को खाकर अपनी भूख मिटाते रहो। कुछ दिन बाद यहाँ मुनि

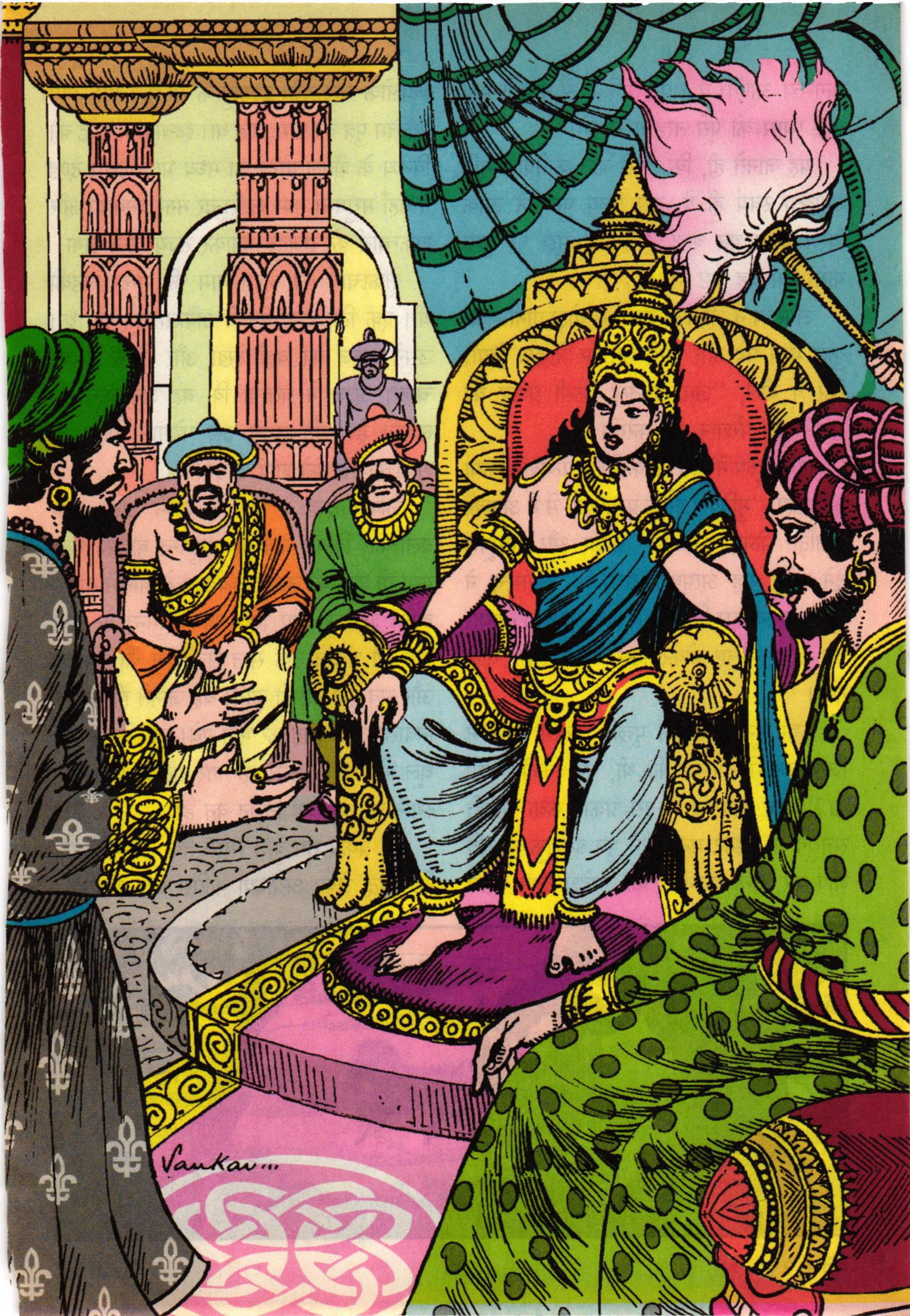

अगस्त्य आएँगे। वे अपनी महिमा से तुम्हारी भूख और प्यास को पूरी तरह मिटा देंगे।''

यह जानते ही, कि उससे बात करनेवाले मुनि अगस्त्य स्वयं ही थे, उस दिव्य पुरुष ने उनके चरण पकड़ कर कहा, ''स्वामी! मुझ पर कृपा करो। मेरा यह कष्ट हरो।''

अगस्त्य ने अपने कमण्डल से थोड़ा पानी लेकर कुछ मन्त्र पढ़े और पानी उस पर छिड़क दिया। फिर वे बोले, ''अब से तुम्हें किसी प्रकार की भूख-प्यास परेशान नहीं करेंगी।

दिव्य पुरुष ने मुनि को कोटिशः धन्यवाद किया और कहा, ''मुनिवर! इसके प्रत्युपकार में मैं आपको प्रतिदिन सोना, धन, वस्त्र, आहार और आभूषण देने वाला यह आभूषण देता हूँ।'' अगस्त्य ने आभूषण स्वीकार किया और शव अदृश्य हो गया। यह देख, सन्तुष्ट होकर दिव्य पुरुष स्वर्ग चला गया।

कथा सुनकर राम ने पूछा, ''स्वामी श्वेत ने जिस वन में तपस्या की थी, वह निर्जीव क्यों था?'' तब अगस्त्य ने इस प्रकार कथा सुनाई। सतयुग में, सम्राट मनु अपने पुत्र इक्ष्वाकु को गद्दी सौंप कर, उन्हें राजनीति का उपदेश देकर, स्वयं ब्रह्मलोक चले गये। इक्ष्वाकु के सौ पुत्र हुए। उनमें अन्तिम पुत्र का नाम दण्ड था। इक्ष्वाकु ने दण्ड को विन्ध्य के शैवल प्रान्त का मध्य भाग दिया। दण्ड ने वहाँ मधुमन्त नाम का सुन्दर नगर बनवाया और शुक्राचार्य को राजगुरु बनाकर राज्य करने लगा।

शुक्राचार्य की अरज नाम की सुन्दर लड़की थी। एक दिन दण्ड वन में अकेला घूम रहा था। उसने अरज को वहाँ देखा और उसने उसको चाहा। अरज ने बताया कि वह शुक्राचार्य की लड़की है। यदि उसने उसे परेशान किया तो शुक्राचार्य उसको शाप दे देंगे।

लेकिन दण्ड ने फिर भी उसने उसके साथ बलात्कार किया। जब वह मधुमन्त वापिस चला गया तो शुक्र को उसके दुर्व्यवहार के बारे में मालूम हुआ। शुक्र ने शाप दिया कि मधुमन्त के चारों ओर सौ योजन तक सात रोज धूल की वर्षा हो और सब कुछ नष्ट हो जाये। यह जानते ही वहाँ के निवासी जगह छोड़ कर भाग गये। शाप के अनुसार धूल की वर्षा हुई और वह नगर नष्ट हो गया। उसी स्थान पर अब यह निर्जन वन है।

इस प्रकार राम कुछ समय तक आश्रम में रहे, फिर विदा लेकर अयोध्या वापिस चले आये।

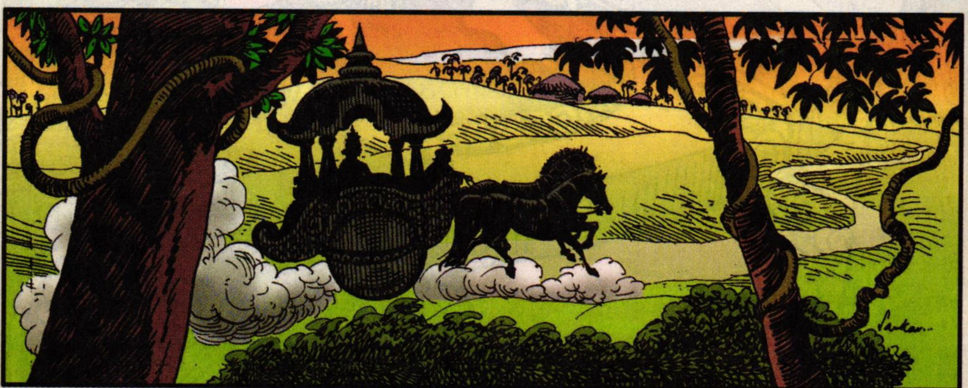

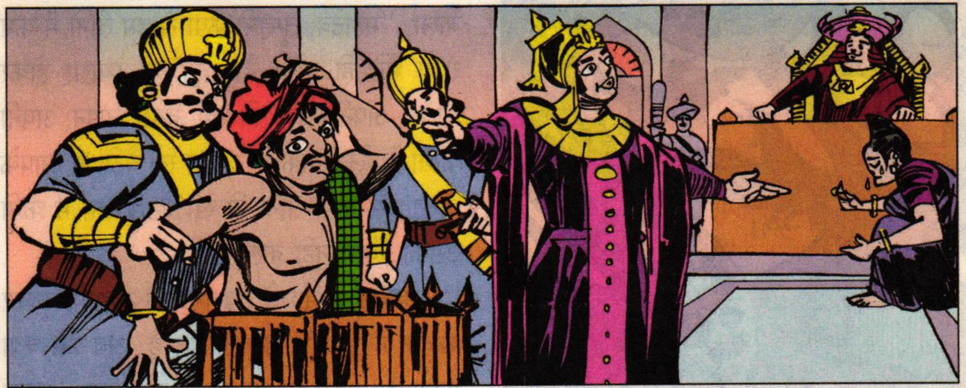

जुलाहे की औरत ने जो तिकड़मबाजी की, उसे देवशर्मा ने अपनी आँखों से देखा और उसने मन में सोचा वाह, औरतें कैसी धूर्त होती हैं! उनकी अक़्लमन्दी के सामने शुक्राचार्य और बृहस्पति किसी काम के नहीं।

इस बीच नाइन कटी हुई नाक को हाथ में लेकर यह सोचते घर पहुँची कि इस कटी हुई नाक का क्या किया जाय और इस घटना को कैसे छिपाया जाय! इतने में सवेरा हो गया। रात भर राजमहल में रहनेवाला उसका पति घर लौट आया और बोला, ''अरी, मेरे उस्तरों की थैली लेती आ, मुझे शहरवालों की हजामत करने जाना है।'' नाइन पहले से ही अक़्लमंद थी, नाक कट जाने की वज़ह से उसकी अक़्ल दुगुनी हो गयी थी, इसलिये उसने एक उस्तरा मात्र निकालकर नाई की ओर फेंक दिया।

नाई को इसलिये गुस्सा आया कि उसने सारी पेटी माँगी तो उसकी औरत ने एक ही उस्तरा दे दिया है, तब गुस्से में आकर नाई ने उस उस्तरे को नाइन की ओर फेंक दिया। तुरन्त नाइन ने हाथ ऊपर उठाकर पुकारना शुरू किया, ''बचाइये, बचाइये, मेरे दुष्ट पति ने मेरी नाक काट दी है।''

यह पुकार सुनकर सिपाही दौड़कर आये, नाई को खूब पीटा और उसे, उसकी पत्नी तथा कटी हुई नाक को ले जाकर न्यायाधिकारी के सामने हाजिर किया, तब बोल, ''इस दुष्ट ने इस नरी रत्न को अकारण तंग किया है। यह तो एक जघन्य अपराध है। इसे जो सज़ा वाज़िब है, सो दे दीजिए।''

न्यायाधिकारी ने नाई से पूछा, ''तुमने यह अपराध क्यों किया है? आखिर तुम्हरी औरत ने कौन-सी गलती की है?''

नाई पहले से ही बेवकूफ था, बात उसकी समझ में न आयी, इसलिए वह चुप रह गया। न्यायाधिकारी ने दण्डविधान की पुस्तकें पलटकर नाई को मौत की सज़ा सुनाई। नाई को बधिक वध्य स्थान पर ले गये। देवशर्मा ने न केवल यह ख़बर सुनी थी बल्कि वध्य स्थान की ओर जानेवाले नाई को भी देखा।

मित्र भेद - ७

वह न्यायाधिकारी के पास दौड़ कर पहुँचाऔर बोला, "महाशय, इस भोले नाई को अकारण आप लोग मारने जा रहे हैं। मैं सच्ची बात बताता हूँ, सुनिये। अनावश्यक बातों में दख़ल देकर सियार, मैं तथा नाइन ने ख़तरे मोल लिये हैं।"

"सो कैसे?" न्यायाधिकारी ने देवशर्मा से पूछा।

देवशर्मा ने न्यायाधिकारी को भेड़ों की कहानी, अपना सोना हड़पनेवाले आषाढ़भूति की कहानी और शराबी जुलाहे की कहानी सविस्तार सुनाई। न्यायाधिकारी ने देवशर्मा की बताई सभी कहानियों को आश्चर्य एवं उत्साह के साथ सुना और तुरन्त नाई को मुक्त कर दिया।

मगर न्ययाधीश ने नाई की पत्नी को मुक्त नहीं किया, उसने नाक खोकर थोड़ी सज़ा पा ली थी, इसलिये उसके कान भी कटवा कर उसकी दुष्टता के लिये पूरी सज़ा दी।

सियार और नाइन ने जो सज़ाएँ पायीं, उन्हें देखने के बाद देवशर्मा को अपने सोना खोने की चिंता जाती रही। वह फिर से अपने मठ को लौट आया, शिवजी के सामने साष्टांग दण्डवत करके बोला, "महादेव, तुम्हारी कृपा से हम तीनो में कम सज़ा मैंने ही पायी है। ख़ून का प्यासा होकर सियार अपनी जान ही खो बैठा। नाइन अपनी करनी के लिये नाक और कान खो बैठी, मैं आपके अनुग्रह से सिर्फ़ सोना ही खो बैठा। अब मैं कभी उसकी चिंता नहीं करूँगा।"

दमनक के मुँह से देवशर्मा की कहानी सुनकर करटक ने पूछा, "अच्छी बात है, अब हमें क्या करना है?" इस पर दमनक ने समझाया, "ग़लत रास्ते पर जानेवाले हमारे राजा को सही रास्ते पर लाना है। हमारे राजा पिंगलक के अब कोई सलाहकार नहीं हैं। केवल घास चरने वाले बैल की दोस्ती और सलाह को मानकर हमारे राजा घास चरने की नीति को अपना रहे हैं। उन्हें इस मार्ग से हटाना है।" "हम जैसे दुर्बल व्यक्तियों के लिये यह कैसे मुमकिन है?" करटक ने पूछा।

"जब शारीरिक बल काम नहीं देता, तब युक्तियाँ काम देती हैं। क्या भयंकर सर्प को मार डालने के लिये कौआ सोने की माला को काम में नहीं लाया?" दमनक ने ज़वाब दिया। "यह क्या कहानी है"? करटक ने पूछा। दमनक ने यों सुनाया:

साँप को मारने वाले कौए की कहानी

एक प्रदेश में एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था। उस पर कौए की एक जोड़ी रहती थी।उन कौओं के बच्चों को एक साँप खाया करता था। बहुत समय से उस पेड़ पर रहने वाले कौओं को इस बात की चिंता सता रही थी कि उनके बच्चे बच नहीं रहे हैं, फिर भी उन्हें उस पेड़ को छोड़ कर जाने की इच्छा नहीं हुई। साँप बराबर पेड़ पर चढ़

आता, पंख न उगे हुए कौए के बच्चों को खा जाता। इसलिए कौए का एक भी बच्चा बचता न था।

आख़िर मादा कौए ने नर कौए के पैरों पर गिर कर बिनती की, ''नाथ, दुष्ट सर्प हमारे बच्चों को खाता जा रहा है, हमारे होने वाले बच्चों की भी यही हालत होगी। इसलिये हम और किसी जगह जा कर दूर पर एक और पेड़ पर अपना निवास बनायेंगे। तुम जानते हो कि अपने बच्चों का प्यार कैसा होता है और उनके मरने पर कैसा दुख होता है। इसलिये हम इस जगह को छोड़ दूसरी जगह चले जायेंगे।''

इस पर नर कौए ने समझाया, ''प्यारी, हम कई सालों से इसी पेड़ के आश्रय में रहते आये हैं। इसलिये इस पेड़ को छोड़ने की मेरी इच्छा नहीं हो रही है। मुट्ठी भर घास और अंजुली भर पानी चाहने वाला हिरण जहाँ भी चाहे जी सकता है; मगर वह सब प्रकार के ख़तरों को सहन कर अपने जन्मस्थान जंगल में ही निवास करता है। हिरण भी जो काम नहीं करता, उसे हम अक्ल रखने वाले कौए क्यों करें? मैं कोई न कोई उपाय करके उस दुष्ट साँप को मार डालूँगा।''

''वह जहरीला सांप है। उसे कैसे मारोगे?'' मादा कौए ने पूछा।

''मैं ख़ुद यह काम न कर सकूँ तो क्या हुआ? धर्मशास्त्र तथा राजनीति के उद्दण्ड पंडित मेरे मित्र हैं। मैं उनसे मंत्रणा करके, उनकी सलाह ले कर शीघ्र ही उस सांप को मार डालूँगा।'' नर कौए ने हिम्मत बंधाई। नर कौआ रोष में आकर उ,ड़ गया,दूसरे पेड़ पर जाकर वहाँ निवास करने वाले अपने परममित्र सियार को बुलाकर अपनी विपदा सुनाई, हे मित्र, हमारे बच्चों को खानेवाले सांप को मारने का कोई बढ़िया उपाय हो तो बताओ।

सियार सोच में डूबा कौए की व्यथा-कथा सुनता रहा। फिर कुछ देर चुप रहकर सियार ने कहा, ''किसी बात की चिन्ता मत करो कौए भाई। मुझे एक अच्छा उपाय सूझा है। उम्मीद है, अब तुम्हारी तक़लीफ़ें दूर हो जायेंगी।''

''बुरे काम करने वाले नदी के कगार पर रहनेवाले पेड़ की तरह अपने आप नष्ट हो जाते हैं। देखो ना, पुराने जमाने का वह बक, जब वह सारी मछलियों को खाकर भी तृप्त न हुआ तो आख़िर एक केकड़े के हाथ मरा।''

नर कौआ इस बात को समझ नहीं पाया।

''यह क्या कथा है सियार भाई? मुझे सुनाओ,'' उसने कहा।

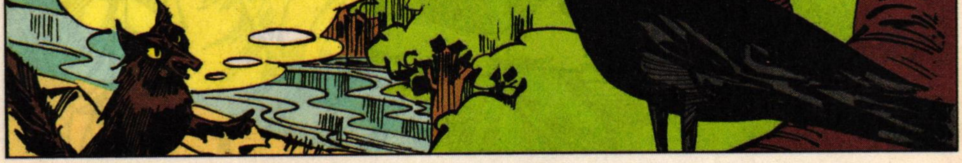

आधा मूल्य

जगमोहन रामपुर गाँव का किसान था। उसके पास काफ़ी ज़मीन तथा फुटकर चीज़ों की एक दुकान थी। पर वह लोभी और कंजूस प्रकृति का था। एक बार फ़सल की कटाई का दिन आने पर जगमोहन अपनी पत्नी निर्मला को दुकान पर बैठाकर स्वयं खेत-खलिहान गया। कटाई हुई। खलिहान में धान का ढेर लग गया। इस समय हर किसान गरीबों को कुछ न कुछ दान देता है।

जगमोहन की कंजूसी का पता होने से कोई भी गरीब उससे दान लेने नहीं आया। आसपास के खलिहानों में गरीबों को दान दे रहे किसान जनमोहन की ओर ताकने लगे। उसका सिर शर्म से झुक गया। उसने सोचा कि उसे भी कुछ न कुछ दान करके यश लूटना चाहिए। जगमोहन ने एक हिस्सा धान में बहुत बड़ा हिस्सा भूसी, जिसे गाँवों में पैया भी कहा जाता है, मिलाकर, बच्चों को बुलाकर दान कर दिया।

कंजूस जगमोहन की दानशीलता को दूर से देख रहे बुज़ुर्ग चमनदास को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने धान लेकर जा रहे बच्चों को बुलाकर उनका धान देखा। उसमें धान कम, पैया अधिक था। चमनदास ने बच्चों को गुपचुप कुछ समझाया और विदा कर दिया।

कुछ समय बाद जगमोहन धान को बोरों में भरवाकर घर पहुँचा। निर्मला ने बड़ी खुशी से उसका स्वागत किया, फिर कोठरी में फैले धान की ओर इशारा करके पति से बोली, ''अजी सुनिये! कुछ बच्चे बाज़ार में यह शोर मचाते हुए जा रहे थे कि किसी धर्मात्मा ने उन्हें धान दान कर दिया है। मैंने उन्हें बुलाया और आधे मूल्य में पूरा धान खरीद लिया।''

उस धान को देखकर जगमोहन का कलेजा काँप उठा। वह पैया मिला धान था। अपनी पत्नी की मूर्खता पर उसने सिर ठोक लिया।

सुडोकू पहेली

नीचे दी गई दो सुडोकू पहेलियाँ हल करें और अपनी प्रविष्टियाँ भेजकर जीतने के अवसर पाएँ। रिक्त स्थानों को १ से ९ तक के अंकों से भरें। प्रत्येक पंक्ति, कॉलम और ३ X ३ के वर्ग में एक अंक अवश्य होना चाहिए। पहेलियों के उत्तर अगस्त'१० के अंक में प्रकाशित किए जाएँगे। सही परिणामों वाली प्रविष्टियों को रु. ५०० का पुरस्कार दिया जाएगा।

पहेली-1

5	6		4	2			8	
	2	1	5			7		6
					6		2	
	1	4	2	7		5		3
		3				8		
6		5	9		3	2	1	
	9		6	1		4	5	
		8		9				
	4				2		3	1

पहेली-2

		3		6		9	4	
	4							
9		2		8				
2					3			
	9				4			
			8				1	3
8	5				1			6
4				7	5			
			9			4		

अपनी प्रविष्टियाँ २५ जून २०१० से पहले इस पते पर भेज दें: **Editor, SUDOKU PUZZLE, CHANDAMAMA INDIA LTD.,** B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093. e-mail your entries to:contests@chandamama.com

अप्रैल १० के तेज़ सूत्र का सही समाधान ये रहा:

क्या आप कार वाली समस्या को हल कर पाए? कृपया ध्यान दीजिए कि इस प्रश्न में आपको निकटतम पूर्णांक बनाने को कहा गया है। निम्न तरीका किलोमीटर को मील में परिवर्तित करने का आसान और तेज़ तरीका है (क्योंकि प्रश्न में तीन मान मील में हैं, इसलिए कि.मी. से मील में परिवर्तित करना इसके विपरीत करने से बेहतर है)।

प्रश्न को सबसे तेज़ी से हल करने का तरीका यह रहा:

चरण१: कि.मी. में दिए गए मानों का ८ से भाग दें।

८०/८ = १०

९६/८ = १२

चरण २: परिणामों को ५ से गुणा करें।

१० X ५ = ५०

१२ X ५ = ६०

अत: ८० कि.मी. = ५० मील और ९६ कि.मी. लगभग ६० मील हुआ।

अ की गति = ५० मील प्रति घंटा

द, जो ६५ मील प्रति घंटे की रफ़्तार से सफ़र कर रहा है, सबसे तेज़ प्रतियोगी है।

क्योंकि अब हमें पता है कि सबसे तेज़ प्रतियोगी द है, अत: अगला चरण है अ और द की गतियों में अन्तर का पता लगाना।

अ और द की गतियों में अन्तर

= ६५ - ५०

= १५ मील प्रति घंटा

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - १७

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by* Infosys *FOUNDATION, Bangalore

सही उत्तर देने वाली प्रविष्टियों में से एक को २५० रुपये का इनाम दिया जाएगा।*

*यदि सही प्रविष्टियों की संख्या एक से अधिक हो तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।

तुम्हें क्या करना है:

१. एक कागज पर उत्तर लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१७ लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर हमें ३० जून तक मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर अगस्त २०१० के अंक में प्रकाशित होंगे।

भगवान विष्णु के बारे में सबकुछ!

१. वेद व्यास से सुनकर महाभारत की कथा लिखी

२. वैकुण्ठ के श्रापित द्वारपाल

३. कौन सा अवतार विष्णु का पहला अवतार था?

४. भगवान राम किस युग में हुए थे?

५. रावण का उड़ने वाला वाहन।

६. भगवान विष्णु का नारी रूप।

७. महाभारत के इस नायक का एक नाम पार्थ भी है। इसका जाना-माना नाम क्या है?

८. भगवान का वास्तुविद् और इंजीनियर कौन है?

बधाइयाँ

केवल आनन्द जोशी
११०/१, मधुबन कॉलोनी
संगरुर

अप्रैल'१० के चित्र प्रतियोगिता विजेता

आओ मिलकर साथ रहें हम।
मिल-बाँटकर पेट भरें हम।।

पिंजरे में पक्षी

आज भी बढ़ई द्वारा उपयोग किए जाने वाले बो-ड्रिल का सिद्धान्त इस शानदार खिलौने में दृष्टि के सातत्य का प्रदर्शन करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

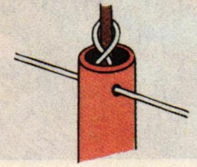
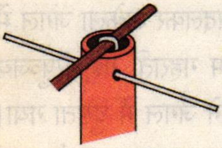
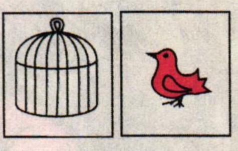

आपको क्या चाहिए:

- पुराने स्केच पेन का खोखा
- नारियल की झाड़ू की ४०-सेमी लम्बी तीली
- ४०-सेमी लम्बा मोटा धागा
- पुरानी रीफ़िल
- कार्ड शीट का एक टुकड़ा

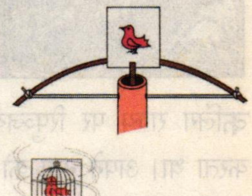
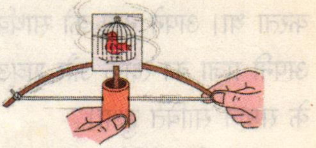

कैसे करें:

- सूखे स्केच-पेन में से ६ सेमी लम्बी खोखली बेलनाकार ट्यूब काटें। एक बड़ी सुई का उपयोग करके पेन में एक ओर एक छेद करें। इस छेद में एक धागा पिरो दें। धागे के दोनों छोरों को कमान की मोड़कर बाँधी गई नारियल की झाड़ू की मजबूत तीली पर बाँधें। बॉल पेन की पुरानी रीफ़िल लेकर उसका एक छोर स्केच-पेन में डालकर धागा निकाल दें।
- रीफ़िल को १८० डिग्री घुमाकर उसे रील के भीतर घुसा दें जिससे धागा एक बार रीफ़िल के आस-पास लिपट जाए। ३ वर्ग सेमी की कार्डशीट के दोनों ओर एक-एक पक्षी और पिंजरा बनाएँ और उसे गोंद से रीफ़िल के ऊपर चिपका दें।
- स्केच-पेन को बाएँ हाथ में पकड़कर कमान को दाएँ हाथ से आगे-पीछे चलाएँ। रीफ़िल गोल-गोल घूमेगी और पक्षी पिंजरे में पकड़ा गया दिखाई देगा।

सिद्धान्त:

हम अपनी आँखों से देखते हैं। लेकिन किसी के वस्तु के सामने से हट जाने के बाद भी हम कुछ देर तक उस वस्तु को देखते रहते हैं। इसे दृष्टि का सतत रहना कहते हैं। यही कार्टून फ़िल्मे बनाने के पीछे का सिद्धान्त भी है। आपकी आँख के परदे पर लगभग २० चित्र प्रति सेकंड आते हैं।

यह पृष्ठ, पूना के इंटर-यूनिवर्सिटी सेन्टर फ़ॉर एस्ट्रॅनॉमी एण्ड एस्ट्रोफ़िज़िक्स में अतिथि वैज्ञानिक, श्री अरविन्द गुप्ता ने लिखा है।

देशद्रोह

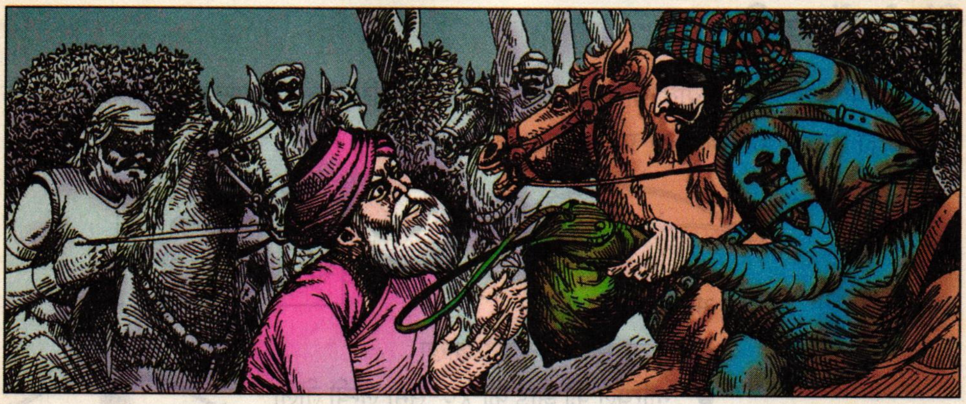

कलिंग राज्य पर रिपुञ्जय नाम का राजा राज करता था। अपने नाम को सार्थक करते हुए, वह अपनी प्रजा का रक्षक और शत्रुओं के लिए काल के समान साबित हुआ।

राज्य की कांचीपेट नामक राजधानी के निकट एक बड़ा जंगल था। जंगल के दूसरी ओर के गाँवों के लोग अकसर व्यापार के सिलसिले में राजधानी तक जंगल से होकर गुज़रते थे।

कीमती सामान और रकम-ज़ेवर ले जा रहे लोगों को अकसर डाकू और रास्ते के लुटेरे अपना निशाना बनाते थे।

पहले तो ऐसे हमले अँधेरी रातों में ही होते थे, लेकिन जल्द ही स्थिति बिगड़ने लगी। अपराधी दिन-दहाड़े हमले करने लगे। सेनापति प्रसेन द्वारा इन अपराधों पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनियाँ दिए जाने के बाद भी इन घटनाओं में कोई अन्तर नहीं आया। राजा रिपुञ्जय की बेचैनी बढ़ने लगी। वह अपराधियों से खुद निपटने को बेताब था।

एक शाम राजा वेश बदलकर अकेला जंगल में घुस गया। जैसे-जैसे शाम गहराती गई, रिपुञ्जय व्यापारी का वेश बनाए घने जंगल में घुसता गया। जैसा कि उसने सोचा था, अचानक उसने स्वयं को लुटेरों से घिरा पाया। लुटेरों की पहचान करने की कोशिश करते-करते रिपुञ्जय ने उन्हें नकली ज़ेवरों से भरा अपना थैला लूट लेने दिया।

उसका सामान लूटने के बाद, लुटेरों का समूह उतनी ही तेज़ी से गायब हो गया जितनी तेज़ी से वो आए थे। पैदल ही जंगल में गया राजा घुड़सवार लुटेरों का पीछा नहीं कर पाया। वह वापस अपनी राजधानी में आ गया।

डाकुओं का खुद ही शिकार बनने वाले राजा ने मन में इस परेशानी को एक ही बार में समाप्त करने का निश्चय किया। अत: उसने इस मसले पर बात करने के लिए अपने सलाहकारों की बैठक बुलाई। बैठक में राज्य के प्रधान-मन्त्री, सेनापति और अन्य सहयोगी शामिल थे। चर्चा शुरू होते ही

माल्लारेड्डी मुरलीमोहन

सभी सदस्यों ने अपनी ओर से सुझाव रखने शुरू किए।

जब प्रसेन अपने सुझाव रख रहा था, तब रिपुञ्जय ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा गया।

''पकड़ लो इस देशद्रोही को,'' राजा ने चिल्लाकर अपने सैनिकों का आदेश दिया।

अचानक हुए इस घटनाक्रम से प्रधान-मन्त्री समेत सभी भौंचक्के रह गए। कुछ क्षण कर्तव्य-विमूढ़ रहने के बाद उसने राजा से सेनापति को बंदी बनाने के बारे में पूछा।

रिपुञ्जय ने कहा, ''इतने दिनों से हम यह पता नहीं लगा पाए कि हमारा अपना सेनापति लुटेरों से मिला हुआ था।''

''जब से लूट की घटनाएँ बढ़ीं, तब से मैं लगातार इस बारे में सेनापति से बात कर रहा था। मुझे कई प्रकार के आश्वासन दिए गए किन्तु लुटेरों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई।''

''क्योंकि उन्हें पकड़ने की सभी कोशिशें नाकाम रही थीं, अत: मैं खुद वेश बदलकर जंगल में गया था। मैं एक व्यापारी के रुप में था जिसके पास मारी मात्रा में स्वर्णाभूषण थे। जैसी कि उम्मीद थी, लुटेरों ने मुझे भी घेरा और मुझसे नकली स्वर्णाभूषण ले लिए, जो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा झटका होगा प्रसेन,'' राजा ने बंदी बने प्रसेन की ओर मुस्कुरा कर देखा।

प्रसेन चुपचाप खड़ा हतप्रभ सा देख रहा था।

''लुटेरों ने मुझसे जो नकली गहने छीने थे, उनमें एक हार भी था जो अभी प्रसेन के गले में पड़ा है। इससे स्पष्ट है कि प्रसेन की डाकुओं से मिलीभगत है। इसको यह पता नहीं था कि जिस व्यापारी को लूटा गया था वह राजा था। इसलिए वह बड़ी शान से वहाँ से रिश्वत में मिला हुआ यह हार पहनकर आ गया।''

''ईश्वर का कोटिशः धन्यवाद कि मुझे उन नकली आभूषणों में से यही हार ध्यान रहा और इसे पकड़ा जा सका। अंततः अब हम लूट की घटनाओं पर काबू पा सकेंगे।''

जैसा राजा ने कहा था ठीक वैसा ही हुआ। प्रसेन के समर्थन के बिना लुटेरों की टोली कमज़ोर पड़ गई। राज्य की सेना उन्हें पकड़ने की क्या योजना बना रही है, इसकी जानकारियाँ लुटेरों को मिलना बंद हो गई। जल्दी ही राजा की सेना ने उन्हें पूरी तरह समाप्त कर दिया।

पद की कसौटी

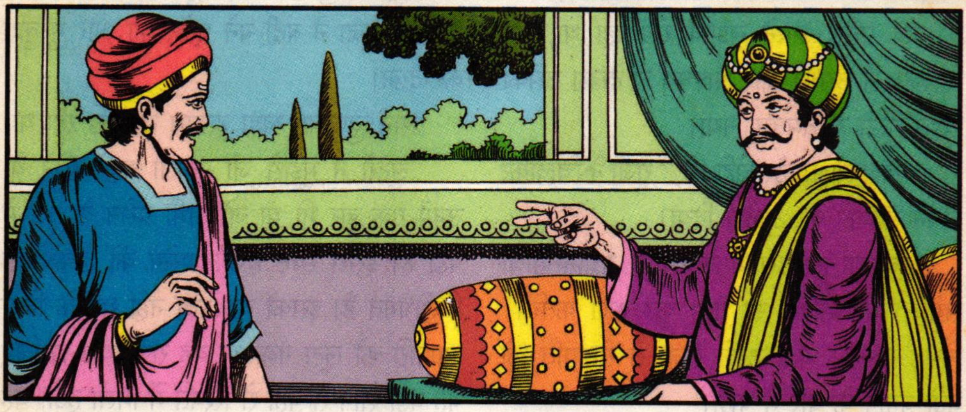

कनक गुप्त महेन्द्रपुरी राज्य के कोषाध्यक्ष थे। जब कोषागार का काम बढ़ गया, तब कनक गुप्त ने मंत्री से अनुमति माँगी कि वे उन्हें दो सहायकों को नियुक्त करने का अधिकार दें। मंत्री ने कनक गुप्त की प्रार्थना मान ली और उन्हें प्रत्येक व्यक्ति को बारह मुद्राएं वेतन देने का आदेश दिया। पर कनक गुप्त ने दो के स्थान पर तीन व्यक्तियों को अपने सहायकों के रूप में नियुक्त कर लिया।

यह समाचार सुन कर मंत्री बहुत नाराज़ हो गए। पर उन्होंने इस सम्बन्ध में कनकगुप्त से कोई कैफ़ियत नहीं माँगी, बल्कि राजा के पास जाकर शिकायत की, ''प्रभु, हमारे कोषाधिपति कनक गुप्त ने कार्य के बढ़ जाने की बात बताकर दो और सहायकों को नियुक्त करने के लिये मेरी अनुमति माँगी, पर उन्होंने तीन व्यक्तियों को अपने सहायक के रूप में नियुक्त किया है।'' राजा ने कहा, ''यह तो हमारे आदेशों का उल्लंघन हुआ। यह तरीक़ा सही नहीं है।'' राजा ने कनकगुप्त को बुलाकर इसकी कैफ़ियत माँगी।

''महाराज, मंत्री महोदय ने मुझे आदेश दिया था कि दो व्यक्तियों को अपने सहायक के रूप में नियुक्त करके प्रत्येक व्यक्ति को बारह मुद्राएँ वेतन दूँ। यह बात सही है, पर मैंने वेतन आठ मुद्राएँ देकर दो व्यक्तियों की जगह तीन व्यक्तियों को नौकरी दे दी है।'' कोषाधिपति कनकगुप्त ने उत्तर दिया।

राजा ने उसकी ओर क्रोधभरी दृष्टि दौड़ाकर कहा, ''तुमने ऐसा क्यों किया? यही बात जानने के लिये मैंने तुमको यहाँ पर बुला भेजा है। तुमने मंत्री के आदेश का उल्लंघन क्यों किया?''

कनकगुप्त ने विनयपूर्वक उत्तर दिया, ''महाराज, मंत्रीजी ने दो व्यक्तियों को मेरे पास

कमलिनि

भेजा। पर उन व्यक्तियों का परिचय पाने के बाद मैंने सोचा कि एक और व्यक्ति सहायक के रूप में हो तो ज़्यादा उचित होगा।''

राजा ने डांटने के स्वर में कहा, ''तुम जो कुछ बताना चाहते, सो साफ़-साफ़ क्यों नहीं बता देते?'' इस पर मंत्री ने दखल देते हुए कहा, ''महाराज, मैंने जिन दो व्यक्तियों को भेजा है, वे अत्यंत ही विश्वास पात्र हैं। साथ ही समर्थ भी हैं। इसीलिये मैंने इन नियुक्तियों में थोड़ी रुचि ली है।''

''मंत्री महोदय, आपने बहुत ही अच्छा किया, क्योंकि यह व्यवहार धन से सम्बन्धित है। कोषागार में काम करने वाले व्यक्तियों के लिये ईमानदारी के साथ सामर्थ्य की भी आवश्यकता होती है।'' यों कह कर राजा ने कनकगुप्त की ओर देखा।

''प्रभु, महामंत्री ने जिन पदों के लिये दो व्यक्तियों को मेरे पास भेजा है, उनमें एक उनके मित्र के पुत्र हैं और दूसरे महारानी के दूर के रिश्तेदार हैं।'' कनकगुप्त ने कहा।

राजा यह उत्तर पाकर मुस्कुरा उठे और पूछा, ''क्या तुम्हारी दृष्टि में ऐसे लोग कोषागार में छोटे पदों के योग्य नहीं होते?''

''प्रभु, यह प्रश्न योग्यता से सम्बन्धित नहीं है। मैंने सोचा कि ऐसे प्रभाव रखनेवाले लोगों से मैं कठोरता से काम नहीं ले सकता। इसलिये मैंने एक साधारण व्यक्ति को भी वह पद दे दिया है।

यह काम मैंने इस विचार से किया है कि ज़रूरत पड़ने पर उन दोनों का काम उस अकेले आदमी से ले सकूँ। फिर भी महामंत्री ने जो वेतन देने की अनुमति दी है इससे ज़्यादा न हो, इस बात का भी मैंने ख्याल रखा है।'' कनकगुप्त ने कैफ़ियत दी।

राजा ने महामंत्री की ओर देखा। इस पर मंत्री ने लज्जित होकर चुपचाप अपना सर झुका लिया।

इसके बाद राजा ने यह आदेश निकाला कि कार्य को दृष्टि में रखकर बिना पक्षपात के योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति की जाए।

अंकुरोद्गम

बाल रिपोर्टर पहल, यूनिसेफ़, भारत के द्वारा देश के १३ राज्यों में लागू की गई है। यह एक अनूठी पहल है, जो समाज के कमज़ोर तबके के बच्चों को उनके समाज के भिन्न सामुदायिक संदर्भों के दस्तावेज़ीकरण और उनके बारे में बताने के लिए शामिल करने का प्रयास है। वर्तमान में, लगभग ७,२८४ बाल रिपोर्टर इस कार्यक्रम से जुड़े हैं। इस माह, हम आपको कोरापुट, उड़ीसा के बाल रिपोर्टर्स से मिलवा रहे हैं। चन्दामामा के आगामी अंकों में आप भारत-भर के बाल रिपोर्टर्स द्वारा की जा रही गतिविधियों का लेखा-जोखा देख पाएँगे!

सम्पादकीय

सभी बड़ों को अभिवादन और दोस्तों को शुभकामनाएँ!

एक-एक कदम चलते हुए हम वर्ष २०१० तक आ गए हैं। बाल रिपोर्टर्स कार्यक्रम २००५ में कोरापुट, उड़ीसा के दशमन्तपुर और पोटांगी विकासखंडों में १० स्कूलों के १०० बच्चों के साथ आरम्भ हुआ था। प्रत्येक बच्चे को इस कार्यक्रम में शामिल करने का हमारा लक्ष्य रंग लाया है और आज इन बाल रिपोर्टर्स की संख्या दो हज़ार से भी अधिक है। हम मदद के लिए यूनिसेफ़, सर्व शिक्षा अभियान और ज़िला प्रशासन के आभारी हैं।

इन वर्षों में, बाल रिपोर्टर कई पहलों और प्रयासों से जुड़े रहे हैं। इस वर्ष हमने दृष्टि बाधित और गूँगे-बहरे बच्चों से संवाद स्थापित किया। इन बच्चों में कई ऐसी प्रतिभाएँ हैं, जो अब तक सामने नहीं लाई जा सकीं। वे कई चीज़ें अनुभव करते हैं। आने वाले दिनों में, हम 'अंकुरोद्गम' में उनके कुछ अनुभव, मनोभाव और इच्छाएँ प्रकाशित करेंगे। इस अंक में, हमने इस दिशा में एक कदम बढ़ाया है। कोरापुट से दो बाल रिपोर्टर दिल्ली आकर बाल भागीदारी पर आयोजित एक वर्कशॉप में शामिल हुए। इस अंक में, आपको उसका भी एक ज़िक्र मिलेगा।

इस उम्मीद के साथ कि यह अंक इस वर्ष और भी बच्चों को प्रेरणा देगा, हम हैं

भवदीय,

◆ **बाल रिपोर्टर्स क्लब, कोरापुट,** *उड़ीसा*

हमारे जीवन के तथ्यः

भोलू

दीदी

गौरी

काँचा

मिली

1

स्कूल में बच्चे लगातार बीमार हो रहे हैं। बच्चों ने इस बारे में *दीदी* से बात की।

गौरीः दीदी, हम इस समस्या से कैसे निपटें?

दीदीः आप सभी को मिलकर एक इलाज सुझाना होगा।

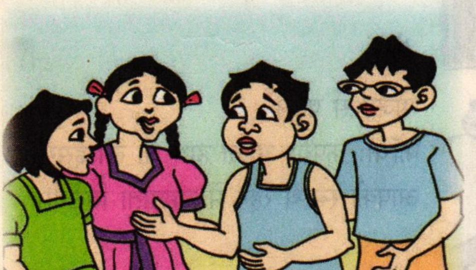

2

बच्चे कुछ चकरा से गए।

काँचाः हम अपनी समस्या खुद कैसे सुधार सकते हैं?

मिलीः चलो, हम समस्या पर विचार करने के लिए स्कूल कैबिनेट की मीटिंग बुलाते हैं।

3

स्कूल कैबिनेट की बैठक बुलाई जाती है।
गौरीः हमारे दोस्तों के बीमार होने में स्वच्छता का ध्यान न रखा जाना प्रमुख कारण है।
स्कूल कैबिनेट, सदस्यों और अन्य विद्यार्थियों के सुझाव लेकर उन्हें लागू करने का निर्णय लेता है।

4

अगली सुबह, प्रार्थना के बाद, स्कूल कैबिनेट ने विद्यार्थियों के हाथों के नाखून देखे।
गौरीः अपने नाखून काटो वरना तुम नाखूनों में मौजूद कीटाणुओं के कारण बीमार पड़ जाओगे।

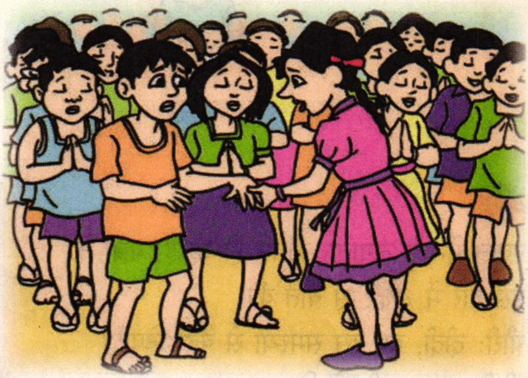

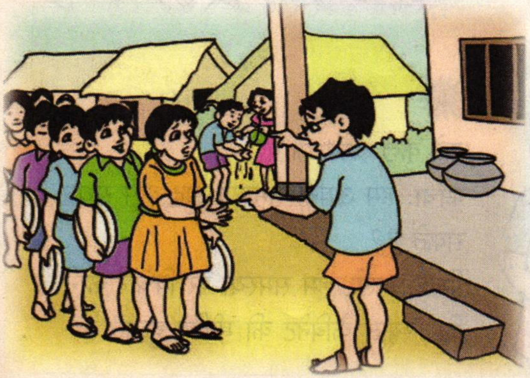

5

भोजन से पहले...
काँचाः कृपया अपना हाथ धो लें। इससे आपको स्वस्थ रहने में सहायता मिलेगी।

6

एक सप्ताह बाद...

अः दीदी , आज सभी बच्चे स्कूल आए हैं।

दीदीः मुझे तुम पर गर्व है कि तुमने इस मुद्दे को खुद सुलझा लिया है। बहुत अच्छे!

बच्चों की भागीदारी होने से एक प्रकार का सकारात्मक परिवर्तन आता है।

प्रश्नोत्तरी

१. बाल भागीदारी से क्या अर्थ है?

अ. खेलकूद के द्वारा चुस्त-दुरुस्त रहना

ब. मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक विकास में सहायक गतिविधियों में भाग लेना।

स. स्कूल में अच्छे से पढ़ना।

२. क्या हर बच्चा गतिविधियों में भाग ले सकता है?

अ. हाँ, यह प्रत्येक बच्चे का मूलभूत अधिकार है।

ब. नहीं, केवल वे बच्चे भाग लेंगे, जो अच्छा पढ़ते हैं।

स. कोई बच्चा तब तक भाग नहीं ले सकता जब तक उसके माता-पिता न चाहें।

३. बाल भागीदारी के क्या लाभ हैं?

अ. इससे हम पढ़ाई में बेहतर बन सकते हैं।

ब. इससे हमारे आस-पास हो रही घटनाओं के बारे में जागरुकता बढ़ती है।

स. इसका अधिक प्रभाव नहीं होता।

४. बाल भागीदारी समाज को कैसे प्रभावित करती है?

अ. वैज्ञानिक अब भी समाज पर बच्चों की भागीदारी के प्रभावों का अध्ययन कर रहे हैं।

ब. इससे हमारे गाँवों और घरों को स्वच्छ रखने में मदद मिलती है।

स. इससे एक स्वस्थ और विकसित समाज का निर्माण होता है जिसमें लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हों।

उत्तर: 1.ब 2.अ 3.ब 4.स

आपने जो पढ़ा वा अच्छा लगा? हमें अपना फ़ीडबैक भेजें!

CHANDAMAMA INDIA LTD.,

B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

Phone : +91 22 28312872 / 28311849

Email : chandamama@chandamama.com

Website : www.chandamama.com

अधिक जानकारी के लिए: childreporter@gmail.com, www.koraputonline.com

हृदय-परिवर्तन

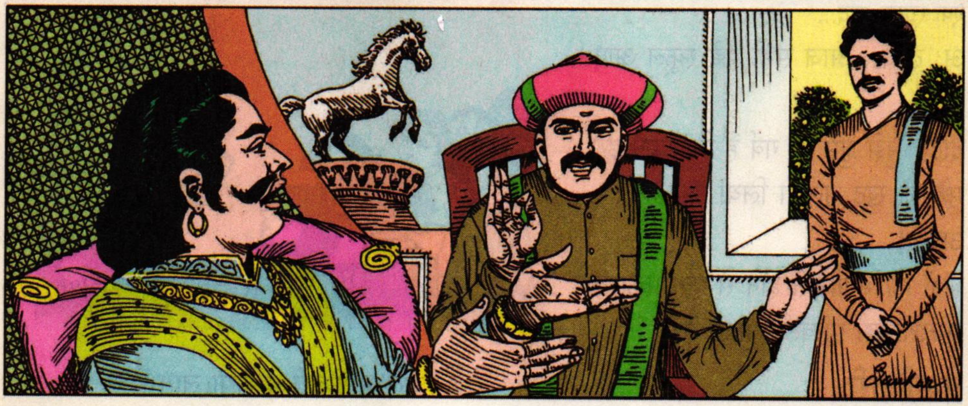

श्रीचक्रपुरम् नामक कस्बे में अवधनी नाम का एक चिकित्सक रहता था। वह गंभीर बीमारियों से ग्रस्त लोगों का इलाज करके उनकी जान बचाता था। उसकी रोग को पकड़ने की क्षमता अद्भुत थी। उसकी दी हुई दवा उसके मरीज़ों को तुरन्त और लम्बे समय तक का आराम देती।

मरीज़ों को ठीक कर देने की उसकी शक्तियाँ बहुत प्रसिद्ध थीं। इस कारण एक चिकित्सक के रूप में लोगों की उसपर अपार श्रद्धा थी। यद्यपि वह स्वयं तंगी में जीता था, फिर भी वह भूखों को बढ़िया भोजन करवाता था। इस उदारता के कारण सभी लोग उसे बहुत पसन्द करते थे।

एक बार, अवधनी पास के नगर में अपने प्रिय मित्र के घर शोक व्यक्त करने गया, जिसकी माँ की मृत्यु हो गई थी। बाद में, उसके मित्र ने अवधनी को बताया कि रत्नाकर नामक स्थानीय ज़मींदार बीमार पड़ा है। उसकी हालत इतनी ख़राब है कि उसकी देखभाल करने वाले चिकित्सकों ने उम्मीद छोड़ दी है। उसका मित्र चाहता था कि अवधनी ज़मींदार को चिकित्सकीय सलाह दे।

अवधनी तुरन्त तैयार हो गया और बोला, मैं उसके पास जाना चाहूँगा। अवधनी अपने मित्र के साथ रत्नाकर से मिलने गया। लक्षणों में बारे में पूछने के बाद अवधनी ने कहा, ''कृपया चिन्ता न करें। इस बीमारी से चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है। मुझे लगता है मैं आपको इससे मुक्त करवा सकूँगा। मैं देखता हूँ कि हम क्या कर सकते हैं।''

पूरी तरह हिम्मत हार चुके ज़मींदार को इन शब्दों से बहुत धैर्य मिला और उसने अवधनी को कोटिश: धन्यवाद किया।

अवधनी ने आस-पास ढूँढा और रत्नाकर के इलाज के लिए आवश्यक जड़ी-बूटियाँ खोज निकालीं। उसने अर्क बनाने के लिए कुछ पत्तियाँ और पेड़ की छाल इकट्ठी की। उसने अपने मित्र के घर जाकर आवश्यक दवा तैयार की और वापस ज़मींदार को दवा देने गया।

अरुपल्ली गोविन्दराजुलु

कुछ ही देर में दवा का असर शुरू हो गया। शीघ्र ही, अवधानी की दवाओं ने काम कर दिखाया और ज़मींदार पूरी तरह ठीक हो गया। एक सप्ताह में उसकी बीमारी पूरी तरह गायब हो गई।

ज़मींदार की अवधनी के प्रति कृतज्ञता का कोई पार न रहा। पारिश्रमिक के तौर पर उसने अपनी ज़मीन के नज़दीक ही अवधनी को २ एकड़ ज़मीन दी।

घर जाकर अवधनी ने अपनी पत्नी को यह ख़बर सुनाई। उसने कहा, हम उस ज़मीन में सब्ज़ियाँ और फूल उगाएँगे और बाज़ार में बेचेंगे। इससे हमारी धन की तंगी दूर हो सकेगी। अवधनी को उसकी सलाह पसन्द आई। वह ज़मीन को जोतने गया।

वहाँ उसने देखा कि ज़मीन के पास ही एक विशाल बरगद का पेड़ था। लेकिन अवधनी को पेड़ के बारे में एक बात पता नहीं थी। पेड़ पर एक भूत रहता था, जो बहुत समय से मानव मांस खाने के मौका तलाश रहा था। लेकिन आसपास कई लोगों के होने वह अपनी इच्छा पूरी करने लायक एकान्त नहीं खोज पा रहा था।

भूत ने अवधनी को देखा तो उसकी बाँछें खिल गईं। उसे लगा आज तो भाग्य मेहरबान है और उसका भोजन आ गया है।

"रुको!" वह चिल्लाया।

अवधनी पहले तो घबरा गया। फिर उसने अपने आप पर नियन्त्रण किया, और पेड़ की ओर देखा। भूत बहुत लम्बे बालों वाला था, और बेहद कुरूप लग रहा था।

वह अवधनी से बोला, "आज तुम्हारे जीवन का आखिरी दिन है।"

अवधनी ने शान्त रहकर उत्तर दिया, "इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।"

"मैं तुम्हें मारकर खा जाने वाला हूँ। भूत ने कहा।"

अवधनी ने जवाब दिया, "कोई भी हमेशा जीवित नहीं रहता। हम सभी एक न एक दिन दुनिया से जाते हैं। इसलिए यदि मेरे मांस से तुम्हारी भूख मिट सकती है, तो आगे बढ़ो और शुरू हो जाओ।"

इस उत्तर से भूत चकित रह गया। उसी क्षण कोई अवधनी के निकट पास आया और भूत एक कदम पीछे हटकर देखने लगा।

आगन्तुक ने अवधनी को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और विनती की, "श्रीमान्, मेरी इकलौती बेटी को ज्वर हुआ है और उसने पिछले तीन दिनों से अपनी आँखें नहीं खोली हैं। कृपया हमारे घर आकर उसकी चिकित्सा कीजिए और उसके प्राण बचाइये।"

अवधनी ने उसे ढाढस बँधाया और अपनी जेब से कुछ दवाइयाँ निकालीं। फिर उसने उस पिता को तीन दिनों तक बच्ची को वे दवाएँ देने को कहा।

उसके बाद, एक युवक आगे आया और बोला, ''आपने मुझ अनाथ की सहायता करके मुझे अपने जीवन में आगे बढ़ाया है। मैं आपका यह उपकार कभी नहीं भूल सकूँगा।'' यह कहते हुए युवक ने अवधनी को रेशम के वस्त्र उपहार में दिए और उसके पैरों में गिर पड़ा।

पास ही खड़ी एक बूढ़ी महिला ने अपनी बाँहों में एक दुधमुँहे बच्चे को उठा रखा था। वह याचनापपूर्ण शब्दों में अवधनी से बोली, ''श्रीमान् मेरी बेटी इस बच्चे को जन्म देते समय चल बसी है। बच्चे को दूध की बहुत ज़रुरत है। मेरी सहायता कीजिए।''

अवधनी बोला, ''कृपया चिन्ता न करें। मेरे पास एक दुधारु गाय है। आपके बच्चे के लिए दूध की कोई कमी न रहेगी। आप इस बच्चे के साथ मेरे घर आकर अपना बाकी जीवन वहाँ बिता सकती हैं।''

उन सबके जाने के बाद भूत ने अवधनी से कहा, ''तुम महान आत्मा हो। खुद के जीवन में समस्याएँ होने के बाद भी तुम परेशान लोगों की मदद करते रहते हो। तुम जैसे लोग महान होते हैं। यदि मैं किसी प्रकार तुम्हारी सहाहयता कर सकूँ, तो मेरा यह रुप भी धन्य हो जाएगा। कदाचित अपने पिछले जन्मों में किए पापों के ही कारण मैं पृथ्वी पर इस प्रकार दुःख उठा रहा हूँ। कृपया मुझे आशीर्वाद दो जिससे मैं अगले जन्म में मानव रुप लेकर परेशान लोगों की सहायता कर सकूँ।

अवधनी उसकी प्रार्थना सुनकर चकित हुआ और उसकी बातों पर गौर करने के बाद बोला, ''यदि तुम सच में दूसरों की सहायता करना चाहते हो, तो उसके लिए तुम्हें अगले जन्म तक रुकने की आवश्यकता नहीं है। तुम यह काम अभी से शुरु कर सकते हो। अपनी क्रूरता छोड़ो और जो भी ज़रुरतमन्द तुम्हारे सामने आए, उसकी जितनी संभव हो, सहायता करो।''

''यह एक नए जीवन के ही समान होगा।'' यह कहकर अवधनी अपने रास्ते चल पड़ा और भूत हाथ जोड़े उसे जाते देखता रहा।

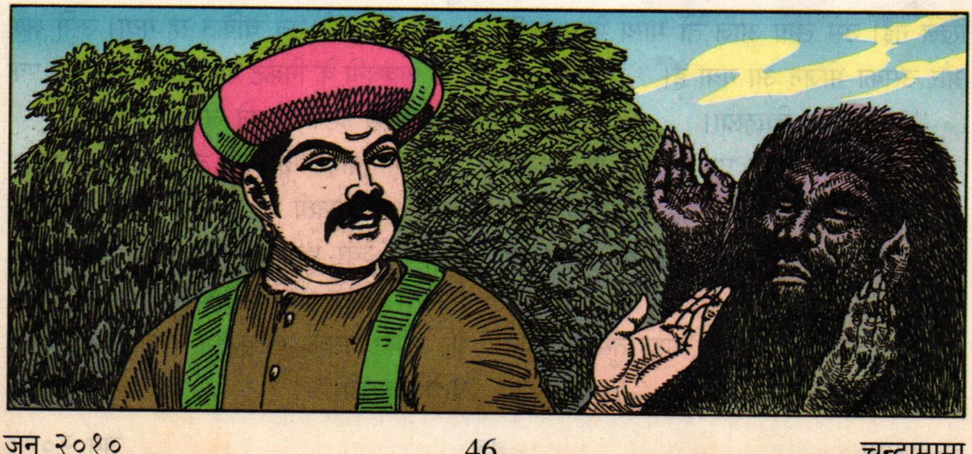

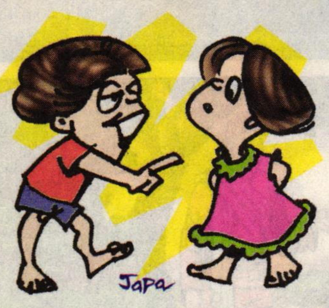

राहुल और रानी सोच रहे थे कि कौन सा खेल खेलें।
राहुल ने कहा, "हम डॉक्टर-डॉक्टर खेलते हैं।"
"यह ठीक है", रानी ने कहा, "तुम चीरफाड़ करना और मैं मुकदमा दायर कर दूँगी।"

अध्यापिकाः करन, तुमने गृहकार्य क्यों नहीं किया?
करनः सॉरी मेम!!
अध्यापिकाः 'सॉरी' मेरे शब्दकोश में नहीं है।
करनः मुझे पूरा विश्वास है कि यह पुस्तकालय के शब्दकोश में अवश्य होगा।

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१५ अप्रैल २०१० उत्तर:

१. गंधर्व २. हिन्दुस्तानी और कर्नाटिक ३. ओडिसी ४. पुरन्दरदशा ५. कश्मीर ६. तबला ७. सितार

नोटः कोई भी पूर्णतः सही प्रविष्टि नहीं मिली अतः किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

Statement about Ownership of
CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form VI), Newspaper (Central) Rules, 1956

1. **Place of Publication:**
   Chandamama India Ltd., B-3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.
2. **Periodicity of Publication:**
   MONTHLY
   1st of each calendar month
3. **Printer's Name:**
   Prashant Mulekar
   Nationality :
   Indian
   Address:
   Chandamama India Ltd., B-3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.
4. **Publisher Name :**
   Prashant Mulekar
   Nationality:
   Indian
   Address:
   Chandamama India Ltd., B-3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.
5. **Editor's Name :**
   Prashant Mulekar
   Nationality :
   Indian
   Address :
   Chandamama India Ltd., B-3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.
6. **Name and address of Individuals who own the newspaper :**
   Chandamama India Ltd., Board of Directors:
   1. Prashant Mulekar
   2. Kiran Kulkarni
   3. Salim Govani
   B-3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

I **Prashant Mulekar**, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

(Sd,) **Prashant Mulekar**
Publisher

1st March 2010

पतन

अरावली की पर्वत-मालाओं के निकट एक गुरुकुल था। पंडित कृष्णचन्द्र वहाँ के आचार्य थे। स्वभाव से अत्यन्त उदार, विद्या के धनी पंडित कृष्णचन्द्र शिक्षक के रूप में सारे देश में यश प्राप्त कर चुके थे। उनके गुरुकुल में समीपवर्ती देशों के विद्यार्थी भी विद्याध्ययन के लिये आया करते थे।

एक शाम गुरुकुल के पास के पेड़ों के बीच से आ रहे शोर को सुनकर कृष्णचन्द्र उस तरफ गये। उन्होंने देखा कि एक विद्यार्थी को अन्य चार विद्यार्थी मिलकर डाँट रहे हैं। उन्होंने इस लड़ाई-झगड़े का कारण पूछा।

तब मोहन नाम के एक विद्यार्थी ने आगे बढ़कर कहा, ''आचार्यवर, हम लोग जो भी आम पकाने के लिये रखते हैं, उन्हें नरेन्द्र हर रोज़ चुरा कर खा लेता है। हमने इसे कई बार समझाया कि हमसे माँगकर ले लो, पर यह नहीं मानता। यह और चोरियाँ भी करने लगा है। पंडित कृष्णचन्द्र ने नरेन्द्र की तरफ़ देखा। वह सिर झुकाकर ज़मीन में नज़र गाड़े खड़ा था।

आचार्य ने सबसे अपने साथ आने के लिये कहा। जब गुरुकुल के कक्ष में आकर सब अपने स्थानों पर बैठ गये, तो कृष्णचन्द्र ने कहा, ''देखो, प्रकृति में अत्यन्त चंचल वस्तु पानी है। थोड़ा-सा भी मौक़ा मिलते ही वह नीचे की तरफ बहने का प्रयत्न करता है। मनुष्य की प्रकृति भी ऐसी ही है। अगर उसका मन ज़रा भी दुर्बल हुआ तो वह आसानी से पतन के मार्ग पर बढ़ जाता है। अगर मनुष्य एक बार पतन का शिकार हो गया तो उसे पूरी तरह पतन के गड्ढे में गिरने में समय नहीं लगता। सब ध्यान देकर सुनो, मैं तुम्हें इस बात के उदाहरण के रूप में श्यामल नाम के एक युवक की कहानी सुनाता हूँ।''

आचार्य ने दो क्षण रुककर कहना प्रारम्भ किया: श्यामल बड़ा कुशाग्र बुद्धि और सुदर्शन युवक था, लेकिन दुर्जनों की संगति में पड़ कर वह बिगड़ चुका था। माता-पिता तथा अन्य बुज़ुर्गों ने उसे सुधारने के लिये अनेक उपदेश दिये, लेकिन कोई शुभ परिणाम सामने न आया। उसने

२५ वर्ष पूर्व की कहानी

पढ़ना लिखना छोड़ दिया था और आवारा लड़कों के साथ घूमा करता था। धीरे-धीरे उसे चोरी करने की आदत भी पड़ गयी।

उस देश का राजा जयदेव सिंह बड़ा धर्मनिष्ठ और भगवद्भक्त था। उसने बहुत धन खर्च करके देवी के लिये एक मन्दिर बनवाया। उसका निर्माण संगमरमर के पत्थरों से कराया गया और स्तम्भों में बहुमूल्य धातुओं का उपयोग हुआ था। जब देवी की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा हुई तो उसे बहुमूल्य आभूषणों से सज्जित किया गया।

देवी के कण्ठ में जो हार पहनाया गया, उसके मध्यभाग में एक रत्न जड़ा था, जिसकी क़ीमत करोड़ों रुपयों में आँकी गयी। इस रत्न के बारे में यह चर्चा थी कि वह सारे देश के लिये माँगलिक है।

प्रतिवर्ष नवरात्र में देवी का उत्सव अत्यन्त भव्य रूप में मनाया जाता था। इस उत्सव में लाखों रुपया खर्च होता था और इसमें भाग लेने के लिये कई देशों के राजा, प्रमुख अधिकारी, धार्मिक गुरु, आचार्य आदि भी आया करते थे।

एक बार उस उत्सव में पड़ोसी देश का राजा कालनाथ भी आया। उसकी दृष्टि देवी के कण्ठ में शोभायमान रत्नहार पर पड़ी। मध्यभाग में जटित हीरे को देखकर राजा आश्चर्यचकित रह गया। वह हीरों का पारखी था, अतः उसने सहज ही उसके मूल्य को आँक लिया।

राजा कालनाथ उत्सव समाप्त होते ही कोई संकल्प करके अपने देश को लौट गया। उसने जाते ही अपने प्रधान गुप्तचर से बातचीत की और उसे सब समझाकर उस रत्न को चुरा लाने का काम सौंप दिया।

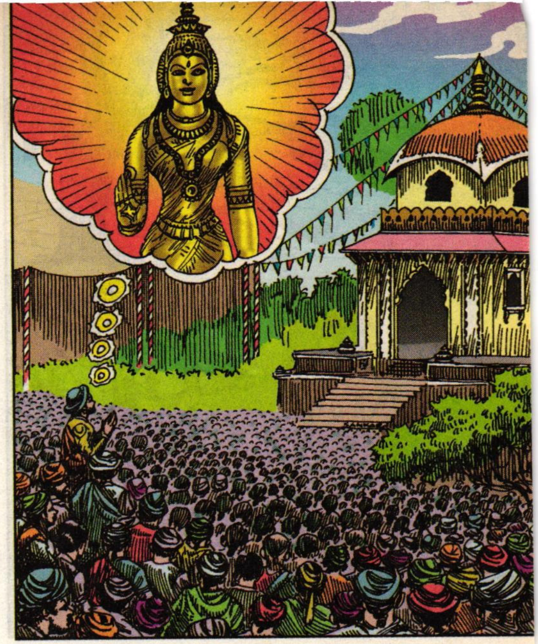

प्रधान गुप्तचर वीरभद्र राजा का अत्यन्त विश्वासपात्र था और राजा के गोपनीय कामों को बड़ी कुशलता से सम्पन्न करता था। राजा कार्य पूर्ति के बाद हमेशा ही वीरभद्र को श्रेष्ठ पुरस्कार दिया करता था।

वीरभद्र उस बहुमूल्य रत्न को चुरा लाने के लिये पड़ोसी देश में गया। उसने पुजारी से अन्तरंग मित्रता कायम कर ली और फिर उसे प्रलोभन देकर अपने काम में मदद देने के लिये तैयार कर लिया।

उस दिन बुधवार था। दोनों ने अगले दिन गुरुवार की रात को रत्नहार हड़प लेने का निश्चय कर लिया। ठीक उसी रात श्यामल अपने मित्रों के साथ देर तक समय बिता कर लौट रहा था। उसे प्यास लगी तो वह अपनी प्यास बुझाने के लिये मन्दिर के कुएँ के पास रुक गया। तभी उसने देखा कि पुजारी एक अपरिचित आदमी के साथ मन्दिर की तरफ़ जा रहा है। श्यामल की समझ में नहीं

आया कि आधी रात के समय पुजारी उस आदमी को लेकर मन्दिर में क्यों जा रहा है।

श्यामल के मन में पुजारी की नेकनीयती पर सन्देह हुआ। वह पास की दीवार फांदकर मन्दिर में घुसा और गर्भगृह की सीढ़ियों के पास अंधेरे में छिप गया। थोड़ी देर बाद पुजारी वहाँ आया। गर्भगृह का ताला खोलकर वह अन्दर गया। कुछ क्षण बाद श्यामल भी गर्भगृह में गया, पुजारी के पीछे खड़े होकर आवाज़ को भारी और गंभीर बना कर बोला, पुजारी, इस समय तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

इस भारी-भरकम आवाज़ को सुनकर पुजारी घबरा गया। उसके हाथ काँपने लगे और रत्नहार छूटकर नीचे गिर गया।

श्यामल ने वह रत्नहार अपने हाथ में उठा लिया और कहा, ''डरो मत, क्या तुम यह रत्नहार बेचना चाहते हो? तुम्हारे साथ वह अजनबी कौन है?''

पुजारी ने सारा किस्सा सुना दिया। श्यामल ने पुजारी से कहा, ''देवी का हार एक विदेशी को दे देने पर अमंगल होगा। हमारे हाथों में रहने पर कम से कम यह देश में तो बना रहेगा। सोचो, क्यों न हम दोनों ही इसके मालिक बन जायें?''

पुजारी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसके बाद पुजारी ने गर्भगृह का ताला लगाया और श्यामल के साथ बाहर आया। वीरभद्र गर्भगृह के बाहर पहरा दे रहा था। श्यामल ने पीछे से आकर उसके सिर पर लाठी का वार किया। वह उसी क्षण वहीं ढेर हो गया। पुजारी ने चाबियों का गुच्छा उसकी बगल में फेंक दिया। अब वे दोनों नगर की सीमा की तरफ़ बढ़ चले। नगर की सीमा पार करते ही दोनों के मन में उस हार को हड़प लेने की लालसा हुई। पर वे चुपचाप चलते रहे। अगले दिन दोपहर को वे वन मार्ग के पास की एक धर्मशाला में पहुँचे। वहाँ की रसोई से उन्होंने भोजन लिया और एक पेड़ की छाया में बैठ कर खाने लगे। दोनों ने ही आँख बचाकर एक-दूसरे के भोजन में ज़हर मिला दिया था। कुछ ही देर में दोनों मर गये।

कृष्णचन्द्र ने कहानी समाप्त की और अपने शिष्यों से कहा, श्यामल और पुजारी पहले इतने ख़तरनाक आदमी नहीं थे। पर उनका मन दुर्बल था इसलिये उनके भीतर अल्प मात्रा में आरम्भ हुआ पतन दो दिन के अन्दर उनके सर्वनाश का कारण बन गया।

सभी विद्यार्थी भारी हृदय लेकर वहाँ से चले गये। लेकिन नरेन्द्र आँखों में आँसू भर कर वहीं खड़ा रहा। फिर कृष्णचन्द्र को प्रणाम करके बोला, ''आचार्यवर, आपके सचेत करने से मैं अपने

पतन को समझ गया हूँ। लेकिन अब भविष्य में कभी ऐसा नहीं होगा। मैं ऊपर उठूँगा। मैं आपको वचन देता हूँ। मेरी बात पर विश्वास कीजिये।

नरेन्द्र के चले जाने के बाद कृष्णचन्द्र की पत्नी सुशीला ने अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुए कहा, ''नरेन्द्र तो सुधर गया है, पर श्यामल और पुजारी की भाग्यहीनता ने उन्हें सुधरने का मौक़ा नहीं दिया।

कृष्णचन्द्र ने मुस्करा कर कहा, ''पुजारी तो अवश्य भाग्यहीन था, पर श्यामल नहीं।''

''वो कैसे?'' सुशीला ने विस्मित होकर पूछा।

''सुशीला, पुजारी तो वृद्धावस्था के कारण विष के प्रभाव को सहन न कर सका, और तुरन्त मर गया। श्यामल जवान था, काफ़ी देर तक जीवन-मृत्यु के बीच संघर्ष करता रहा, तभी एक महान आयुर्वेदाचार्य ऋषितुल्य व्यक्ति उधर से निकले। उन्होंने अपनी औषधि से उसके प्राण बचाये। जब श्यामल ने अपनी सारी कहानी उन धर्मात्मा पुरुष को सुनाई तो उन्होंने उसके प्रति किसी भी तरह की ग्लानि नहीं दिखाई और उसकी सत्यवादिता पर प्रसन्न होकर उसे ज्ञान-दान दिया।''

सुशीला बोली, ''श्यामल एक दिन की अवधि में दो प्राणियों की मृत्यु का कारण बना। उसके पापों का कुछ प्रायश्चित हो जाता तो न्याय संगत होता।''

''उसका प्रायश्चित हुआ। आयुर्वेदाचार्य ने श्यामल को अपना शिष्य बनाया, लेकिन उसे एक वर्ष तक गुरुकुल में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी। उसने एक वर्ष तक पास की एक अंधेरी गुफ़ा में निवास किया और शीत ताप सहकर कठिन तपस्या की। उन महात्मा की कृपा से ज्ञानार्जन करके वह कालान्तर में कृष्णचन्द्र बन गया।'' आचार्य ने पत्नी से कहा।

''तो क्या आप ही श्यामल थे?'' सुशीला चकित होकर बोली, फिर एक क्षण रुक कर उसने पूछा, ''उस रत्नहार का क्या हुआ?

''वह तो उसी समय राजा को दे दिया गया था। आचार्य के कहने से मैं दण्ड पाने से बच गया। मैं पतन के गड्ढे में गिर जाता, इससे पहले ही एक महात्मा के स्पर्श ने मुझे उबार लिया, विद्यादान देकर यशस्वी बनाया। यह मेरे ही पुनर्जन्म की कहानी है।'' कृष्णचन्द्र ने गहरी साँस लेकर कहा।

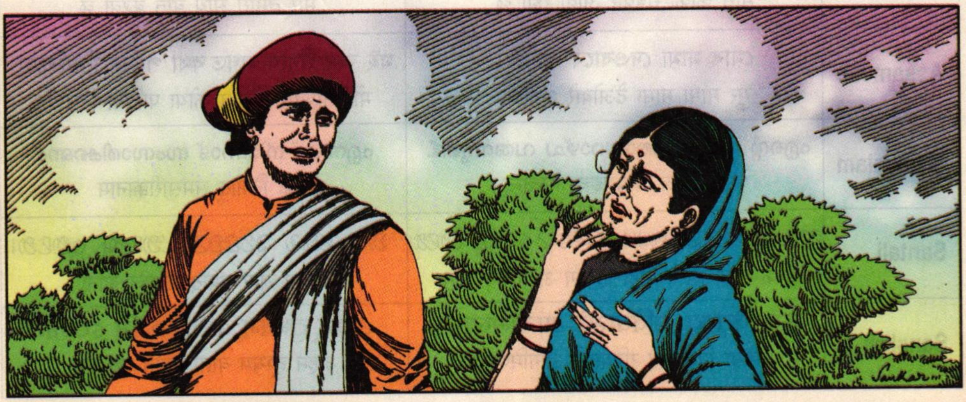

चूँ-चूँ का डिब्बा

आप कितनी भाषाएँ जानते हैं? अब चन्दामामा के माध्यम से बहुत सी भाषाएँ जानें एवं आत्मविश्वास के साथ भारत भ्रमण करें! नीचे की तालिका में दिए गये भाषा के शब्द पढ़ें। उसके बाद तालिका में और नीचे देखकर अन्य भाषाओं में इन्हें किस तरह बोला एवं लिखा जाता हैं वह जानें।

English	**My uncle is coming on Sunday.**	**I want to talk to you.**
Hindi	**मेरे चाचा रविवार को आ रहे हैं।**	**मैं आपसे बात करना चाहता हूँ।**
Telugu	మా మామయ్య ఆదివారం వస్తున్నారు. मा मामय्य आदिवारम वस्तुन्नारु	నేను మీతో మాట్లాడాలనుకుంటున్నాను. नेनु मीथो मात्लाडालनुकुन्टुन्नानु
Tamil	ஞாயிறன்று என் மாமா வருகிறார். ग्नायिरान्द्रु ऐन मामा वारुकिरार	உன்னிடம் நான் பேச வேண்டும். उन्निदाम नान पेसा वेन्दुम
Bengali	আমার কাকা রবিবার আসছেন आमार काका रोबिबार आछेन.	আমি তোমার সঙ্গে কথা বলতে চাই आमी थोमार सोन्गे कथा बोल्तेय चाइ
Marathi	**माझे काका रविवारी येत आहेत.** माझे काका रविवारी येत आहेत	**मला तुमच्याशी काही बोलायच आहे.** मला तुम्च्याशी काही बोलायच आहे
Kannada	ನನ್ನ ಮಾವ ಭಾನುವಾರ ಬರುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. नन्ना माव भानुवारा बरुत्तिदारे	ನಿಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ನಾನು ಮಾತನಾಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತೇನೆ. निम्मोम्दिगे नानु मातनाङलु ईच्छिसुत्तीने
Oriya	ମୋର ମାମୁ ରବିବାର ଦିନ ଆସୁଛନ୍ତି । मोरा मामु रबिबारा दिना आसुछान्ति	ମୁଁ ତୁମ ସହିତ କଥାବାର୍ତ୍ତା କରିବାକୁ ଚାହୁଁଛି । मुं तुमा सहिता कथाबार्ता करिबाकु चाहुंछी
Gujarati	મારા કાકા રવિવારે આવી રહ્યા છે. मारा काका रविवारे आवी रह्या छे	મારે તમારી સાથે વાત કરવી છે. मारे तमारी साथे वात करवी छे
Assamese	মোৰ মামা দেওবাৰে আহিব। मुर मामा मामा देओबारे आहिबो	মই আপোনাৰ লগত কথা পাতিব বিচৰিছো। मोई अपुनार लोगोत कोथा पातिबो बिसारिसु
Malayalam	എന്റെ അങ്കിൾ ഞായറാഴ്ച വരുന്നുണ്ട്. ऐन्ते अंकल जायराइचा वरुन्नुन्दु	എനിക്ക് നിന്നോട് സംസാരിക്കണം. ऐनिकु निन्नोदु समसारीक्कानाम
Santali	ᱤᱧᱠ ᱢᱟᱢᱚ ᱥᱤᱧᱜᱮ ᱢᱟᱦᱟ ᱦᱤᱞᱚᱜ ᱚ ᱦᱤᱡᱩᱜ ᱠᱟᱱᱟ। ईन्क मामो सिन्गे माहा हिलोग अ हिजुग काना	ᱟᱢ ᱥᱚᱱ ᱨᱟᱯᱟᱫ ᱥᱟᱱᱟᱝᱡ ᱠᱟᱱᱟ। आम सोन रापाद सानांज काना
Sanskrit	मम पितृव्य: रविवासरे आगमिष्यति। मामा पितृव्याह रविवासरे आगमिष्यति	अहम् तुभ्यम् वार्ता कर्तुम् इच्छामि। अहम तुभ्यम वार्ता कर्तुम इच्छामि

English	I am writing a letter.	I love to sing.
Hindi	मैं एक पत्र लिख रहा हूँ।	मुझे गाना पसन्द है।
Telugu	నేను ఉత్తరం రాస్తున్నాను. नेनु वुत्तराम रास्तुन्नानु	నాకు పాడటం అంటే ఇష్టం. नाकु पाडटम अन्टे इस्टम
Tamil	நான் கடிதம் எழுதுகிறேன். नान कदिथाम ऐझुथुकिरेण	எனக்கு பாடுவது பிடிக்கும். ऐनाक्कु पादुवाथु पिडिक्कुम
Bengali	আমি একটা চিঠি লিখছি आमि ऐकता चिट्ठी लिखच्छी	আমি গান গাইতে ভালোবাসি आमि गान गाईते भालोबाशी
Marathi	मी पत्र लिहित आहे. मी पत्र लिहित आहे	मला गाण्याची आवड आहे मला गाण्याची आवड आहे
Kannada	ನಾನು ಪತ್ರವೊಂದನ್ನು ಬರೆಯುತ್ತಿದ್ದೇನೆ. नानु पत्रवोमदन्नु बेरयुत्तिड्डने	ಹಾಡುವುದೆಂದರೆ ನನಗೆ ಇಷ್ಟ. हाड्डुवुदेम्दारे ननगे ईश्टा
Oriya	ମୁଁ ଗୋଟେ ଚିଠି ଲେଖୁଛି । मुं गोतिऐ चिट्ठी लेखुची	ମୁଁ ଗାଇବାକୁ ଭଲ ପାଏ । मुं गाईबाकु भालापाई
Gujarati	હું પત્ર લખી રહ્યો/રહી છું. हुं पत्र लखी रह्यो/रही छुं	મને ગાવાનો શોખ છે. मने गावानो शोख छे
Assamese	মই এখন চিঠি লিখি আছো। मोई ऐखोन सिथि लिखि आसु	মই গান গাই ভাল পাও। मोई गान गाई भाल पाओ
Malayalam	ഞാനൊരു കത്ത് എഴുതുകയാണ്. जानोरु काथु एझुथुकायानु	എനിക്ക് പാടാൻ ഇഷ്ടമാണ്. ऐनिकु पादान ईश्तामानु
Santali	ᱤᱧ ᱢᱤᱫ ᱥᱤᱴᱷᱤᱧ ᱚᱞ ᱮᱫᱟ। ईन्ज मिद सिथिन्ज ओल ऐडा	ᱥᱮᱨᱮᱧ ᱫᱩᱧ ᱠᱩᱥᱤᱭᱟᱜ-ᱟ। सेरेन्ज दुन्ज कुसियागा
Sanskrit	अहम् एकम् पत्रम् लिखामि। अहम् एकम् पत्रम् लिखामि	गानम् मह्यम् रोचते। गानम् मह्यम् रोचते

तेज़ फॉर्मूला परिणाम

आप सभी के सबमिशन्स के लिए धन्यवाद। एक भी सही प्रविष्टी नहीं मिल पाने की वजह से, अप्रेल'१० के अंक का पुरस्कार किसी को भी देना संभव नहीं है।

प्रेम का बैंक

क्या आपको पता है कि वाराणसी का एक बैंक प्रेम के अलावा कुछ भी स्वीकार नहीं करता? इस बैंक को ओ॥ नमः शिवाय बैंक कहा जाता है, जिसे श्रद्धालुओं ने सन् २००२ में स्थापित किया था। बैंक वर्ष में एक बार, महाशिवरात्रि के दिन खुलता है और इसमें ओ॥ नमः शिवाय लिखी हुई पाण्डुलिपियाँ जमा करवाई जा सकती हैं।

बैंक में अब तक भारत और विदेशों से ५४ करोड़ से अधिक संख्या में हस्तलिखित ओम् नमः शिवाय मन्त्र जमा करवाए हैं। श्रद्धालुओं का मानना है कि ये हस्तलिखित काग़ज़ जमा करवाने से उन्हें भगवान शिव का आशीर्वाद मिलेगा। जितने अधिक जमा, उतना ही अधिक आशीर्वाद!

और हाँ, बैंक खुद ही जमा करने वालों को काग़ज़ के बंडल प्रदान करता है। प्रतिवर्ष बैंक अपने पास जमा मन्त्रो के बंडल एक प्रदर्शनी के माध्यम से श्रद्धालुओं को दिखाता है।

बैंगन ठीक कर सकते हैं पेट का दर्द

यदि आपको पेट में तीव्र दर्द हो रहा हो, तो त्रिशूर से २५ किमी दूर इरिनजालक्कुडा के भरत मन्दिर में भगवान राम के छोटे भाई भरत को समर्पित मन्दिर में बैंगन अर्पित करके पेट के दर्द से मुक्ति पाई जा सकती है! बहुत समय पहले इस मन्दिर का एक भक्त पेट दर्द से पीड़ित था। भगवान ने सपने में उसे १०१ बैंगन अर्पित करने को कहा। ऐसा करते ही उसे दर्द से मुक्ति मिल गई। तभी से, यहाँ पेट दर्द से निजात पाने के लिए १०१ बैंगन चढ़ाए जाते हैं।

यह भी माना जाता है कि कुलीपथी नामक एक संत उस स्थान पर यज्ञ करते थे जहाँ मन्दिर बना है। मन्दिर केभीतर कुलीपथी कुंह नाम का कुंह है। इसके पानी में मछलियों के अलावा कोई और जन्तु नहीं पाए जाते और यह माना जाता है कि ये मछलियाँ यहाँ यज्ञ करने वाले साधुओं की वंशज हैं।

इस मन्दिर में घंटियाँ नहीं बजाई जातीं।

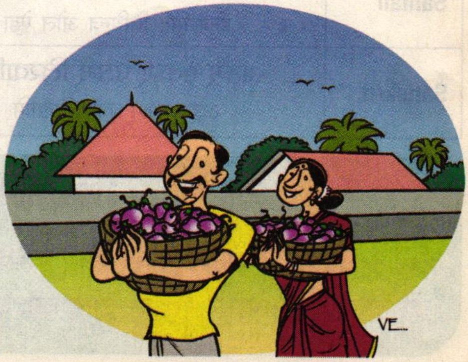

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

Choose your Chandamama! Go to www.chandamama.com & subscribe Now!!

Chandamama is available in English and 12 regional languages. Junior Chandamama for children below 9 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior

Name: ARUSHI ....

Date of Birth: .... Sex : ....

Address: ....

....

....

.... City: ....

State: .... Pin: ....

Telephone: ....

Mobile: ....

Email: ....

Subscription Number (for renewals): ....

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees ....

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on ....

.... bank.

Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East),
Mumbai-400093. Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at: www.chandamama.com

Get surprise gifts by subscribing this month **

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 240	Rs. 375
REGIONAL (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 770	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 190	Rs. 300
JUNIOR (Rs. 15/- per copy)	Rs. 180	Rs. 325	Rs. 460	Rs. 575	Rs. 675
You Save		Rs. 35	Rs. 80	Rs. 145	Rs. 225

** conditions apply

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

सन्धि

९८९ ई पू, सप्तसिन्धवः, सरस्वती नदी के किनारों पर...

पुरुकुत्स ने अपना साफा उतारा। सूर्य का तेज बहुत नृशंस था। पंडितों ने पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि इस वर्ष बारिश नहीं होने वाली थी - जिसका कारण थश भरत के पुत्रों के बीच हुआ रक्तपात।

त्रित्सुओं और पुरुओं के बीच वर्षों से युद्ध चल रहा था - और इसपर उनका कोई वश नहीं चलता था।

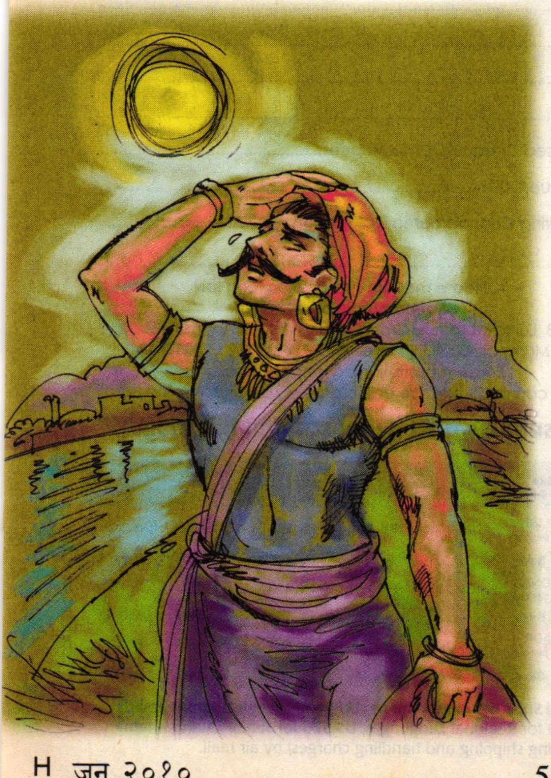

लेकिन क्या यह सच था? उसकी आत्मा ने उससे पूछा।

उसे कारण पता था - दशरजना।

हालाँकि उसे युद्धों की आग ने तपाकर फौलाद बना दिया था, फिर भी वह एक झुरझुरी आने से नहीं रोक पाया।

दस कुटुम्ब। दस राजा, जो लगभग पूरे भारतवर्ष की जनसंख्या के प्रतिनिधि थे, ने एक अकेले के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बना लिया था, इसलिए कि एक विद्वान को कुछ बुरा लगा था। सभी पुरु के खेमे में शामिल हो गए और त्रित्सुओं से युद्ध आरम्भ कर दिया।

और उस युद्ध में अपार रक्तपात हुआ।

उसने अपने सिर को झटका। इसके बारे में मत सोचो। राजा सुदास के बारे में मत सोचो। उन मौतों के बारे में मत सोचो। त्रासदस्यु के बारे में मत सोचो।

"मेरा बेटा," वह दुःखपूर्वक बड़बड़ाया। दस कुटुम्बों की लड़ाई में उसका बेटा काम आ चुका था, और अब वह सर्वनाश के कगार पर था। वह नदी के किनारे की एक बस्ती में था, जो तटस्थ रही थी।

उसके अपने नगर यहाँ से बहुत दूर थे, और उसकी अधिकांश सेना वापस नहीं जा सकेगी। और फिर भी बचाने के लिए कुछ खास नहीं था।

उसके पहले, उसे जवाबी हमला करने के लिए जितने आदमी हो सकें, इकट्ठे करने थे। त्रासदस्यु।

उसे अपना पुत्र वापस चाहिए था। और उसके लिए उसे कुछ आवश्यक चीज़ें जुटानी थीं।

कोई उसकी तरफ़ आ रहा था। यह एक घनी दाढ़ी वाला आदमी था और उसके हाथ में एक छड़ी थी। पुरुकुत्स इन्तज़ार करने लगा।

''अभिनन्दन, महाशय,'' उसने पुरुक्त्स से पहले ही बोला। आने वाला रुका। उसकी आँखों ने उसके भीतर आत्मा तक झाँक लिया और राजा ने प्रयत्न किया कि वह पहलू बदलता हुआ सा न लगे।

''अभिनन्दन,'' उस व्यक्ति ने अत्यन्त सभ्य स्वर में उत्तर दिया। ''लोग मुझे चन्दन कहते हैं। और आप हैं?''

''मैं पुरुकुत्स हूँ।'' उसे ठीक से तो नहीं पता लगा लेकिन अन्दाज़ा लगाया कि सामने खड़ा व्यक्ति कुछ कड़ा पड़ गया। शायद वह भी थोड़ा सा परिचित था। शायद उसे यहाँ कोई मदद न मिले, लेकिन प्रयास तो करना ही था। ''चन्दन, क्या तुम इसी बस्ती में रहते हो?''

''मैं अक्सर यहाँ रहता हूँ, यह सच है,'' चन्दन ने जवाब दिया। उसकी आँखें फिर पुरुकुत्स पर जम गईं। ''मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ?''

''कृपया मुझे अपने बड़ों के पास ले चलें।''

***

जैसा कि पता लगा, चन्दन उस बस्ती के बड़ों से ही सम्बद्ध निकला। वे पाँच लोग अब एक नी म के पेड़ के नीचे बैठे थे। थोड़ी दूर पर आगे होने वाली कार्रवाई को देखने के लिए गाँववाले इकट्ठे हो गए थे।

''मेरे पास केवल यह है,'' पुरुकुत्स ने अपना

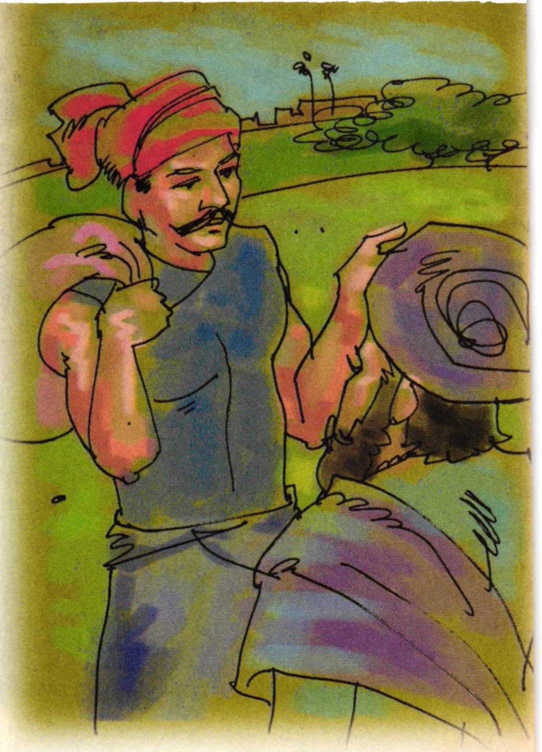

ख़जाना दिखाया; लोग चमचमाते सोने और रत्नों को ध्यान से देख रहे थे। ''पारुश्नी के तटों पर मेरे लोग अब भी परेशानियाँ उठा रहे हैं,'' अपनी आवाज़ के दर्द को न दबा पाते हुए उसने कहा। ''हमारे पास दवाएँ नहीं हैं। भोजन लगभग समाप्त हो गया है। मेरे नगर ता जाने में हफ़्तों लग जाएँगे, और इस प्रकार तो रास्ते में ही उनमें से कई सिधार जाएँगे। मैं आपसे याचना करता हूँ - हमारी सहायता कीजिए।''

बड़ों ने एक-दूसरे की ओर देखा। ''क्या आपको पता है कि यह बस्ती तटस्थ रहने के लिए कृतसंकल्प है?,'' चन्दन बोला। ''यदि हम सहायता करते हैं, तोवह उन लोगों की सहायता होगी, जो रक्त बहाते हैं।''

''आप पिताओं, पुत्रों, भाईयों और पतियों की सहायता कर रहे होंगे,'' पुरुकुत्स ने याचना की।

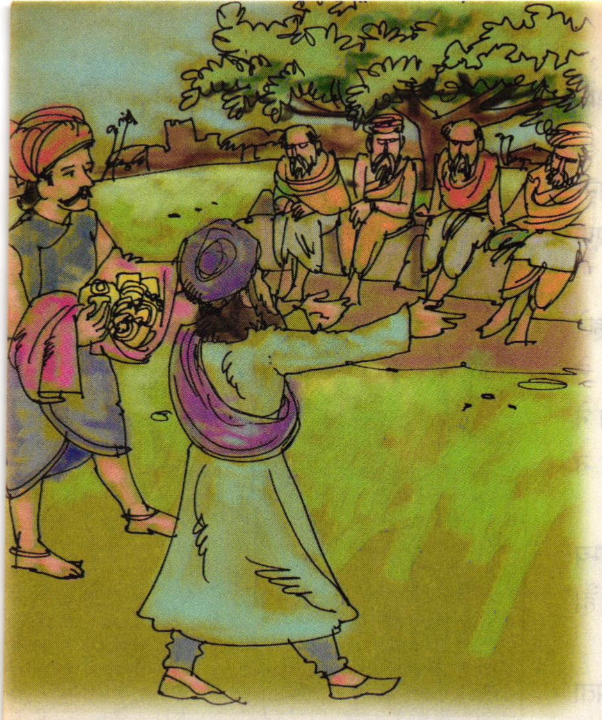

कि एक विद्वान था जिसे कभी राजा सुदास की ओर से सम्मानित किया गया था।''

''सुदास ने उस विद्वान को धोखा दिया था,'' पुरुकुत्स ने दृढ़ता से उत्तर दिया। ''अतः स्वाभाविक ही थश कि वह धर्म के अनुसार कार्य करे, और दोषी को उसका उचित दंड मिले।''

''धर्म?'' चन्दन की भृकुटि तनी। ''किसी एक व्यक्ति के कहने पर, जो स्वयं अपने स्वार्थों से प्रेरित किसी कारण से बेहद नाराज़ हो, दस कुटुम्बों का एक के विरुद्ध लामबन्द हो जाना कहाँ का धर्म है?''

''सुदास को उसे अपने दरबारी विद्वान के पद से हटाना नहीं चाहिए था।'' पुरुकुत्स की आवाज़ में गज़ब की दृढ़ता थी लेकिन उसकी आँखों ने अपनी हिचक बयान कर दी।

''चाहे उसके स्थान पर उससे बेहतर व्यक्ति ही क्यों न आया हो? यदि वह इस नुकसान पर इस प्रकार का बर्ताव करेगा तो सुदास को तो उससे छुटकारा पाना ही होगा।''

''पानी अभी पुल के नीचे है।'' पुरुकुत्स की आवाज़ धीमी थी।

''अच्छा? तुम अब भी अपने लोगों को युद्ध में लगाना चाहते हो, है ना? तुम हमारे संसाधनों का उपयोग करके अपनी सेना को ठीक करोगे और फिर सुदास से युद्ध करोगे।''

''केवल मेरे बेटे को बचाने के लिए!'' पुरुकुत्स के आँसू निकल ही पड़े, ''मेरा पुत्र,'' वह फुसफुसाया, ''त्रासदस्यु।''

''जिसे सुदास ने युद्ध के दौरान बंदी बना लिया था,'' चन्दन का सिर सहमति में हिला। ''तुम्हारे

ऐसे लोगों की, जो युद्ध में अपने हाथ-पैर या रक्त गँवा चुके हैं। आप लोग मरहम लगाने वालों के रुप में जाने जाते हैं। यदि आप मदद करते हैं, तो यह ऐसा होगा जैसे आप दस कुटुम्बों से अन्तिम को बचाने में अपना योगदान कर रहे हैं।

''जिससे कि आप फिर से शक्तिशाली बनकर दुबारा युद्ध जैसे घृणित काम आरम्भ कर सकें,'' चन्दन कोमल स्वर में बोला।

''मैं जानता हूँ कि आप लोगों ने तटस्थ रहना चुना है - लेकिन हमारा कर्तव्य तो अपने लोगों के ही प्रति रहेगा। और युद्ध हमारे जीवन का हिस्सा हैं।''

''लेकिन दशरंजन लोगों की रक्षा के लिए किया गया युद्ध नहीं था, है ना?'' चन्दन धीमे से उठ खड़ा हुआ। ''वह एक ऐसी लड़ाई थी, जो केवल एक व्यक्ति के उकसावे पर आरम्भ हो गई थी, जो

विरुद्ध शस्त्र की तरह उपयोग के लिए। क्योंकि युद्ध नौ कुटुम्बों का था जो हमेशा से ट्रायटस से जलती रही हैं, और जिन्हें सुदास की अमीरी बहुत लुभाती है। उस विद्वान ने अपना मौका देखा, लेकिन तुमने अपनी जलन की वजह से हमला किया। वह विद्वान तो केवल एक बहाना था।''

पुरुकुत्स में से लड़ने का जज़्बा समाप्त होने लगा था। उसके कन्धे झुक गए। ''क्या तुम्हें लगता है कि मुझे इस युद्ध को अफ़सोस नहीं?'' वह बड़बड़ाया।

''तुमने लड़ाई शुरु की, और हार गए।'' पुरुकुत्स के चेहरे पर दुःखभरी मुस्कुराहट आई। ''यहाँ तक कि परुश्नी नदी ने भी सुदास का पक्ष लिया। स्पष्ट है कि देवता भी उसपर कृपा करते हैं।''

''लेकिन सबसे पहली बात ये कि उसकी प्रजा उसे प्रेम करती है।'' चन्दन रुका। ''कोई भी राजा अंतहीन रक्तपात नहीं चाहता। और यदि मैं सुदास से तुम्हारे बेटे के विषय में बात करूँ, तो क्या तुम शान्ति रहने दोगे?''

''पुरुकुत्स चन्दन को घूर रहा था। ''हाँ,'' उसके गले से फंसी आवाज़ निकली।

***

दो महीने बाद, पुरुकुत्स राजधानी ट्रायटस में राजा सुदास से मिलने के लिए मौजूद था। उसके चन्दन की बस्ती में जाने के बाद त्रासदस्यु सकुशल लौट आया था।

सुदास द्वारा उसे छोड़ दिए जाने से इलाके में शान्ति की आहट महसूस होने लगी थी। त्रासदस्यु की मुक्ति के बाद पुरुकुत्स ने अपनी सेना का रुख घर की ओर मोड़ दिया। कुछ ही दिनों के बाद उसे सुदास की ओर से निमन्त्रण मिला था। और इसी कारण वह आज यहाँ आया था। सुदास से मिलने से पहले वह चन्दन की बस्ती में गया। किन्तु चन्दन से उसकी भेंट हो ही नहीं पाई। बस्ती के लोगों को भी उसके बारे में कुछ पता नहीं था।

अंततः सिंहासन कक्ष के विशाल द्वार खुले। पुरुकुत्स उठकर खड़ा हुआ लेकिन पूरे राजसी ठाट-बाट के साथ भीतर आने वाले को देखकर उसका मुँह खुला ही रह गया। उसने दाढ़ी ज़रुर हटा दी थी, लेकिन उसे पहचानना मुश्किल नहीं था। ''चन्दन!'' वह बोला।

''नहीं,'' राजा मुस्कुराया, ''ट्रायटस का सुदास। हे पुरु राजा, मेरे घर और एक नए सवेरे में आपका स्वागत है।''

- पवित्रा श्रीनिवासन

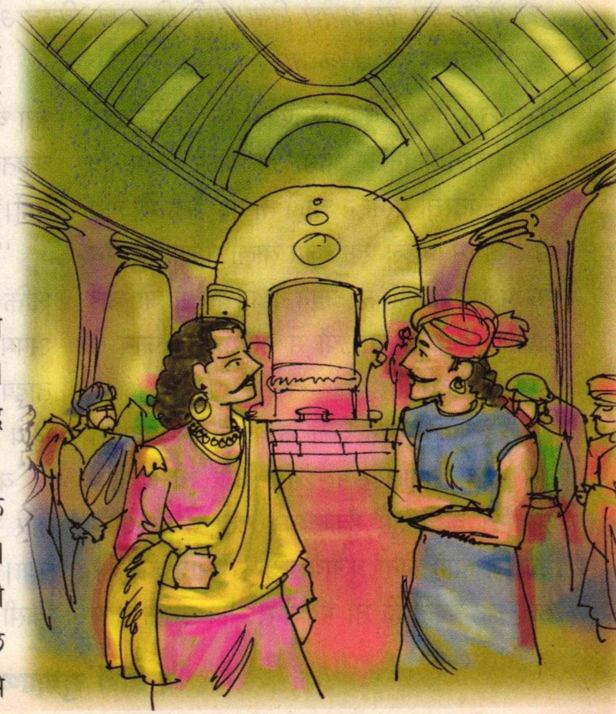

शिथिलालय - ३

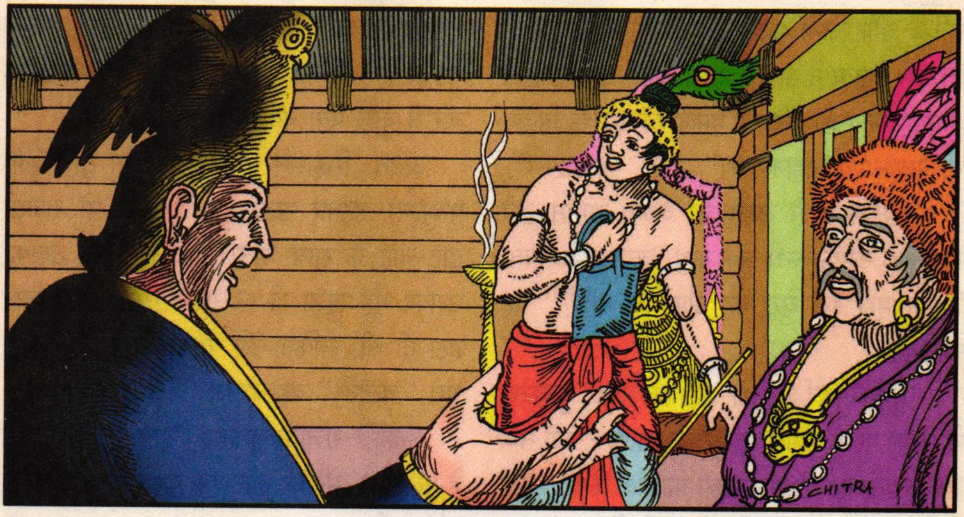

शिवाल के साथ सभी देहाती फिर शबर गाँव में पहुँचे। विक्रमकेसरी ने शिवाल को ताड़पत्रों की थैली दिखाते हुए कहा कि उसके दादा एक बार और ब्रह्मपुत्र की घाटी की ओर गये थे। शिवाल ने शिखिमुखी को थैली लाने का आदेश दिया। इसी बीच एक विकृत आकृति उनके सामने प्रत्यक्ष हुई। सब चकित हो कर देखते रहे। इसके बाद...

विकृत आकार चुपचाप एक-एक कदम रखते हुए शिवाल के निकट आया और बोला, "तुम सब लोग जबर्दस्ती मरना न चाहो तो वह थैली मेरे हाथ में दे दो। मैं पिछले एक हज़ार सालों से शिथिलालय का पुजारी हूँ। उसको देखने के विचार से जो कोई ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों में आया, वह जान से हाथ धो बैठा।"

यह कहते उसने थैली के वास्ते हाथ बढ़ाया। इस बीच शिवाल संभल गया और तीक्ष्ण दृष्टि प्रसारित करते हुए हुँकार कर उठा, "घर आये अतिथि चाहे बिना बुलाये क्यों न आये हो और अंट-संट बकते हो तो भी शबर लोग उसके साथ बुरा व्यवहार नहीं करते। इसलिये मैं नरम शब्दों में कहता हूँ कि तुरन्त बाहर चले जाओ, वरना खैर नहीं।"

"अच्छा जाता हूँ। शिथिलालय के पुजारी की शक्ति और सामर्थ्य को तुम नहीं जानते। मैं इस अपमान का बदला जरूर लूँगा। इस थैली में जो ताड़पत्र हैं, वे तुम्हारे और विक्रमकेसरी के नाश के लिये ही काम देंगे।"

यह कहते हुए वह विकृत आकार दरवाजे की ओर बढ़ा और देखते-देखते अचानक गायब हो गया। उसका दरवाजा खोलना और बन्द करना किसी को दिखाई न दिया।

दासारी सुब्रह्मण्यम्

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने तुरन्त पास जाकर दरवाजा खोला और बाहर देखा। बाहर घना अन्धकार था। विकृत आकार कहीं दिखाई न दिया। घर के चारों तरफ़ जो बाड़ा था उसके पास दो चार शबर युवक खड़े होकर पहरा दे रहे थे।

शिखिमुखी ने उनके निकट जाकर पूछा, "पिशाच की तरह लम्बा और काली पोशाकवाला जो इधर आया था वह कहाँ चला गया?"

"काली पोशाकवाला? ऐसा आदमी कोई इधर नहीं आया।" यह कहते पहरेदार अचरज में आ गये। इतने में एक काला कुत्ता भौंकते हुए सरोवर की ओर दौड़ने लगा।

विक्रमकेसरी और शिखिमुखी बिना कुछ सोचे-विचारे उसका पीछा करने लगे। जब वे दोनों सरोवर के निकट पहुँचे तब सरोवर में कोई भारी चीज धम्म से गिरने की आवाज़ हुई।

सरोवर के चारों तरफ़ घने और ऊँचे उगे हुए पेड़ों की आड़ में छाया की भाँति मानव आकृतियाँ हिलती दिखाई दीं। विक्रमकेसरी धीरे से बोला, "शिखिमुखी, जंगल में धोखे से मुझ पर हमला करनेवाले दुष्टों का शायद वह विकृत आकारवाला नेता हो सकता है। उसको या उसके अनुचरों में से किसी एक को पकड़ने से उस विकृत आकारवाले की चाल का हम पता लगा सकते हैं।"

"अच्छी बात है। तब तो हम दोनों एक ही दिशा में न जाकर अलग-अलग दिशाओं में जाएँगे। हम हिम्मतवर हैं। भाला फेंकने से चूकेंगे नहीं। घायल भी हमें मिलें तो हमारा प्रयत्न सफ़ल होगा।" यह कहते हुए शिखिमुखी सरोवर की बाईं ओर के पेड़ों की तरफ़ भागने लगा। विक्रमकेसरी दाईं तरफ़ दौड़ पड़ा।

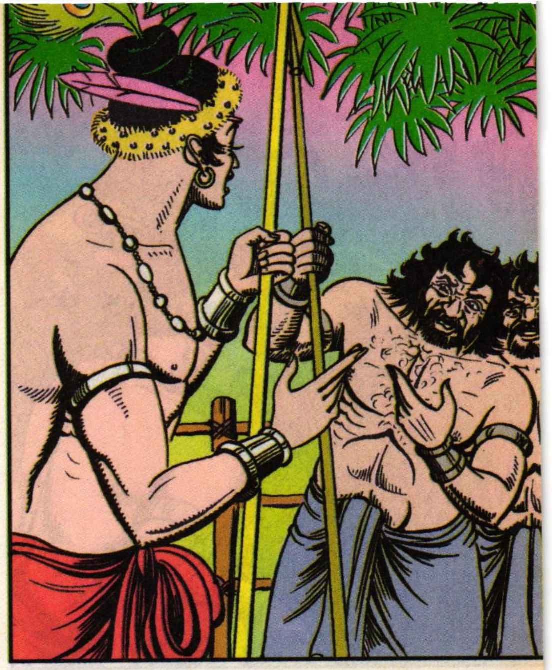

घने पेड़ों के पीछे शिखिमुखी को चोरों की बातें और उनके चलते समय पैर के नीचे पड़ने से सूखे पत्तों की सर-सर की ध्वनि सुनाई दी। कुत्ता बड़ी दूर पर भौंक रहा था। वह शायद सबसे आगे जाने वाले चोर का पीछा कर रहा था। कुत्ते को बुलाने से उसे बड़ी मदद मिल सकती थी। लेकिन इससे चोरों को भी पता लग सकता था कि वे उनका पीछा कर रहे हैं।

इससे तो अच्छा यह होता कि देहाती युवकों को पहले से ही खबर कर देते और उनकी मदद से चोरों को घेर कर पकड़ लेते। उसका और विक्रमकेसरी का अकेले निकल पड़ना ही बड़ी भूल हो गई।

शिखिमुखी सोच ही रहा था कि इतने में से चोरों में से एक बोला, "चलो चलो! पुजारी साहब ने तीसरी आँख खोल दी है।" उसके तुरन्त बाद चोर पेड़ों की आड़ में से जल्दी-जल्दी सरोवर से थोड़ी दूर पर स्थित आम के बगीचे की ओर दौड़ने लगे।

पुजारी का तीसरा नेत्र खोलना क्या है? आश्चर्य में आ कर शिखिमुखी ने अमराई की ओर नज़र दौड़ाई।

वहाँ एक पेड़ के पास छः-सात फुट की एक ज्वाला प्रज्वलित होती और बुझती दिखाई दी। क्या वह पुजारी का तीसरा तेत्र है? अद्भुत् है! उसने बताया था कि वह एक हज़ार साल से शिथिलालय का पुजारी रहा है। अह वह अपना नेत्र खोल-बंद कर रहा है! यह सब प्रवंचना है या सत्य है?

शिखिमुखी इन विचारों में डूबता-उतराता रहा कि इतने में उसके कुत्ते के इस प्रकार कराहने की आवाज़ आई जैसे उसे चोट लगी हो। उस आवाज़ को सुनते ही शिखीमुखी उग्र हो उठा। मेरे प्यारे कुत्ते को चोरों में से किसी ने घायल किया होगा। इनकी ये मजाल! उस दुष्ट का खून पीना होगा। मैं पुजारी की छाती में भाला भोंक दूँगा। ''जय शबर माता की,'' कहकर शिखिमुखी ने जयघोष किया और अमराई में प्रज्वलित होती ज्वाला की ओर दौड़ लगा दी।

लेकिन ज्यों ही वह अमराई का निकट पहुँचा, त्यों ही ज्वाला ग़ायब हो गई। उसके बाद, उसे किसी के बात करने और चार-पाँच लोगों के पैदल चलने की आवाज़ सुनाई दी। सँभलकर वह उस आवाज़ की दिशा में कदम बढ़ाने लगा। साथ ही उसे इस बात का अंदेशा भी था कि पेड़ों की आड़ में से शायद दुश्मन उसकी ओर बर्छी चला दे। और हमला ही कर बैठे तो?

शिखिमुखी को आगे वार्तालाप करते बढ़ने वालों की आवाज़ और स्पष्ट सुनाई देने लगी। उसने सोचा कि शायद वे उसे अकेला देखकर ही इतनी निडरता से छाती फुलाए चले जा रहे हैं। इतने में चोरों में से एक ने ज़ोर से कहा, ''वह कुत्ता नहीं पिशाच है। पुजारी साहब को देखते ही उसके गाल पिचक गए हैं।''

क्या वह उसके कुत्ते के बारे में कह रहा था? क्या इन दुष्टों ने उसे मार डाला? यह विचार मन में आते ही शिखिमुखी क्रोध से काँप उठा।

वह बिना भला-बुरा सोचे ही गरज उठा, ''बदमाशों! ठहर जाओ! मेरे भाले से बचने की कोशिश करो!'' यह कहता हुआ वह तेजी से उनपर टूट पड़ा। चार-पाँच कदम बढ़ाने के बाद ही उसके बाएँ पैर के नीचे की ज़मीन धँस गई। वह गिरते-गिरते सँभला और दाएँ पैर के बल पर बाएँ को निकालने की कोशिश करने लगा। हठात् पैर में कोई रस्सी जैसी चीज़ कस गई।

दूसरे ही क्षण शिखिमुखी एक पेड़ की शाखा को पकड़ एक पैर के बल उलटा लटकने लगा। यह कोई फन्दा था जिसमें उसका पैर फँस गया था।

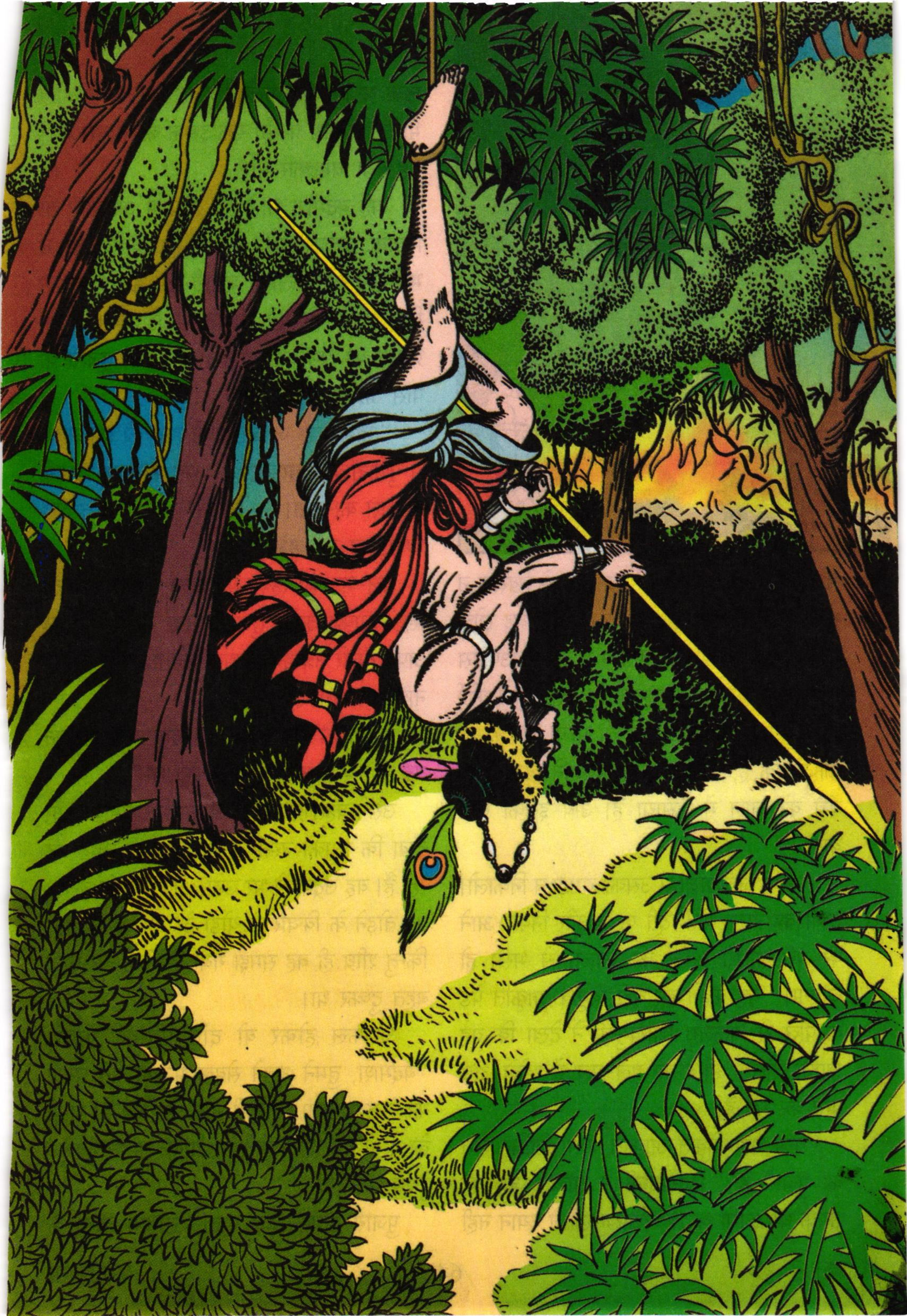

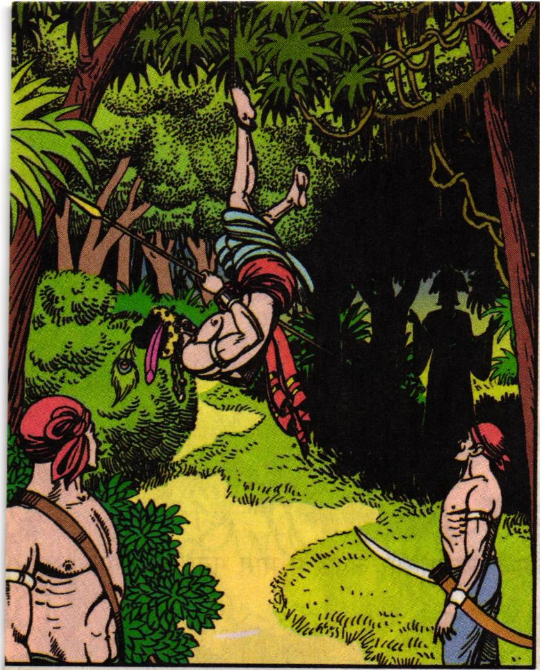

भाग्यवश उसके हाथ का भाला हाथ से खिसक न गया था। वह कैसे खतरे में फ़ँसा था, यह सोच पाने से पूर्व ही पेड़ों की आड़ में से उसका उपहास करती एक विकट हँसी सुनाई दी। उसके बाद कोई बोला, "पुजारी साहब, हमने तो सोचा था यह शेर का शावक है, लेकिन लगता है हमने खरगोश के बच्चे को जाल में फँसाया है। अब इसका क्या करेंगे?"

"अभी जल्दबाज़ी में उसका चमड़ा न निकालो। अभी वह हमसे थोड़ी दूरी पर है और निकट आने पर मेरी तीसरी आँख की ज्वाला से भस्म हो जाएगा।" यह कहते हुए वही विकृत आकृति पेड़ के पीछे से निकली। शिखिमुखी ने देखा कि वह अपनी तीसरी आँख को पल-पल में खोल और बन्द कर रहा है।

'क्या यही विकृत आकृति वाला शिथिलालय का पुजारी है?' शिखिमुखी ने सोचा। जब वह उसके घर आया था तब शिखिमुखी ने ध्यान नहीं दिया था कि आग बरसाने वाली एक तीसरी आँख भी उसके माथे पर है। एक इंसान का तीसरा नेत्र! यह क्या चमत्कार था?

'यह बदमाश भाले की सीध में आ जाए तो कितना अच्छा हो!' सोचते हुए शिखिमुखी ने भाले को खूब फैलाकर पुजारी की ओर झूलने के लिए शरीर को पूरी ताकत से हिलाया। उसके प्रयत्न को समझते हुए तीन-चार चोर पुजारी के पास आकर खड़े हो गए।

"ओहो! यह जंगली अपने हाथ की इस तीली से मुझे भौंकना चाहता है?" यह कहते हुए पुजारी अट्टहास कर उठा। अरे छोकरे! अभी तक तुम्हारा घमण्ड दूर नहीं हुआ?"

पल-भर चुप रहकर वह बोला, "देख सको तो सिर घुमाकर देखो, तुम्हारी शबर बस्ती को मैंने अपने तीसरे नेत्र की आहुति बना दिया है, उसका नाश कर दिया है।"

पुजारी की बातें सुनकर शिखिमुखी की धड़कनें बढ़ गईं। क्या वह सत्य कह रहा था?

उसने बहुत प्रयत्न से अपना सिर घुमाया और देखा कि उसकी बस्ती में से बड़ी-बड़ी लपटें उठ रही हैं। वह उद्रेक से भर उठा। अपने पैर के बन्धन को तोड़ने के विचार से थोड़ी देर तक छटपटाया। किन्तु शीघ्र ही वह समझ गया कि ऐसा कर पाना बहुत दुष्कर था।

असफल होकर वो दाँत पीसकर गरजा, "बदमाश, तुमने अपने सेवक भेजकर मेरी बस्ती को जलवा डाला। तुम्हारी मौत निश्चित है। थोड़ी देर में ही मेरी बस्ती के लोग आकर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।"

पुजारी ठठाकर हँस पड़ा। "तुम्हारी बस्ती के

लोग यहाँ न आ सकें इसीलिए तो मैंने उसमें आग लगवाई है। सब कोई अपनी झोंपड़ी की आग बुझाने की कोशिश कर रहे हैं। सुनो! मैं तुम्हारी जान बक्श दूँगा पर शर्त यह है कि उन ताड़पत्रों वाली थैली मुझे ला दो।''

''ताड़पत्र तो क्या, मैं तो तुम्हारा सिर काटकर विक्रमकेसरी को भेंट करने वाला हूँ,'' यह शब्द कहते हुए शिखिमुखी ने भाला खींचकर पुजारी की ओर फेंका।

ठीक उसी समय एक चोर पुजारी को बचाने के इराने से उसके सामने आ गया और भाला उसके कन्धे में जा लगा। वह एक कराह के साथ वहीं ठण्डा हो गया।

''यह कोई मूर्ख मालूम होता है, पर है हिम्मतवर! इसके पैर की गाँठ खोल दो और गले में रस्सी डालकर खींचकर मेरे पास लाओ। मैं इन महावृक्षों पर से चलकर नज़दीक के रास्ते से जंगल में पहुँच जाऊँगा।'' कहकर पुजारी पेड़ की ओट में चला गया।

पुजारी के जाते ही चोरों ने अपने दो साथियों के घावों पर पट्टियाँ बाँधीं। घायलों में से एक ने कराहते हुए कहा, ''देखो भाइयों, अब हम अपने रास्ते चल देंगे। इस पुजारी के पीछे हमें अपनी जान नहीं देनी है।''

''मुँह बंद कर! कायर कहीं का! इस काम के बदले पुजारी साहब ने हमें जो सोना दिया था वह भूल गया? हमने उनके सामने काम पूरा होने तक साथ रहने की क़सम खाई है, क्या वह क़सम खुद ही तोड़ देंगे?'' एक ने डाँट लगाई।

''यह सारी आफ़तें इस जंगली के यहाँ आने पर शुरु हुई हैं। फिर इसको साथ ले जाने का झंझट क्यों? सबसे पहले इसे मार दो। साहब से कह देंगे वह भाग जाना चाहता था, पकड़ने पर हमपर हमला किया और लड़ाई में मारा गया। मैं अपनी बर्छी इसकी छाती में भौंक देता हूँ।'' कहकर उनमें से एक मूछों पर ताव देता हुआ बर्छी लेकर आगे बढ़ा।

परन्तु शायद वह भूल गया था कि शिखिमुखी का भाला अभी तक उसके हाथ में ही था। उसने उसे धक्का देकर अपना भाला उसकी छाती में घुसा दिया। भाला छाती में पार हुआ और वह चोर पीड़ा से कराहने लगा।

बाकी सभी चोर गुस्से में चिल्ला उठे, ''इसे मार दो! काट डालो!'' यह कहकर सबने शिखिमुखी को लक्ष्य करके अपने भाले उठाए।

- जारी

रहस्यमय मेज

(जब मयूरी समुद्री मानवों से बात कर रही होती है, तभी शिवा खुद तलाश करने की ठानकर गुफ़ाओं में चला जाता है। वहाँ उसे दादाजी और लड्डू मिल जाते हैं। शान्तनु का नाम लेने पर दादाजी उसे बताते हैं कि वे उसे पहले से जानते हैं।)

मैंने उनसे और कुछ नहीं पूछा। कभी न कभी वे इसका सच बता ही देते। हम बातें करते और पूरे घटनाक्रम के बारे में जानकरी लेते हुए बैठे ही थे कि मुझे कहीं दूर से गड़गड़ाहट की सी आवाज़ सुनाई दी, जो काफ़ी तेज़ थी। लड्डू पागलों की तरह भौंकने लगा और मैं समझ गया कि उसे दूसरे मनुष्यों की गंध आ रही है!

हम उनके गुफ़ाओं में चलने की आवाज़ सुन रहे थे। क्या मयूरी भी उनके साथ होगी? मुझे अपने माथे पर पसीने की बूँदें उभरती महसूस हुईं। मेरी उत्कंठा बढ़ती जा रही थी। शान्तनु सबसे पहले अन्दर घुसा। मुझे देखते ही उसे कहा, "अहा! तुम यहाँ हो! मैं यही सोच रहा था कि..." तभी दादाजी पर नज़र पड़ते ही उसकी आवाज़ मन्द पड़ गई।

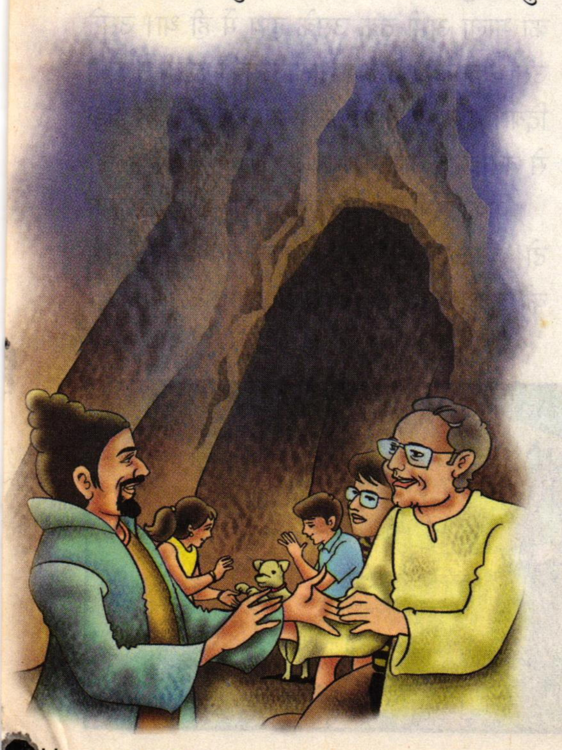

"डॉ. पुरंजन! क्या बात है!" वह मुस्कुराया। वह मुस्कुराट बड़ी मुश्किल से होठों पर आ पाई थी। मैंने देखा, उसके जबड़े भिंचे हुए थे।

दादाजी अपनी जगह से उठे। उन्होंने बेमन से अपना हाथ हिलाया और बोले, "तुम वैज्ञानिक कम और अभिनेता अधिक हो। तुमने अभी तक बॉलीवुड में प्रवेश करने की कोशिश की या नहीं?"

"हा-हा," शान्तनु फीकी सी हँसी हँसा।

लड्डू निम्मी और हर्ष के साथ खेल रहा था और अपनी पूँछ इतनी तेज़ी से हिला रहा था कि मुझे यह लगने लगा कि वह निकलकर खुद ही कहीं न चली जाए!

धीरे-धीरे दूसरे मनुष्य भी अन्दर आने लगे। मुझे लगा कि शायद मयूरी ने शान्तनु को सभी मनुष्यों को अन्दर लाने का निर्देष दिया हो।

"मैं बहुत थक गया हूँ," एक आदमी बहुत चिड़चिड़ाकर और तेज़ आवाज़ में बोला। दूसरे

धीमी आवाज़ में बातें करने लगे।

"यह कैसी मूर्खतापूर्ण जगह है," गुफ़ा की दीवार से सिर टिकाकर खड़ी एक महिला ने पूछा। किसी ने कुछ नहीं कहा। सभी बहुत थके हुए और अपनी इस यात्रा के कारण घबराए हुए थे। निम्मी और हर्ष के अलावा सभी ने एक-एक जगह चुनी और सोने के लिए अपना बसेरा कर लिया।

शान्तनु दादाजी के पास जाकर बैठ गया।

मैं भी वहीं चला गया क्योंकि मुझे यह जाने की उत्कंठा थी कि वे दोनों एक-दूसरे को कैसे जानते थे लेकिन मैं उनसे यह पूछना नहीं चाहता था। मुझे कहीं लग रहा था कि कि यह ठीक नहीं होगा।

वहाँ बैठे-बैठे बीते दो-चार पल सदियों जैसे थे। उन दोनों के बीच का तनाव इतना वास्तविक लग रहा था कि मुझे लगा मैं हाथ बढ़ाकर उसे छू सकता हूँ। मेरे मन में कई प्रकार के प्रश्न थे लेकिन फिर भी मैं अपना धैर्य बनाए रखने की कोशिश कर रहा था।

"तो क्या आप पृथ्वी को बचाने में कामयाब हुए?" शान्तनु ने कुटिलता से मुस्कुराते हुए पूछा।

"मुझे लगता है अब और कोशिश करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि तुम यहाँ आ गए हो। पृथ्वी तो अब वैसे ही बहुत सुरक्षित है।" दादाजी ने उसके ही सुर में उसे जवाब दिया।

"आप इतने धार्मिक कब से बन गए डॉ. पी? आपने तो हम सबको यह समझाया था कि कुछ भी...कुछ भी वैज्ञानिक सफलता में आड़े नहीं आना चाहिए। पस से भरी आँखों वाला खरगोश का बच्चा। यह हमारे वैज्ञानिक प्रयासों का नतीजा है। यह क्या है? किसी कवि की रचना, स्पाइक

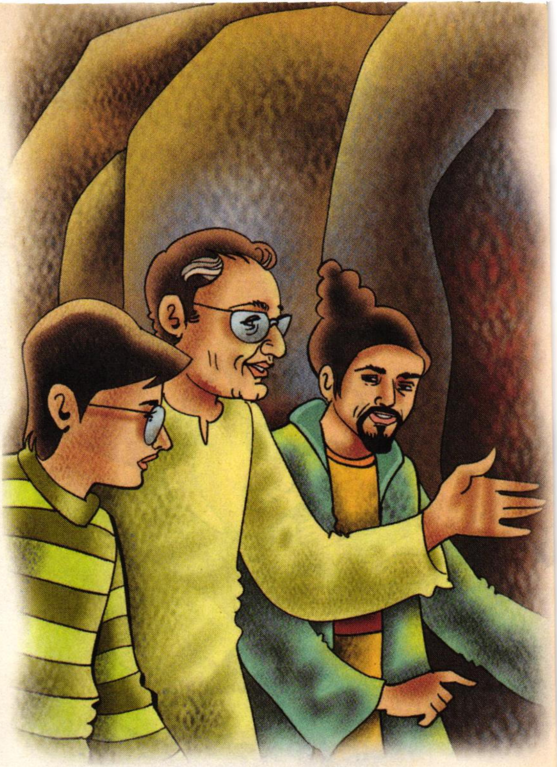

किलिगन की?" दादाजी मुस्कुराए।

"आप नर्म पड़ गए हैं, है ना? क्या बुढ़ापे ने आपको कविता की ओर उन्मुख कर दिया है? क्या आप चाँद को प्रेमगीत सुनाते हैं?" शान्तनु व्यंग्य से मुस्कुराया।

मुझे बहुत चिढ़ होने लगी थी। यह अक्खड़ आदमी था कौन? और यह दादाजी को क्यों उकसा रहा था?

"मैं कोशिश करता हूँ," दादाजी बोले, "लेकिन मेरी तुकबन्दी पहुत खराब है।"

"मैं जानता हूँ आप यहाँ क्यों हैं," अचानक शान्तनु बोला। उसके चेहरे पर विकृत सा भाव था। कुछ ऐसा कि उसे देखते ही मेरे मन में गुस्सा भर गया। मेरे हाथ में गुफ़ा की ज़मीन पर पडा एक नुकीला पत्थर आ गया। अगर इसने कुछ भी ऐसा

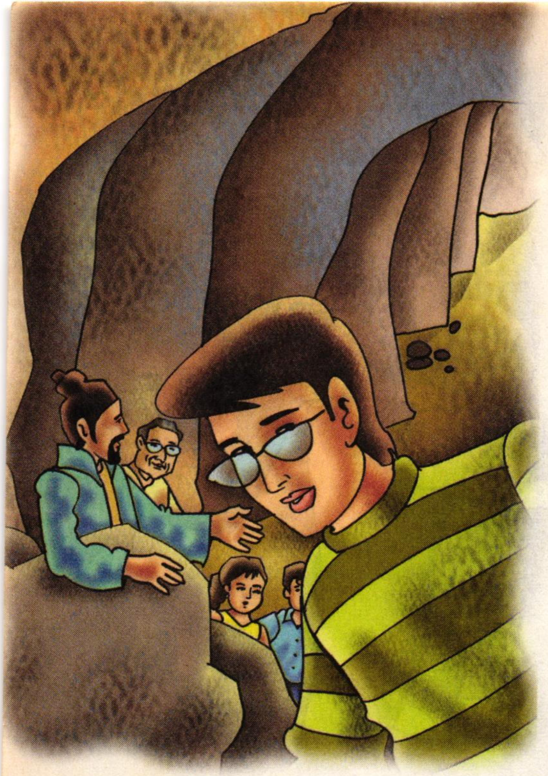

किया जो दादाजी को बुरा लगे, तो मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।

"तुम जानते हो? हाँ। मुझे तुम्हारी कहानी सुनने में बहुत मज़ा आएगा शान्तनु। सोने का समय हो गया है, कहानी सुनने के लिए एकदम सही समय। आप यहाँ हम सबसे पहले आना चाहते थे। यह आपने पहले ही तय कर रखा था। आपका सारा एनजीओ का काम तो एक धोखा है!"

"हे!" मैं अपने आपको रोक नहीं सका और चिल्लाया। मैं चुपचाप बैठकर उसे बोलते नहीं रहने दे सकता था। "वह मैं था, दादाजी नहीं, ठीक है? अनुनिर्वा के लोगों से सबसे पहले मैं मिला था, मैंने तुम्हें बताया था।" शान्तनु ऐसे आश्चर्य से मेरी ओर मुड़ा, जैसे भूल ही गया हो कि मैं भी उसकी बगल में बैठा था।

"और तुम्हें क्या लगता है इन बुद्धुओं ने तुम्हें कैसे खोज लिया लड़के? किस्मत से? क्या तुम समझते हो कि वे तुमसे ऐसे ही बात करने लगे? अकारण? कहीं रेल में मिल गए?"

मैं थोड़ा उलझ गया। मैं समझ रहा था कि वह किसी चीज़ की तरफ इशारा कर रहा था लेकिन मैं किसी भी तरह उसकी बात समझने में नाकाम था।

अनुनिर्वा में आने के समय वह भी दूसरों की ही तरह उलझन में और घबराया हुआ था, लेकिन अब वह ऐसे बात कर रहा था जैसे उसे यह सब पहले से पता हो। मैं यह पचा नहीं पा रहा था।

"तो तुम क्या कहते हो?" मैंने चुनौतीभरे स्वर में कहा।

"उन्होंने तुम्हें खोजा क्योंकि उन्हें इसके लिए कहा गया था। तुम्हें इस काम के लिए चुना गया था।"

मैं यह जानने के लिए दादाजी की ओर मुड़ा कि क्या यह सही है, लेकिन उनके चेहरे के भाव पढ़ नहीं पाया। उनके दिमाग में क्या था यह जानना मेरे लिए बहुत कठिन था।

"तुम बहुत भाग-दौड़ कर चुके हो शान्तनु," दादाजी बोले, "और तुमने मुझे जो सुनाई है, वह कहानी भी बहुत मजेदार है। अब हमें सोना चाहिए।"

शान्तनु ने भर्राई आवाज़ में कहा, "डर गए कि तुम्हारा पोता तुम्हारे बारे में ग़लत सोचेगा, क्यों?"

"अब मैं किसी बात से नहीं डरता शान्तनु। मैं पहले हर बात से डरता था, इसलिए मैं शक्ति चाहता था, नियन्त्रण अपने पास रखना चाहता था। लेकिन अब मैं भूल चुका हूँ कि डरना किसे कहते हैं।"

''बहुत अच्छा भाषण है डॉ पुरंजन। लेकिन मैंने आपसे इससे अच्छे भाषण सुने हैं, उन दिनों जब हम साथ में घंटों प्रयोगशाला में काम किया करते थे। हम सभी उत्कंठित विद्यार्थी आपके आस-पास और आप बीच में किसी भगवान की तरह, हमें बताते हुए कि भाग्य को कैसे बदला जा सकता है।

दादाजी मुस्कुराए और बोले, ''यदि याद करने के लिए जवानी के जोशीले दिन न हों तो बूढ़े होने का आनन्द ही कहाँ है?''

''तुम्हें नींद नहीं आ रही शिवा? आओ यहाँ मेरे पास सो जाओ। उन्होंने धीमी आवाज़ में लड्डू को बुलाया और वह दौड़ता हुआ आया। निम्मी और हर्ष गहरी नींद में सो चुके थे और वह बोर हो रहा था।

''दादाजी,'' मैं बोला।

''मुझे पता है तुम्हारे पास बहुत से सवाल हैं। मैं तुम्हें सब सच बताऊँगा लेकिन अभी नहीं। पिछले कुछ दिनों में बहुत कम समय में बहुत सी नई-नई बातें हुई हैं और मुझे अभी उनपर सोचकर निष्कर्ष निकालना है,'' दादाजी बोले।

मैंने सहमति में सिर हिलाया। और मैं कर भी क्या सकता था? दादाजी ने संकेत कर ही दिया थश कि वे अभी कुछ नहीं बोलेंगे।

मैंने अपने सोने की जगह देखी और जैसे ही सोने के लिए पैर फैलाए, लड्डू पैरों पर चढ़ गया।

मैं शायद तुरन्त ही सो गया। जब मेरी नींद खुली, तब गुफ़ा में पूरा अन्धकार था। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। उस घड़ी जुगनू भी ग़ायब थे।

जैसे-जैसे मेरी आँखें अन्धेरे की अभ्यस्त हुईं मुझे गुफ़ा की आकृतियाँ दिखाई देने लगीं। कोई हिलता-डुलता दिखाई नहीं पड़ रहा था। सब-कुछ निश्चल था।

हवा बोझिल सी थी और चिपकती हुई सी लगती थी।

अचानक मुझे लगा जैसे कोई आवाज़ सुनाई दी हो। कोई या कुछ था जो बिना आवाज़ किए गुफ़ा में इधर-उधर हो रहा था। मुझे लड्डू भी तनाव में आता मालूम हुआ। उसे भी कुछ आभास हो गया था। मैं चौकन्ना होकर कुछ भी होने के लिए तैयार हो गया।

जो भी था वो मेरे ही पास आ रहा था। मुझे उसके छोटे-छोटे पैर फ़र्श पर पड़ते सुनाई दे रहे

थे। चलते समय उसके नाखून जमीन की पथरीली सतह को खरोंच रहे थे। मैंने साँस रोककर अपने अन्दर ही चीख रोक ली।

और फिर अचानक, जैसे वे आवाज़ें शुरू हुईं थीं, वैसे ही रुक गईं। अत्यन्त आतंकित होकर मैंने देखा कि वह मेरे ऊपर ही खड़ा होकर मेरा चेहरा देख रहा था। मुझे उसके भारी चमड़े वाले पैर अपने पेट के दोनों ओर सटे महसूस हो रहे थे। कुछ...शायद उसके पंख, मेरे घुटनों पर घिस रहे थे और मेरा खून जमा जा रहा था। मेरा दिल धड़कना भूलता जा रहा था और मैं जितना अचल हो सकता था, उतना था।

मैंने उस प्राणी की ध्यान से देखने की कोशिश की, लेकिन केवल इतना समझ पाया कि वह काफी भारी और अजीब से आकार का था।

मैंने ऐसा कुछ पहले कभी नहीं देखा था। और ऐसा होना अनुनिर्वा में नामुमकिन भी नहीं था। और जैसे ही मैंने उससे यह पूछने की हिम्मत जुटाई कि वह क्या चाहता था, तभी मुझे एक धीमी फुसफुसाहट सुनाई दी।

"मेज! मेज... यहाँ आओ!" यह शान्तनु की आवाज़ थी। वह धीरे-धीरे सीटी बजाकर मुँह से आवाज़ निकाल रहा था। ऐसा लगता था जैसे वह किसी बच्चे से बात कर रहा हो।

मुझे लगा कि मेज ध्यान से उसकी बात सुन रहा था। निश्चित ही वह शान्तनु की आवाज़ पहचानता था। धीरे-धीरे उसने अपना दायाँ पैर उठाकर दूसरे पैर के पास रखा। और फिर... वह शान्तनु की आवाज़ की दिशा में सरका। उसका भारी शरीर मेरे धड़ से घिसता हुआ सा निकला। मेरे शरीर ने कई झुरझुरियाँ लीं।

मुझे ध्यान आया कि मैं इतनी देर से अपनी साँस रोके था। मैंने अपने शरीर को शिथिल छोड़कर खून का दौरा ठीक होने दिया और मैं सामान्य होने लगा।

काफी देर तक मैं स्थिर पड़ा हुआ आहट लेता रहा। लेकिन अब गुफ़ा में पूर्ण शान्ति थी।

मेरी नींद उड़ गई थी। मेज कौन था? किस प्रकार का प्राणी था वह? क्या वह अनुनिर्वा का ही था? या शान्तनु उसे अपने साथ लाया था? यदि हाँ, तो वह उस समय कहाँ था जब बाकी सभी प्राणी अंतरिक्षयान से बाहर आए थे?

(जारी)

- सौम्या राजेन्द्रन

हँसते-हँसते हो जा लोट-पोट

टीचरः हम कभी-कभी मध्य युग को अँधेरा युग क्यों कहते हैं?
सुनीलः क्योंकि उस ज़माने में बहुत अधिक नाइट्स होते थे।

वन-वे में ग़लत तरफ़ गाड़ी चला रहे आदमी को पुलिसवाले ने रोका।
"यह वन-वे है।"
"पता है।"
गाड़ीवाला बोला, "इसीलिए मैं एक ही तरफ़ जा रहा हूँ।"

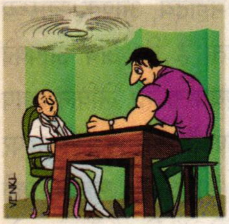

डॉक्टरः क्या कोई ऐसा कारण है जिसकी वजह से तुम्हें फ़ौज में शामिल नहीं किया जाना चाहिए?
रंगरुटः जी हाँ डॉक्टर, मेरे अन्दर की आधी चीज़ें गुम हैं।
डॉक्टरः अन्दर क्या समस्या है?
रंगरुटः गट्स गायब हैं।

सड़क पर एक डॉक्टर को देखकर एक आदमी रुका।
"क्या आपको याद है, आपने मेरा र्‌ह्यूमेटिज़्म ठीक किया था?"
"हाँ, याद है।"
"क्या आपको लगता है कि अब नहा लेने से भी मुझे खतरा हो सकता है?"

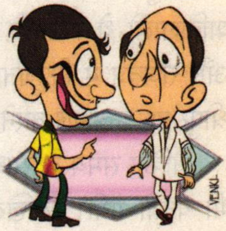

दत्तू

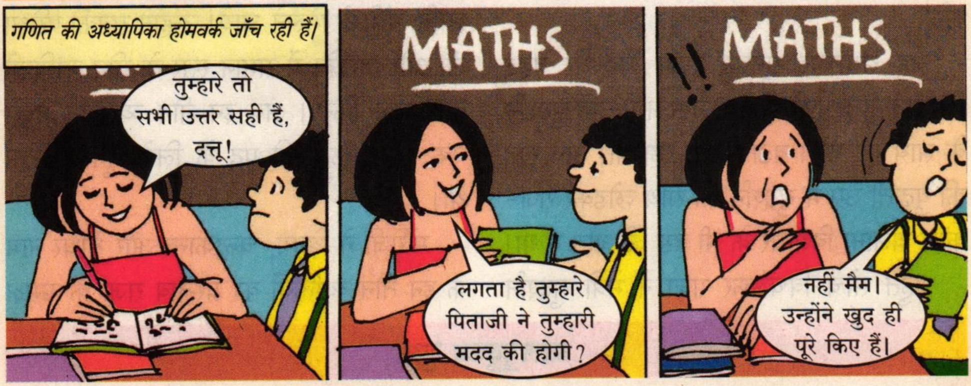

अनोखी परीक्षा

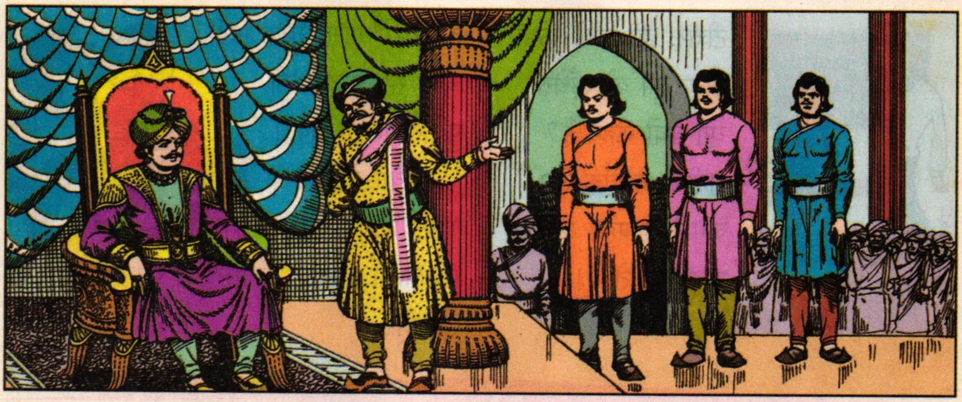

श्रीपुर एक छोटा सा राज्य था। वहाँ के राजा विद्याधर के यहाँ सुदर्शन नाम का एक मंत्री था जो बहुत ही कुशाग्र बुद्धि और राजतंत्र में निपुण था।

श्रीपुर के पड़ौसी राज्य सैनिक दृष्टि से काफी शक्तिशाली थे फिर भी सुदर्शन की कुशाग्र बुद्धि और राजतंत्र में निपुणता देखकर बड़े राज्य कभी श्रीपुर पर आक्रमण करने की बात नहीं सोचते थे।

लेकिन समय के साथ-साथ सुदर्शन की आयु भी बढ़ती गयी। आखिर वह बूढ़ा हो गया। वह बहुत बीमार रहने लगा। दरबारी वैद्यों ने उसे सलाह दी कि वह मंत्री पद से अवकाश लेकर विश्राम करे।

यह समाचार सुनकर राजा विद्याधर बेहद चिन्तित हुए। अपने पूरे शासनकाल में उन्हें सुदर्शन के साथ का बहुत बड़ा सहारा रहा था। अब खुद की बुढ़ाती उम्र में सुदर्शन का साथ छोड़कर राज-काज चलाना विद्याधर के भी बस की बात न थी।

बहुत सोच-विचारकर राजा ने मंत्री सुदर्शन को बुला कर कहा, "मंत्री महोदय, आपके स्वास्थ्य को देखते हुए ऐसा लगता है कि अब आपको आराम की विशेष आवश्यकता है। लेकिन आप इस राज्य की आपके निर्णयों और सूझ-बूझ पर निर्भरता को भी जानते हैं। अतः अच्छा यही होगा कि अपने पद पर रहते हुए ही हमारे राज्य के लिये एक मंत्री का चुनाव कर दीजिए। आपका परखा हुआ इन्सान राज्य के लिए बहुत अच्छा होगा, इसकी मुझे पूरा भरोसा है।

सुदर्शन ने राजा की बात मान ली और मंत्री पद के योग्य व्यक्तियों के लिये सारे राज्य में ढिंढ़ोरा पिटवा दिया। ढिंढ़ोरा सुन कर कई शिक्षित व्यक्ति मंत्री से मिलने आये। उन्होंने सबकी परीक्षा ली और आखिर में समान स्तर के तीन व्यक्तियों का चयन किया। अब इन तीन व्यक्तियों में से एक व्यक्ति का मंत्री पद के लिये चुनाव करना था।

मंत्रीजी ने विनय, चन्द्रकान्त और श्रीधर नाम के इन तीन व्यक्तियों का प्रस्ताव राजा के समक्ष

बालमुकुन्द गुप्त

रखा। और राज्य सभा के सभी सदस्यों से उन तीनों का परिचय कराया। फिर पूरी सभा के सामने मंत्री ने सेवकों को आदेश दिया की वे तीनों युवकों को एक-एक अत्यंत कमजोर बिल्ली और उन बिल्लियों की देखभाल के लिये खजाने से प्रत्येक व्यक्ति को एक-एक हजार सोने की मुद्राएं दें।

इसके बाद मंत्री ने युवकों से कहा, ''तीन महीने बाद इन तीनों बिल्लियों को लेकर तुम तीनों दरबार में हाजिर हो जाना। हम देखना चाहते हैं कि तुम इन बिल्लियों की देखभाल कैसे करते हो।''

तीन महीने बाद विनय, श्रीधर और चंद्रकान्त अपनी-अपनी बिल्ली लेकर राजदरबार में आये। विनय की बिल्ली अत्यन्त मोटी-ताजी व बलिष्ठ थी। उस बिल्ली को देखकर राज दरबार में उपस्थित लोगों ने सोचा, यह बिल्ली है या बाघ का बच्चा।

श्रीधर की बिल्ली भी स्वस्थ थी, लेकिन चन्द्रकान्त की बिल्ली अत्यन्त कमजोर मरियल जैसी लगती थी। राज्य मंत्री सुदर्शन ने तीनों से अपनी-अपनी बिल्ली को पालने का तरीका विस्तारपूर्वक बताने के लिये कहा।

सबसे पहले विनय ने कहा, ''आपने मुझे जो एक हज़ार सोने की मुद्राएँ दी थीं, उन में से अधिकांश हिस्सा खर्च करके मैं ने बिल्ली को दूध मिष्ठान्न, मक्खन वगैरह खिलाया। यह पाँच सौ सोने की मुद्राएँ बच गईं जो आप ले लीजिये।''

इसके बाद श्रीधर बोला, ''बिल्ली प्रकृति से मांसाहारी है इसलिये मैं इसे अपने एक ऐसे मित्र के यहाँ छोड़ दिया करता था, जिसके यहाँ ज़्यादा चूहे थे। लेकिन यह सोच कर कि शायद कभी-

कभी इसे चूहे न मिले हों मैं इसे प्रतिदिन दूध भी पिला दिया करता था। उसका खर्चा काट कर यह आपकी नौ सौ मुद्राएं मैं आपको वापस करता हूँ।''

अंत में चंद्रकान्त ने बताया, ''मैंने बिल्ली के वास्ते किसी भी इशेष आहार का प्रबन्ध नहीं किया। वह खुद ही यथाशक्ति अपने आहार का इन्तजाम करके मेरे ही घर पर रही। बिल्ली जैसे अनुपयोगी जानवर पर पैसा खर्च करना मुझे उचित नहीं प्रतीत हुआ। यह मैं आपकी पूरी एक हज़ार मुद्राएँ वापिस करता हूँ। इस धन से आप जनता के लिये कोई भी उपयोगी कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।''

सभासदों ने सोचा कि मंत्री पद के लिये चंद्रकान्त का ही चुनाव होगा, लेकिन सुदर्शन राजा एवं अन्य सदस्यों से बोला, ''श्रीपुर के मंत्री पद की योग्यता रखने वाला व्यक्ति श्रीधर ही है।''

यह निर्णय राजा विद्याधर एवं अन्य दरबारियों को आश्चर्यजनक प्रतीत हुआ। इस बात को

भाँपकर सुदर्शन बोला, ''आप सभी ने सुन लिया है कि इन तीनों व्यक्तियों ने इन बिल्लियों का कैसे पालन पोषण किया है। इस आधार पर मैं आपका इन सभी के बारे में अपना आकलन बताता हूँ।''

''विनय के अन्दर समय की गति सम्बन्धी ज्ञान का अभाव है। उसने एक बिल्ली को पालने के लिये तीन महीने की अवधि में पाँच सौ सोने की मुद्राएं खर्च की हैं। बिल्ली चाहे जैसी भी चुस्त और तन्दुरुस्त हो फिर भी वह चूहों को पकड़ने के अतिरिक्त और कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकती।''

''अब चंद्रकान्त की बात रही। इसके अन्दर बिवेक से बढ़ कर लालच अधिक है। इसे नाम मात्र के लिये भी दया या सहानुभूति नहीं है। इन गुणों के अभाव में कोई व्यक्ति किसी राज्य के मंत्री के रूप में सफल नहीं हो सकता।''

''बिल्ली जब कमजोर हो गई थी, भले ही वह इतनी उपयोगी नहीं थी लेकिन फिर भी उसकी कमजोरी को देखते हुए उसे दयावश ही सही पर पौष्टिक खाना मिलना चाहिये था। इसके अभाव उसकी मृत्यु भी हो सकती थी, किन्तु चन्द्रकान्त ने इस बारे में बिल्कुल नहीं सोचा। उसे बिल्ली के खर्च के लिए आवश्यक धन दियाँ गया था। लेकिन उसने संसाधनों का उचित विद्वत्ता और मानवतापूर्ण उपयोग करने का गुण नहीं दिखाया।''

''इस परीक्षा में सौ प्रतिशत सफल केवल श्रीधर निकला क्योंकि उसने बिल्ली का सहज आहार चूहों को मानकर उसे अपने मित्र के घर छोड़ दिया। इस प्रकार बिल्ली की भूख तो मिटी ही, पर उसके साथ उसका मित्र भी चूहों से छुटकारा पा गया। इसके अतिरिक्त बिल्ली के उत्तम स्वास्थ्य और भविष्य का ख्याल रखते हुए श्रीधर उसे एक समय दूध भी देता रहा। यदि आप गौर करेंगे, तो आपको लगेगा कि ये सभी खूबियाँ राज-काज करते समय आवश्यक होती हैं - मितव्ययता, संसाधनों का विद्वत्तापूर्ण उपयोग, मानवता और समय की गति को देखते रहना।''

''इन सबको देखते हुए इस बात में कोई सन्देह नहीं रह गया कि एक मंत्री के लिये आवश्यक सहज लक्षण पूर्ण रूप से श्रीधर के अन्दर विद्यमान हैं। इसीलिये मैंने इसी व्यक्ति को मंत्रीपद के लिये चुना है।''

मंत्री की बात समझकर सभी दरबारियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए तालियाँ बजाईं।

BSA LADYBIRD

Your best friend for life.

Shine

Get used to the tantalizing taste of freedom.

There's no greater feeling than having the wind in your hair, the open road beneath your feet. With a ladybird, freedom is yours. So make the most of it and enjoy every moment!

www.ticyclesindia.com

RNI NO. MAHHIN07861/13/1/2009 -TC
CHANDAMAMA (Hindi) June 2010 Registrar of Newspapers of India No. 1[redacted]
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11 REG NO. MH/MR/N/130/MBI/10-12